ISBN:978-93-341-1565-9

डॉ॰ कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान



- राजीव अग्रवाल
- दिलीप कुमार
- कौशकी शिवहरे

डॉ. कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहितित्यक योगदान

डॉ॰ राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

दिलीप कुमार

एम.ए. (इतिहास), एम.एड.

कौशकी शिवहरे

बी.एल.एड.

डॉ. कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

दिलीप कुमार

कौशकी शिवहरे

E-book संस्करण: 2024

मूल्य: ₹ 99

ISBN:978-93-341-1565-9

प्रकाशक-

कौशकी शिवहरे

ओरन (ग्रामीण)

जिला, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड -210203

Mob.-6388824441

ई-मेल: khushishivhare2612@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का महत्त्वपूर्ण साधन मानव है| कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है, जब राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिये समर्थ हो| मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण,विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है| अपनी मानसिक क्षमता, चिंतन प्रक्रिया एवं सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लाँघा है। वरन् अपनी सभ्यता और संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है परंतु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है|

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है,जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर तक पहुंचती है| शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है,जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है| मनुष्य सदैव कुछ-न-कुछ सीखता रहता है| शिक्षा व्यक्ति की सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक, नैतिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है| वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक साधन है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुंचाना तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है|

प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति, एवं नैतिकता से परिपूर्ण थी| जैसे-जैसे हम आधुनिकता एवं विज्ञान युग की तरफ बढ़ते गए शिक्षा प्रणाली में धर्म संस्कृति का लोप हो गया| विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई

बदलाव आये,शिक्षा का व्यवसायीकरण , राजनीतिकरण हुआ, परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कहीं जा सकती| कुमार विश्वास जी शिक्षा में धर्म संस्कृति एवं नैतिकता के समावेश हेतु कटिबद्ध है|

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है,**'डॉक्टर कुमार विश्वास शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान'** इस पुस्तक को छः अध्यायो में विभाजित किया गया है–

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है| जिसके अंतर्गत समस्या का प्रादुर्भाव,वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, अध्ययन के उपदेश, शोध विधि, अध्ययन के उपादेयता पर प्रकाश डाला गया है |

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है, जिसके अंतर्गत शैक्षिक विचारधारा से सम्बंधित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है|

तृतीय अध्याय में कुमार विश्वास जी के जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है|

चतुर्थ अध्याय में कुमार विश्वास जी की साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है|

पंचम अध्याय में कुमार विश्वास जी के शैक्षिक विचार धारा का वर्णन किया गया है|

षष्ठ अध्याय में शोध के निष्कर्ष ,शैक्षिक उपादेयता अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध के हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं|

प्रस्तुत पुस्तक लघुशोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसंधानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं होता; जब तक जन-सामान्य

के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक हर एक पाठक में सकारात्मकता का संचार करने एवं ऊर्जावान बनाने में सहायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उललेखित विभिन्न पुस्तकों आदि का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

डॉ० राजीव अग्रवाल
दिलीप कुमार
कौशकी शिवहरे

अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा वह है जो केवल जानकारी नहीं देती बल्कि हमें सामन्जस्यपूर्ण ढंग से जीवन बिताना सिखाती है।

-रविन्द्रनाथ टैगोर

शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्शन करती है। एक भटकते राही को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली एक अनवरत प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत कुछ ना कुछ सीखता रहता है और जीवन के इन अनुभवों से सीखना ही शिक्षा है।

मानव जीवन एक जटिल प्रक्रिया है। प्रारम्भ में उसकी एक ही समस्या थी कि जीवन की रक्षा कैसे की जाए? कालान्तर में मनुष्य जीवन जटिलतम होता गया और उसके सामने अनेक समस्याएँ आने लगी समय-समय पर इन समस्याओं में निहित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए दर्शन का सहारा लिया गया। दर्शन द्वारा निर्धारित उद्देश्य एवं जीवन की समस्याओं के लिए सुझाए गए समाधानों को व्यवहारिक रूप में प्राप्त करने हेतु शिक्षा द्वारा प्रयत्न किया जाता है। शिक्षा एक मृत्यु पर्यंत चलने वाली आध्यात्मिक प्रक्रिया भी है। जिसमें मनुष्य को अपने यथार्थ का बोध होता है। जीवन जगत के प्रति उसके व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं संशोधन होता रहता है। अतः कहा जा सकता है कि जीवन जगत के प्रति उसके व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं संशोधन होता रहता है। अतः कहा जा सकता है। जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। क्योंकि शिक्षा एक बहुअर्थी शब्द है। अतः इसे पूर्णता परिभाषित करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी होने के कारण अपने जीवन का अस्तित्व बनाए रखने और उसे निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखने हेतु सभ्यता के आदिकाल से ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड उसके निर्माता और स्वयं के जीवन स्वरूप समस्याओं रहस्यों एवं लक्ष्यों पर अनवरत चिन्तन करता रहता है। चिन्तन के परिणाम स्वरूप इसके सम्बन्ध से उसे जो तथ्य निष्कर्ष विश्वास एवं सत्य प्राप्त हुए उन्हें शिक्षा द्वारा क्रियान्वित रूप देता आ रहा है। मनुष्य कि इन प्रयासों के फलस्वरूप ही दर्शन और शिक्षा का अभ्युदय हुआ है। जो सदैव से मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। दर्शन मनुष्य की चिन्तन की उच्चतम सीमा है। दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है जबकि शिक्षा क्रियात्मक पक्ष।

1.1.1 शिक्षाः विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। जब बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है। प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्रायः कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूलन हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है। शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं विकसित इन्सान के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक

सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक, व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है। जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है। ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिन्तक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा, शासक-प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे। शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की पूर्ति करते थे। इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिन्तन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया। सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आन्तरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गयी। वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के घोतक हैं- ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य- अर्थ, शुद्र-धर्म कालान्तर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ।

जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितान्त आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके और इस सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

1.1.2 शिक्षा दर्शन की प्रकृति एवं महत्व

शिक्षा मानव जीवन की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। इसके बिना मनुष्य का अस्तित्व किसी भी प्रकार से सुरक्षित नहीं है। शिक्षा के द्वारा ही एक मानव सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान का अर्जन कर जगत के विभिन्न प्राणियों से पृथक अपनी सत्ता को कायम करता है। वह नर से नारायण की प्राप्ति के लिए शिक्षा के उपयोगी उपागमों का सदुपयोग करते हुए उन्हें अपने नैतिक जीवन में उतारने का कार्य करता है। शिक्षा की प्राप्ति पूर्णता दार्शनिक अवधारणाओं से संलिप्त है। यह मात्र वाहय अभिव्यक्ति का उपागम नहीं है, अपितु मनुष्य की आन्तरिक सत्ता से जुड़ी चेतनात्मक अवस्था के सृजन की मूलभूत प्रक्रिया है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए जब मनुष्य अपनी आत्मा से सजग हो जाता है तब सांसारिक विकृतियों का परित्याग कर चेतना सत्ता की महत्ता के वास्ते उन्मुख होता है तब उसकी योजना शिक्षा दर्शन की सार्वभौमिकताका निर्धारण करती है।

वर्तमान परिवेश में विभिन्न माध्यमों से शिक्षा की अर्जन की प्रविधि अंगीकृत की जा रही है, किन्तु उन सबों में दार्शनिक पद्धति सर्वोपरि है। शायद यही कारण है कि आज तक की शिक्षा के इतिहास में जितने भी शिक्षाशास्त्री हुए हैं, प्रायः सभी दार्शनिक थे और जितने भी दार्शनिक हुए हैं, वे सबके सब किसी न किसी कोण से शिक्षाशास्त्रीय सन्दर्भ के संपोषक रहे हैं। शिक्षा ही वह लोकाचार की सत्यनिष्ठ अन्वेषणात्मक अवस्था है, जो सामाजिक कर्तव्यों के प्रति मानवीय जागरूकता के अतिरिक्त नैतिकता पोषित मानव चरित्र का निर्माण भी सुनिश्चित करती है। शिक्षक को प्रत्येक बालक का अध्ययन करना होगा और यह पता लगाना होगा कि वह प्रगति कर रहा है, वह किस ढंग से पढ़ लिख रहा है।

शिक्षा का कार्य ऐसे मनुष्य तैयार करना है जो पूर्ण एवं समन्वित हो तथा यांत्रिक रूप से सक्षम हो। ऐसे नागरिक प्रज्ञाशील हुआ करते हैं, जो अपने विशेष ज्ञान से अधिगम एवं सम्प्रेषण की अवधारणाओं से परिचित होते हैं। प्रज्ञाशीलता का अर्थ तथ्य संग्रह नहीं, वह पुस्तकों से नहीं आती है और न चालाक आत्मसमर्थक प्रतिक्रियाओं या

आक्रमण आग्रहों में निहित होती है। विद्वानों की अपेक्षा एक साधारण आदमी जिसने अध्ययन नहीं किया है, अधिक विवेकपूर्ण हो सकता है। हमने परीक्षाओं व उपाधियों को प्रज्ञा का मापदण्ड बना लिया है और चालाकी से भरे ऐसे मन को विकसित किया है जो महत्वपूर्ण मानवीय समस्याओं की उपेक्षा करता है उनसे बच निकलता है। मौलिक सार स्वभाविक है, जो पूर्ण रूप से देख पाने की क्षमता को जगाने का कार्य करता है और इसी का अर्थ शिक्षा है।

भारतीय शिक्षा के इतिहास में अनेक शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचारों का अवलोकन करने पर उनके महानतम देनदारियों का क्रम सुनिश्चित होता है। इन्होंने लोगों को मात्र सांसारिक ज्ञानार्थी शिक्षा की अपरिहार्यता नहीं बतलाई अपितु यह सिद्ध करने का कार्य किया कि शिक्षा मनुष्य को अच्छे से जीवन जीने की कला सिखलाती है तथा उसे स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने की अवस्था में पहुंचाती है। उनकी मान्यता रही है कि स्वास्थ्य मानव का सर्वप्रमुख तत्व है। यदि मनुष्य आत्मा और मन से अस्वस्थ होता है तो उसका

विकास किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं हो सकता। उसके जीवन के सर्वांगीण विकासार्थं तन, मन और आत्मा के स्वास्थ्य होने की नितान्त आवश्यकता होती है। इन्होंने शारीरिक शिक्षा के प्रति विशेष रूप से जागरूकता का सन्देश दिया तथा लोगों को उनके कर्तव्य पथ से कभी विचलित न होने देने के लिए शिक्षा के दार्शनिक रूप को अपनाया है। इन्होंने जहाँ एक ओर सबके लिए शिक्षा की समान व्यवस्था पर बल दिया, वहीं दूसरी और समाज के उस वर्ग के प्रति भी विशेष सहानुभूति दर्शायी, जो पूर्णतया उपेक्षित था।

स्वामी विवेकानन्द की भाँति गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द, महात्मा गाँधी, अम्बेडकर और नरेन्द्र मोदी ने भी शिक्षा के प्रति समाज को सजग करने का कार्य किया। इन्होंने अपने दार्शनिक सन्दर्भों के प्रभावी रूप में अभिव्यक्तिकरण के साथ-साथ सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त उन तमाम सन्दर्भों को अभिव्यक्त करने का सार्थक प्रयत्न किया, जो मानव के जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकें।

1.1.3 शिक्षा एवं दर्शन

शिक्षा और दर्शन में गहरा सम्बन्ध है। अनेक महान शिक्षाशास्त्री स्वयं महान दार्शनिक भी रहे हैं। इस सह-सम्बन्ध से दर्शन और शिक्षा दोनों का हित सम्पादित हुआ है। शैक्षिक समस्या के प्रत्येक क्षेत्र में उस विषय के दार्शनिक आधार की आवश्यकता अनुभव की जाती है। फिहते अपनी पुस्तक 'एड्रेसेज टु दि जर्मन नेशन' में शिक्षा तथा दर्शन के अन्योन्य का समर्थन करते हुए लिखते हैं दर्शन के अभाव में 'शिक्षण-कला' कभी भी पूर्ण स्पष्टता नहीं प्राप्त कर सकती। दोनों के बीच एक अन्योन्य क्रिया । चलती रहती है और एक के बिना दूसरा अपूर्ण तथा अनुपयोगी है। डीवी शिक्षा तथा दर्शन के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि दर्शन की जो सबसे गहन परिभाषा हो सकती है, यह है कि 'दर्शन शिक्षा विषयक सिद्धान्त का अत्यधिक सामान्यीकृत रूप है।'

दर्शन जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा उपाय प्रस्तुत करती है। दर्शन पर शिक्षा की निर्भरता इतनी स्पष्ट और कहीं नहीं दिखाई देती जितनी कि पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं के सम्बन्ध में। विशिष्ट पाठ्यक्रमीय समस्याओं के समाधान के लिए दर्शन की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ प्रश्न उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों के चुनाव का है और इसमें भी दर्शन सन्निहित है।

जो बात पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में है, वही बात शिक्षण विधि के सम्बन्ध में कही जा सकती है। लक्ष्य विधि का निर्धारण करते हैं, जबकि मानवीय लक्ष्य दर्शन का विषय हैं। शिक्षा के अन्य अंगों की तरह अनुशासन के विषय में भी दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालय के अनुशासन निर्धारण में राजनीतिक कारणों से भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण कारण मनुष्य की प्रकृति के सम्बन्ध में हमारी अवधारणा होती है। प्रकृतिवादी दार्शनिक नैतिक सहज प्रवृत्तियों की वैधता

को अस्वीकार करता है। अतः बालक की जन्मजात सहज प्रवृत्तियों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्ति के लिए छोड़ देता है। प्रयोजनवादी भी इस प्रकार के मापदण्ड को अस्वीकार करके बालक व्यवहार को सामाजिक मान्यता के आधार पर नियंत्रित करने में विश्वास करता है, दूसरी ओर आदर्शवादी नैतिक आदर्शों के सर्वोपरि प्रभाव को स्वीकार किए बिना मानव व्यवहार की व्याख्या अपूर्ण मानता है, इसलिए वह इसे अपना कर्त्तव्य मानता है कि बालक द्वारा इन नैतिक आधारों को मान्यता दिलवाई जाये तथा इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए कि वह शनैः शनै:' इन्हें अपने आचरण में उतार सके।

शिक्षा का क्या प्रयोजन है और मानव जीवन के मूल उद्देश्य से इसका क्या सम्बन्ध है, यही शिक्षा दर्शन का विजिज्ञास्य प्रश्न है। चीन के दार्शनिक मानव को नीतिशास्त्र में दीक्षित कर उसे राज्य का विश्वासपात्र सेवक बनाना ही शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। प्राचीन भारत में सांसारिक अभ्युदय और पारलौकिक कर्मकाण्ड तथा लौकिक विषयों का बोध होता था और परा विद्या से निःश्रेयस की प्राप्ति ही विद्या के उद्देश्य थे। अपरा विद्या से अध्यात्म तथा रात्पर तत्व का ज्ञान होता था। परा विद्या मानव की विमुक्ति का साधन मान जाती थी। गुरुकुलों और आचार्यकुलों में अंतेवासियों के लिये ब्रह्मचर्य, तप, सत्य व्रत आदि श्रेयों की प्राप्ति परमाभीष्ट थी और तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय प्राकृतिक विषयों के सम्यक् ज्ञान के अतिरिक्त नैष्ठिक शीलपूर्ण जीवन के महान उपस्तंभक थे। भारतीय शिक्षा दर्शन का आध्यात्मिक घरातल विनय, नियम, आश्रममर्यादा आदि पर सदियों तक अवलम्बित रहा।

1.1.3.1 पाश्चात्य शिक्षा दर्शन

प्लेटो (अफलातून) और अरस्तू दार्शनिक विचिन्तन के समर्थक थे किन्तु सांसारिक कर्म की उपेक्षा उन्हें इष्ट नहीं थीं। प्लेटो का कहना है, बीस वर्ष की उम्र तक भावी राज्यशासकों को शारीरिक उन्नति, साहित्य, धर्मशास्त्र, पुरातत्व और संगीत की शिक्षा मिलनी चाहिए बीस से तीस वर्ष तक रेखागणित, अंकगणित, ज्योतिर्गणित आदि का पारदर्शी ज्ञान उन्हें प्राप्त करना है। तीस से पैंतीस वर्ष तक उन्हें गम्भीर दार्शनिक ऊहापोह कर प्रत्ययों का और शिवप्रत्यय का प्रकृष्ट ज्ञान प्राप्त करना है। गणित और दर्शन का इतना विशद ज्ञान प्राप्त करने पर भी सिर्फ चिन्तन में निरत रहना उनका उद्देश्य नहीं है। दर्शन के उत्तुंग शिखर से उतरकर उन्हें फिर अज्ञानावृत्त संसार में आकर राज्य और समाज की बुराइयों का निराकरण करना है। पैंतीस से पचास वर्ष की अवस्था तक अवश्य ही उन्हें फिर अज्ञानावृत्त संसार में आकर राज्य और समाज की बुराइयों का निराकरण करना है। पैंतीस से पचास वर्ष की अवस्था तक अवश्य ही उन्हें राजकीय कर्मयोग का मार्ग अपनाना है और सामष्टिक कल्याण की सिद्धि करनी है। राजनीतिक दृष्टिकोण, प्लेटो की अपेक्षा अरस्तू में अधिक प्रबल है। मानव को राजनीतिक प्राणी मानकर शिक्षा को सदभ्यास प्राप्ति)। का यह परम साधन मानता है। विभिन्न नागरिकों में शिक्षा से ही राज्यनिमित्तक शील का विकास सम्भव है। शिक्षा से मानसिक उन्नयन तथा अवकाश का सदुपयोग होता है. ऐसा अरस्तू ने स्वीकार किया है किन्तु प्लेटो के समान तात्विक और दार्शनिक शिक्षा पर उसने ध्यान नहीं दिया है। फिर भी प्लेटो की भाँति अरस्तू भ भी राज्य का पूरा नियंत्रण शिक्षा पर मानता है।

मध्ययुगीन यूरोप में देववाद की प्रधानता थी। संत अगस्तीन ने दिव्य नगर का सन्देश दिया और टॉमस अक्वायनास ने सनातन नियम और नैसर्गिक नियम का उद्घोष किया। मध्ययुग के अन्तिम चरण में ऑक्सफोर्ड, कैब्रिज, पेरिस विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई और उनमें भी प्रारम्भ में धर्मशास्त्र के अध्ययन का ही महत्व रखा गया था। भारतवर्ष में भी मध्ययुग में शंकर, रामानुज, निंबार्क, मध्व, वल्लभ आदि ने ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का ही सन्देश प्रतिपादित किया।

मध्ययुग का अन्त होने पर यूरोपीय पुनरुत्थान आन्दोलन से पुनरपि प्रकृतिवाद और मानववाद पर बल पड़ा। यदि दाँते और कुसा के निकोलास देवी विचिन्तन और आध्यात्मिक संध्वनि के सन्देशवाहक थे तो झेसमस, मोर और मोटेन ने मनुष्य पर ध्यान आकृष्ट किया। केपलर, गेलिलियो और न्यूटन ने भौतिकी के विकास कर क्रान्तिकारी वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया। बेकन, डेकार्ट और लायब्नित्स ने ज्ञान को शक्तिप्रद माना। लॉक ने सदभ्यास के द्वारा चारित्रिक उत्थान

पर बल दिया तथापि उसने शिक्षा में अभिजाततंत्री दृष्टिकोण समर्थित किया, यद्यपि वह राजनीतिक विचारों में नैसर्गिक अधिकारवाद का पोषक था। रूसो ने पूँजीवाद, सभ्यता और बुद्धिवाद का खण्डन कर प्रकृतिवाद और शिशु-शिक्षा का पोषण किया किन्तु उसका ग्रन्थ 'एमिला' दार्शनिक शिक्षा के प्रश्न पर बिल्कुल मौन है। मनोविज्ञान का महत्व स्वीकार कर पेस्टालोजी ने शिशुओं के पूर्ण विकास को गौरव दिया। स्वतः प्रेरित विकास और निजाभिव्यक्ति को मूलोद्देश्य मानकर फ्रोबेल ने किंडरगार्टन पद्धति का सूत्रपात किया।

1.1.3.2 प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन

जीवन-दर्शन और शिक्षा दर्शन के मध्य वैषम्य की कोई कल्पना नहीं की जा सकती है। वे एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। जीवन-दर्शन की दृष्टि से प्राचीन भारतीय दर्शन के विभिन्न कालों के बीच गहरी रेखायें नहीं खींची जा सकती हैं। प्राचीन भारत की संस्कृति शाश्वत और सतत् रही है, अविभाज्य रही है। विद्वानों ने वैदिक संस्कृति से महाकाव्य (रामायण और महाभारत) कालीन संस्कृति में प्राथक्य स्थापित करने के प्रयत्न किये हैं किन्तु बाद वाले काल में भी वैदिक संस्कृति और जीवन शैली का स्पष्ट प्रभाव है, साम्य भी है। वैदिक जीवन शैली महाकाव्यकालीन जीवन शैली में प्राचुर्य है। यह सत्य है कि रामायण और महाभारत में वर्णित कुछ जीवन पद्धतियाँ वैदिक काल में नहीं है। अतः वेदकालीन जीवन-दर्शन का अस्तित्व पृथक से स्वीकार किया जा सकता है। इसी तारतम्य में यदि हम महाकाव्य कालीन युग का पृथक अस्तित्व भी स्वीकार करते हैं तब भी वैदिक संस्कारों का युग में भी विद्यमान होना स्वीकार करना ही होगा।

इस परिप्रेक्ष्य में प्राचीन भारत के इतिहास को एक इकाई के रूप में होना चाहिए इसी तारतम्य में प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन को भी सर्वप्रथम एक इकाई के रूप में ही मान्य किया जाना चाहिए। यह हो सकता है कि सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने के लिए उपर्युक्त दोनों युगों की सीमायें निर्धारित की जायें किन्तु विशेषकर बाद वाले युग में प्रथम युग की इतनी अधिक विशेषतायें विद्यमान हैं कि दोनों युगों के जीवन-दर्शन और शिक्षा दर्शन पर एक साथ विचार करना भी उपयोगी होगा।

प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन धर्ममय था। जीवन के सभी कार्यकलाप धर्म से ओत प्रोत थे, धर्म से नियंत्रित थे। धर्म द्वारा धर्म के लिए और धर्ममय जीवन शैली प्राचीन भारत की विशेषता थी। वर्तमान जीवन में राजनीति का प्रभुत्व है। धर्म, समाज, अर्थ आदि सभी में राजनीति का प्रवेश है। सभी पर राजनीति हावी है। प्राचीन युग की प्रधानता होने से राजनीति में हिंसा और शत्रुता, द्वेष और ईर्ष्या, परिग्रह और स्वार्थ का बहुल्य न होकर, प्रेम, सदाचार त्याग और अपरिग्रह महत्वपूर्ण थे। उदात्त भावनायें बलवती थी दिव्य सिद्धान्त जीवन के मार्गदर्शक थे। सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति प्रधान नहीं था, अपितु वह परिवार और समाज के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग करने को तत्पर था। उदात्त वृत्ति की सीमा सम्पूर्ण वसुधा थी। जीवन का आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम्' था। जीवन का उद्देश्य धर्म था। धर्ममय जीवन भौतिक उपलब्धियों से श्रेष्ठ माना जाता था।

प्राचीन भारत का शिक्षा दर्शन भी धर्म से ही प्रभावित था। शिक्षा का उद्देश्य धर्माचरण की वृत्ति जाग्रत करना था। शिक्षा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए थी। इनका क्रमिक विकास ही शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य था। धर्म का सर्वप्रथम स्थान था। धर्म से विपरीत होकर अर्थ लाभ करना मोक्ष प्राप्ति का मार्ग अवरुद्ध करना था। मोक्ष जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य था और यही शिक्षा का भी अन्तिम लक्ष्य था। प्राचीन काल में जीवन दर्शन ने शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित किया था। जीवन की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का प्रभाव शिक्षा दर्शन पर भी पड़ा था। उस काल के शिक्षकों, ऋषियों आदि ने चित्त वृत्ति निरोध को शिक्षा का उद्देश्य माना था। शिक्षा का लक्ष्य यह भी था कि आध्यात्मिक मूल्यों का विकास हो। उस समय भौतिक सुविधाओं के विकास की ओर ध्यान देना किंचित भी आवश्यक नहीं था क्योंकि भूमि धन-धान्य से पूर्ण थी, भूमि पर जनसंख्या का भार नहीं था। किन्तु इसका यह भी अर्थ नहीं था कि लोकोपयोगी शिक्षा का आभाव था। प्रथमतः लोकोपयोगी शिक्षा परिवार में परिवार के मध्यम से ही सम्पन्न हो जाती थी। वंश की

परम्पराएं धी और ये परम्पराएँ पिता से पुत्र को हस्तान्तरित होती रहती थी। व्यवसायों के क्षेत्र में प्रतियोगिता नहीं के बराबर थी। सभी के लिए काम उपलब्ध था। सभी की आवश्यकताएं पूर्ण हो जाती थी।

चाहे वैदिक युग में हो अथवा महाकाव्य काल में हो, प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति में ऋषिगण समाज के मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक थे। वे सभी शिक्षक के समधर्मी थे। वे सदा ही आध्यात्मिक सत्ता के गुण गाते थे। उनका जीवन भौतिकता से मुक्त और आध्यात्मिकता में लिप्त रहता था। समाज को भी वे यहीं शिक्षा और मार्गदर्शन देते थे। वैदिक काल से प्रारम्भ होकर, महाकाव्य काल है यह जीवन-दर्शन परवान चढ़ा। इस प्रकार प्राचीन काल में भारतीय जीवन-दर्शन पूर्णत: आध्यात्मिक रहा और शिक्षा को भी यही दिशा मिली। गुरु परम्परा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रही। वेदों का प्रादुर्भाव भी गुरु परम्परा से ही हुआ। तत्पश्चात भी शिक्षा गुरु परम्परा के माध्यम से ही दी जाती रही।

इसका यही अर्थ है कि शिक्षा केवल सैद्धान्तिक नहीं थी। व्यवहार और वास्तविकता का भी शिक्षा से उतना ही गहन सम्बन्ध था जितना सैद्धांतिक अध्ययन-अध्यापन का किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझा जाता था। ऋग्वेद में ऐसे उदाहरण हैं कि ऋषि स्वयं कवि थे। उनके पिता चिकित्सक थे। उनकी माता उपल प्रक्षिणी अर्थात् आटा पीसने वाली थी और परिवार के तीनों ही सदस्य शिक्षा दान में कार्यरत थे।।

क्रिया द्वारा शिक्षा के लिए जीवन एक प्रयोगशाला के समान था। ऋषि कुल में जीवनयापन के मध्य शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग और परीक्षण सम्पन्न होते थे। इन प्रयोगों के आधार पर ही शिक्षाशास्त्र विकसित हुआ था। यहाँ तक शिक्षण विधि का प्रश्न है, श्रवण, मनन और चिन्तन, प्रयोग और व्यवहार को समुचित स्थान प्राप्त था। स्मरण शक्ति का यथोचित उपयोग किया जाता था। गुरु परम्परा का महत्व भी अत्यधिक था। यह गुरु परम्परा की ही देन है कि वेद आज तक जीवित हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा का विकास, आध्यात्मिकता, चित्त वृत्ति निरोध, लोकोपयोग, गृहस्थ जीवन प्रशिक्षण, श्रम की पूजा, कृषि का प्रायोगिक ज्ञान आदि को सम्मिलित कर हुआ था।

ऋषिकुल अथवा गुरुकुल में निवास करने वाले किसी भी शिष्य या उसके परिवार से शुल्क लेने की प्रथा नहीं थी। प्रायः वे आश्रम आत्म-निर्भर होते थे। पशुपालन या कृषि उत्पादन से इन आश्रमों या गुरुकुल का सम्पूर्ण व्यय बहन होता था। अनेक आश्रम ऐसे भी थे जिनके लिए इस प्रकार से व्यय पूर्ति सम्भव नहीं थी। उनके लिए भिक्षा प्राप्त करने का उपाय था। शिष्यगण और स्वयं गुरु भी भिक्षा माँगने को अधम अथवा हीन नहीं मानते थे। भिक्षा स्वयं माँगने वाले के लिए नहीं होकर समूह के लिए होती थी। वे भिक्षा प्राप्त करने में किसी प्रकार की लज्जा या ग्लानि का अनुभव नहीं करते थे। निर्धन और धनिक दोनों ही प्रकार के परिवारों से आये शिष्य भिक्षा प्राप्ति में समान रूप से भाग लेते थे। 'एक सब के लिए और सब एक के लिए वाले सिद्धान्त पर सम्पूर्ण व्यवस्था आधारित थी।

गुरु भी भिक्षा माँगने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करते थे। भिक्षा उनके स्वयं के उदर पोषण या भौतिक सुविधाओं के लिए नहीं होती थी अपितु आश्रम के संचालन और विकास के लिए वे राजा या धनिकों के द्वार पर दान प्राप्त करने के लिए भिक्षु के रूप में उपस्थित होते थे। वे दान में गौएँ और स्वर्ण प्राप्त करते थे। जब शिष्य अपने ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति पर अपने परिवार में पहुँचते थे और गृहस्थ का जीवन अपनाते थे तब उन्हें इस भिक्षा की वृत्ति की उपादेयता ज्ञात रहती थी। उनके पास उनका स्वयं का अनुभव होता था कि किस प्रकार उनके शिष्य काल में प्राप्त भिक्षा सर्वा हिताय होती थी। अतः वे मुक्त हृदय से दान देने में पीछे नहीं रहते थे।

1.1.4 शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण

अतीत काल से शिक्षा के प्रति भारतीय दार्शनिकों का विशेष भाव केन्द्रित रहा है। इन्होंने समय-समय पर अपनी दार्शनिक धारणाओं के माध्यम से शैक्षिक गुणवत्ताओं के सम्बर्धन में विशेष योगदान दिया है। मूलतः देखा जाए तो शिक्षा और दर्शन का अटूट सम्बन्ध

रहा है, दोनों एक दूसरे के सम्पूरक होकर सामाजिक विकास में लोकनिर्माण की प्रक्रिया में संलग्न रहे क्योंकि शिक्षा के बिना दर्शन को समझना दुर्लभ है तो दर्शन के बिना शिक्षा की पराकाष्ठा तक पहुँच पाना आसान नहीं है। शिक्षाविदों ने शिक्षा को मात्र ज्ञान संग्रह की प्रवृत्ति तक ही सीमित नहीं रखा है बल्कि उन्होंने इसे विद्या की पराकाष्ठा तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है, जिसमें विनयावत होकर नियम संयम के साथ व्यक्तित्व के आन्तरिक एवं वह पक्ष के विकास की गति पर बल दिया है। सभी शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय दार्शनिक धारणाओं को सहजता पूर्वक जनमानस तक पहुंचाने के लिए शिक्षा को ही अपना माध्यम बनाया। सबका मात्र एक ही उद्देश्य रहा है कि मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो। वह जीवन के एकल पक्ष की उन्नति को ही अपना सब कुछ न समझे बल्कि वह सभी विषयों का समानुपातिक विकास करता रहे। इस दिशा में मानवीय संस्कृति के विकास काल से ही अनवरत प्रयत्न जारी है आज वर्तमान परिवेश में भी इस परम्परा को आगे बढ़ाने रहने का प्रयास किया जा रहा है और इस परिधि में सफलता भी नाम हो रही है।

शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय शिक्षा के विकास में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने सामान्य जन को सहजता पूर्वक जीवन व्यतीत करने का समय-समय पर निर्देशन दिया है, क्योंकि जीवन की गति सत्य है, समय के चक्र में वह चलता ही जाता है जीवन जीने की जिसकी जितनी अद्भुत कला होती है वह उतना ही प्रवीनता से जीवन की मूलभूत सुखों को अर्जित करने में सफलता हासिल करता है। इसीलिए जीवन की कला को सीखने समझने व उस पृष्ठभूमि में पारंगत होने की अनोखी कला का समुचित प्रदर्शन शिक्षा दर्शन में प्रयुक्त किया है, जो भारतीय आदशों को स्थापित करते हुए जीवन के यथार्थ एवं मानववादी अद्भुत दृष्टिकोणों के विकास पर सतत बल देता है। उन्होंने आन्तरिक शुद्धता के साथ-साथ सामाजिक समरसता को जीवन का प्रमुख बतलाया है, जो भारतीय दृष्टिकोण का पक्षधर है।

राष्ट्रीय आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय आदर्शवादी पृष्ठभूमि को बड़ी सहजता के साथ लोक सम्मुख प्रस्तुत किया है। उन्होंने पाश्चात्य चमत्कार से परे, भारतीय मर्यादाबाद के यथार्थं पृष्ठभूमि को अपने साधन की कसौटी बनाया और उस अनुभूतियों की सच्चे विकास पर अपनी धारणाओं को कसते हुए जन जीवन के उद्धार हेतु सामाजिक यथार्थ के सच्चे आदर्शरूप की परिकल्पना की है। इसके अन्तर्गत उन्होंने एक और शारीरिक स्वस्थ की बात की है तो दूसरी और आत्मीय शुद्धता पर बल दिया है। उनकी मान्यता रही है कि व्यक्ति की आत्मा की शुद्धता से उसका अन्तर्मन सबल होता है तथा उसकी चेतनात्मक अवधारणा नवीन सन्दर्भों का संस्पर्श प्राप्त करती है जो मनुष्य की सदाचारी, सदविवेकी, अनुभव शील व सरल लोक व्यवहारी होने पर बल देता है तथा दूसरी ओर शारीरिक स्वास्थ्य की श्रेष्ठता पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए उन्होंने खानपान की उपयुक्तता व खेलकूद तथा व्यायाम के महत्व पर बल देते हुए जीवन के नियम संयम की गुण ग्रहणता को रेखांकित किया है।

इस प्रकार से शिक्षा शास्त्रियों ने अनवरत भारतीय शिक्षा के विकास में अपनी भावनाओं का विशेष योग दिया है। जो भारतीय दृष्टिकोण को सहजता से अभिव्यक्त करने में सक्षम है। इसमें आनन्दवाद के प्रबल प्रवृत्ति का प्रदर्शन सन्निहित है। पश्चात सुखवादी अवधारणा इसके किसी भी सन्दर्भ को प्रभावित नहीं करती है।

1.1.5 भारतीय शैक्षिक विचारक

शिक्षा में स्वामी दयानन्द (1824-1883), स्वामी विवेकानन्द (1873-1902), श्रीमती एनी बेसेन्ट (1847-1933), गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941), महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय (1861-1945), महात्मा गाँधी (1869-1948) महर्षि अरविन्द (1872-1950) और भीमराव अम्बेडकर (1891-1956) आदि शैक्षिक विचारक आधुनिक भारत के महान शिक्षाशास्त्री माने जाते हैं। वे अन्य विचारकों द्वारा की हुई भारतीय शिक्षा से सम्बन्धित विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ भारतीय शिक्षाशास्त्रियों की मुख्य विचारधारा का अवलोकन किया जाएगा

और यह भी बतलाने का प्रयत्न किया जाएगा कि भारतीय विचारकों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों में पाश्चात्य शिक्षा दर्शन की छाप कहाँ तक पाई जाती है।

1.1.5.1 गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941)

रबीन्द्रनाथ ठाकुर अथवा रविन्द्रनाथ टैगौर (जन्म 7 मई 1861 कलकत्ता, पश्चिम बंगाल, मृत्यु 7 अगस्त 1941, कलकत्ता) एक बांग्ला कवि, कहानीकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबन्धकार और चित्रकार थे। भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ रूप से पश्चिमी देशों का परिचय और पश्चिमी देशों की संस्कृति से भारत का परिचय कराने में टैगोर की बड़ी भूमिका रही तथा आमतौर पर उन्हें आधुनिक भारत का असाधारण सृजनशील कलाकार माना जाता है।

भारत का राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं। वे वैश्विक समानता और एकातिकता के पक्षधर थे। ब्रह्म समाजी होने के बावजूद उनका दर्शन एक अकेले व्यक्ति को समर्पित रहा।। चाहे उनकी ज्यादातर रचनाएँ बांग्ला में लिखी हुई हो। वह एक ऐसे लोक कवि थे जिनका केन्द्रीय तत्त्व अन्तिम आदमी की भावनाओं । का परिष्कार करना था। वह मनुष्य मात्र के स्पन्दन के कवि थे। एक ऐसे कलाकार जिनकी रंगों में शाश्वत प्रेम की गहरी अनुभूति है, एक ऐसा नाटककार जिसके रंगमंच पर सिर्फ ट्रेजडी ही जिन्दा नहीं है. मनुष्य की गहरी जिजीविषा भी है। एक ऐसा कथाकार जो अपने आस-पास से कथालोक चुनता है, खुनता है, सिर्फ इसलिए नहीं कि घनीभूत पीड़ा के आवृत्ति करे या उसे ही अनावृत करें, बल्कि उस कथालोक में वह आदमी के अन्तिम गंतव्य की तलाश भी करता है।

1901 में टैगोर ने पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शान्ति निकेतन में एक प्रायोगिक विद्यालय की स्थापना की। जहाँ उन्होंने भारत और पश्चिमी परम्पराओं के सर्वश्रेष्ठ को मिलाने का प्रयास किया। यह विद्यालय में ही स्थायी रूप से रहने लगे और 1921 में यह विश्वभारती विश्वविद्यालय बन गया। 1902 तथा 1907 के बीच उनकी पत्नी तथा दो बच्चों की मृत्यु से उपजा गहरा दुःख उनकी बाद की कविताओं में परिलक्षित होता है, जो पश्चिमी जगत में गीतांजलि, साँग ऑफरिंग्स (1912) के रूप में पहुँचा।

शान्ति निकेतन में उनका जो सम्मान समारोह हुआ था उसका सचित्र समाचार भी कुछ ब्रिटिश समाचार पत्रों। में छपा था। 1908 में कोलकाता में हुए कांग्रेस अधिवेशन के सभापति और बाद में ब्रिटेन के प्रथम लेबर प्रधानमंत्री रेम्जे मेक्डोनाल्ड 1914 में एक दिन के लिए शान्ति निकेतन गए थे। उन्होंने शान्ति निकेतन के सम्बन्ध में पार्लियामेंट के एक लेबर सदस्य के रूप में जो कुछ कहा वह भी ब्रिटिश समाचार पत्रों में छपा। उन्होंने शान्ति निकेतन के सम्बन्ध में सरकारी नीति की भर्त्सना करते हुए इस बात पर चिन्ता व्यक्त की थी कि शान्ति निकेतन को सरकारी सहायता मिलना बंद हो गई है। पुलिस की ब्लेक लिस्ट में उसका नाम आ गया है। और वहाँ पढ़ने वाले छात्रों के माता-पिता को धमकी भरे पत्र मिल रहे हैं। पर ब्रिटिश समाचार पत्र बराबर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के इस प्रकार प्रशंसक नहीं रहे।

गुरुदेव ने जीवन के अन्तिम दिनों में चित्र बनाना शुरू किया। इसमें युग का संशय, मोह, क्लान्ति और निराशा के स्वर प्रकट हुए हैं। मनुष्य और ईश्वर के बीच जो चिरस्थायी सम्पर्क है उनकी रचनाओं में वह अलग-अलग रूपों में उभरकर सामने आया। टैगोर और महात्मा गाँधी के बीच राष्ट्रीयता और मानवता को लेकर हमेशा वैचारिक मतभेद रहा। जहाँ गाँधी पहले पायदान पर राष्ट्रवाद को रखते थे, वहीं टैगोर मानवता को राष्ट्रवाद से अधिक महत्व देते थे। लेकिन दोनों एक दूसरे का बहुत अधिक सम्मान करते थे। टैगोर ने गाँधी जी को महात्मा का विशेषण दिया था। एक समय था जब शान्ति निकेतन आर्थिक कमी से जूझ रहा था और गुरुदेव देश भर में नाटकों का मंचन करके धन संग्रह कर रहे थे। उस समय गाँधी जी ने टैगोर को 60 हजार रुपये के अनुदान का चेक दिया था।

जीवन के अन्तिम समय 7 अगस्त 1941 से कुछ समय पहले इलाज के लिए जब उन्हें शान्ति निकेतन से कोलकाता ले जाया जा रहा था तो उनकी नातिन ने कहा कि आपको मालूम है हमारे यहाँ नया पावर हाउस बन रहा है।

इसके जवाब में उन्होंने कहा कि हाँ पुराना आलोक चला जाएगा और नए का आगमन होगा। टैगोर के गीतांजलि (1910) समेत बांग्ला काव्य संग्रहालयों से ली गई कविताओं के अंग्रेजी गद्यानुवाद की इस पुस्तक की डब्ल्यू बी यीट्स और आंद्रे जीद ने प्रशंसा की और इसके लिए टैगोर को 1913 में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

1.1.5.2 स्वामी विवेकानन्द (1873-1902)

स्वामी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण की शुरुआत। अमरीकी भाइयो एवं बहनो के साथ करने के लिये जाना जाता है। उनके सम्बोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था।

कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली परिवार में जन्मे विवेकानन्द आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवो मे स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व हैं इसलिए मानव जाति की सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया और ब्रिटिश भारत में मौजूदा स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान हासिल किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। विवेकानन्द ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिन्दू दर्शन के सिद्धान्तों का प्रसार किया। सैकड़ों सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। भारत में विवेकानन्द को एक देशभक्त सन्यासी के रूप में माना जाता है और उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानन्द मैकाले द्वारा प्रतिपादित और उस समय प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के विरोधी थे, क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसको आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा करना है। स्वामी विवेकानन्द ने प्रचलित शिक्षा को 'निषेधात्मक शिक्षा' की संज्ञा देते हुए कहा है कि आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर ली हों तथा जो अच्छे भाषण दे सकता हो, पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र निर्माण नहीं करती, जो समाज सेवा की भावना विकसित नहीं करती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ?

अतः स्वामी जी सैद्धान्तिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, वे व्यावहारिक शिक्षा को व्यक्ति के लिए उपयोगी मानते थे। व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है, इसलिए शिक्षा में उन तत्वों का होना आवश्यक है, जो उसके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा। सिद्धान्तों के ढेरों ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।

स्वामी जी शिक्षा द्वारा लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार करना चाहते हैं। लौकिक दृष्टि से शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति स्वावलम्बी बने पारलौकिक दृष्टि से उन्होंने कहा है कि 'शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित है-

- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके।

- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो। तथा बालक आत्मनिर्भर बने।
- बालक एवं बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिए
- धार्मिक शिक्षा, पुस्तकों द्वारा न देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहिए।शिक्षा, गुरु गृह में प्राप्त की जा सकती है।
- शिक्षक एवं छात्र का सम्बन्ध अधिक से अधिक निकट का होना चाहिए।
- सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जान चाहिये।
- देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जाया
- मानवीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिवार से ही शुरू करनी चाहिए

1.1.4 शिक्षा की वर्तमान स्थिति

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी के अतिरिक्त प्रशासन और व्यवसाय जैसे तत्वों के समाविष्ट होने के कारण इसकी दशा और दिशा एक सामान्य शिक्षा प्रणाली से बिल्कुल भिन्न हो चुकी है। इसका मूल उद्देश्य अक्षर ज्ञान से शुरू होकर जीविकोपार्जन के किसी साधन तक सीमित हो चुका है जिसके चलते मनुष्य का सर्वांगीण विकास बाधित होता है. इस बाधा के उत्पन्न होने के कारण समाज में विभिन्न प्रकार की कुंठाओं और वैमनस्य का अंकुरण होता है जो आगे चलकर एक वृहद समस्या का रूप धारण कर लेता है जिनमें भेदभाव, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार तथा साम्प्रदायिकता प्रमुख हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता के आधार पर कुछ विशिष्टतायें है परन्तु वह उपयोगिता मनुष्य को भौतिक संसाधनों के चरम सुख की तरफ ले जाती है, भौतिक संसाधनों की अधिकता और कमी के आधार पर समाज का विघटन होना शुरू हो जाता है।

शिक्षा की वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या समर्पित, सुयोग्य, अनुभवी, प्रशिक्षित एवं अद्यतित शिक्षकों का अभाव है, जो कि अपने कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को समझे और विद्यार्थियों की समस्या का उतनी ही तन्मयता से हल करें, जितनी कि अपने अन्य निजी कार्यों को करते हैं। वर्तमान शिक्षकों में त्याग, बलिदान, चारित्रिक एवं नैतिक मूल्यों का अभाव है और उनका व्यवहार इतना संकुचित हो चुका है कि वह अपने आप में ही मस्त रहते हैं तद उन्हें विद्यार्थियों के हितों से कोई लेना- देना नहीं रहता है, जबकि शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग होता है और भावी पीढ़ी को गढ़ने वाला माना जाता है। वर्तमान में निम्न स्तर के शिक्षक महाविद्यालयों के प्रबन्धकों से चापलूसी कर शिक्षक बनते हैं और अपने आपको सर्वे-सर्वा समझते हैं तथा विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के साथ रुष्ट व्यवहार करते हैं।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा सीखने और सिखाने की वह प्रक्रिया है; जिसके द्वारा हम अपने जीवन को ऊंचाइयों की ओर ले जाते हैं। परिस्थितियाँ, चाहे किसी भी प्रकार की हों, शिक्षा के द्वारा उसका हल बहुत आसानी से निकाला जा सकता है। शिक्षा के द्वारा हमारे व्यक्तित्व में सुधार आता है और इससे बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। शिक्षा सामाजिक विकास और आर्थिक उन्नति का आधार है, लेकिन क्या हम वर्तमान समय में शिक्षा को सही अर्थों में अपने जीवन हो साथ जोड़कर मानव के उत्थान के रूप में देख पा रहे हैं? या फिर शिक्षा सिर्फ पैसे कमाने का साधन ही बनकर रह गयी है। प्राचीन समय में शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और मानसिक विकास कर व्यक्ति का सर्वांगीण

विकास करना होता था, किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य पद लोलुपता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करना मात्र रह गया है।

वर्तमान समय में न तो सिखाने वाला गुरु रह गया है और न ही सीखने वाला शिष्य वर्तमान समय भौतिकता का समय है, जहाँ केवल और केवल दिखावा मात्र रह गया है। प्राचीन काल में शिक्षा को ज्ञान रूपी प्रकाश के रूप में देखा जाता था, किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा को केवल और केवल आर्थिक उन्नति की दृष्टि से ही देखा जा रहा है; जिसके कारण शिक्षा अपनी वास्तविक पहचान को खोता जा रहा है। वर्तमान समय में विद्यार्थी द्वारा शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र उद्देश्य सरकारी नौकरी प्राप्त करना है, अन्यत्र कुछ भी नहीं है। विद्यार्थी एक कोर्स के पश्चात दूसरा कोर्स बिना किसी निश्चित उद्देश्य के करता जाता है और सही मार्ग से भटक जाता है, जिससे वह सफलता की जगह असफलता की तरफ बढ़ता जाता है।

आज विद्यार्थियों में व्याप्त हो रही चरित्रहीनता, अनुशासनहीनता, मर्यादाओं का अभाव, इसी विकृति को दर्शाता है। आज शिक्षा एक व्यवसाय का रूप ले चुकी है। शिक्षण संस्थाएँ देश एवं विद्यार्थियों के कल्याण की भावना से परे अपने स्वार्थ को पूर्ण करने हेतु खोले जा रहे हैं। संस्थापकों तथा संचालकों का ध्यान विद्यार्थियों के हितों, उनकी पढ़ाई तथा योग्यता की ओर नहीं दिया जाता. बल्कि उनका ध्यान केवल अपने स्वार्थ तथा हितों पर रहता है। वर्तमान समय में शिक्षक भी अपने आपको विद्यार्थियों का गुरु अथवा शिक्षक/अभिभावक न समझकर संस्था का नौकर समझते हैं; उन्हें जितनी चिन्ता संस्था के अधिकारियों को प्रसन्न रखने की रहती है, उतनी चिन्ता छात्रों के विकास की नहीं रहती है, जबकि शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जो राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में योगदान दे सके और ऐसे नागरिक तैयार करें, जो समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त कर सकें।

अतः उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखकर ही मैंने श्री कुमार विशवास जी को एक ऐसे आदर्श के रूप में पाया जिनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं अनुकरण निश्चित रूप से शैक्षिक जगत व समाज के उन्नयन में सहायक सिद्ध होगा।

1.3 समस्या कथन

समसामयिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन की आवश्यकता के आलोक में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध हेतु निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया—

"डॉ० कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान"

1.4 अध्ययन का औचित्य

शिक्षा के प्रति आज जितनी रुचि है, उतनी पहले कभी नहीं थी। दलों, पीढ़ियों तथा समूहों में यह एक विवाद का विषय बन गयी है, जो बहुधा राजनैतिक तथा वैचारिक संघर्षों का रूप धारण कर लेती है। शिक्षा आनुभविकाया वैज्ञानिक सामाजिक आलोचना का विषय बन गयी है। पहले लोक अधिकारियों के प्राधिकार को प्रबुद्ध लोगों द्वारा सोजन्यतापूर्वक चुनौती दी जाती थी परन्तु अब सामूहिक रूप से क्रुद्ध तथा विद्रोही छात्रों द्वारा दी जाती है। आज का मानव शिक्षा को भविष्य की दृष्टि से देख रहा है, क्योंकि आज़ का शिक्षा विकास आर्थिक विकास की अगुवाई कर रहा है। इस दृष्टि से इतिहास में प्रथम बार शिक्षा मनुष्य को उस समाज के लिए तैयार कर रही है, जिसका निर्माण अभी तक नहीं हुआ है।

शिक्षा के लिए यह चुनौती पूर्णत नवीन है, क्योंकि शिक्षा का अब तक का कार्य समकालीन समाज को उसी रूप में जीवित रखना और उसके सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखना था. परन्तु आज उसका लक्ष्य 'अपरिचित बालकों को अपरिचित दुनिया के लिए शिक्षित करना है। अतः शिक्षा शास्त्रियों के ऊपर आज वह दायित्व आ गया है, जिसके

द्वारा उन्हें भविष्य का निर्माण करना होगा। उनको इस दायित्व के लिए चिन्तन करना होगा। इस चिन्तन के फलस्वरूप शिक्षा के नवाचारों, नवीन आन्दोलनों, संस्था विहीनीकरण, समाज शाला का विहीनीकरण आदि को जन्म मिला। इन आन्दोलनों ने खुली शिक्षा, सतत शिक्षा एवं आजीवन शिक्षा जैसी अवधारणाओं को विकसित किया।

सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु शिक्षक होता है। शिक्षक के बिना शिक्षण की प्रक्रिया नहीं चल सकती। योग्य और विद्वान शिक्षक के संरक्षण में ही व्यक्ति योग्य एवं ज्ञानी बन सकता है। शिक्षक बालकों को ज्ञान देता है, उनकी योग्यता और क्षमताओं को विकसित करता है, उनकी रुचियों को जाग्रत करता है, उनमें नैतिक और सामाजिक गुणों का विकास करता है। इसलिए यदि शिक्षक सचरित्र होगा. तो अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बालक में चारित्रिक और नैतिक गुणों का विकास कर सकेगा। ऐसे शिक्षक समाज में बहुत कम रह गये हैं। अतः ऐसे शिक्षकों को ढूंढकर सामने लाना आवश्यक है, ताकि सभी उससे प्रेरणा प्राप्त कर सको प्रस्तुत अध्ययन इसी विषय में किया गया एक प्रयास है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

- प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं।
- डॉ० कुमार विश्वास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।
- डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक विचारों का व्यावहारिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना।
- डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक विचारों में सन्निहित उन आधारभूत तत्वों का अध्ययन करना, जो स्वस्थ शैक्षिक समाज के निर्माण में सहायक हैं।
- डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक विचारों का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगिता का अध्ययन करना।
- डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक, राजनीतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक परिवेशों का अध्ययन करना।
- डॉ० कुमार विश्वास के द्वारा समय-समय पर दिये गए शिक्षण सूत्रों का अध्ययन करना।
- डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक विचारों एवं उनके कार्यान्वयन का अध्ययन करना।
- वर्तमान भारतीय शिक्षा पद्धति में डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक दृष्टिकोण को समाहित करने की सम्भावना पर विचार करना।

1.6 अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध सर जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, सामाजिक जीवन, राजनीति जीवन, साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों के अध्ययन तक सीमित है।

1.7 शोध विधि

किसी भी अनुसन्धान को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि समस्या की प्रकृति के अनुरूप शोध विधि का प्रयोग किया जाये। किसी विषय पर किये जाने वाले शोध की विधि उसकी समस्या अथवा तथ्यों पर निर्भर करती है। शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य में डॉ० कुमार विश्वास के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। अतः शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु विवरणात्मक वर्णनात्मक अनुसन्धान विधि के अन्तर्गत इकाई अध्ययन (Case

Study) विधि का चयन किया है। इकाई अध्ययन को वैयक्तिक अध्ययन, एक वृत्त अध्ययन, एकल/एकक अध्ययन आदि नामों से भी जाना जाता है।

इकाई अध्ययन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक समय में केवल एक इकाई का अत्यन्त गहराई से अध्ययन किया जाता है। वह इकाई एक व्यक्ति भी हो सकता है और एक समूची संस्था अथवा कोई नीति, प्रक्रिया प्रथा आदि भी हो सकती हैं। इसी प्रकार किसी एक परिवार एक जन-समूह, एक जाति विशेष, धर्म आदि का व्यापक रूप से किया गया अध्ययन भी एकक अध्ययन के अन्तर्गत आता है। इन अध्ययनों का उद्देश्य उस इकाई का प्रत्येक दृष्टिकोण से गहन अध्ययन करके इस बात पर प्रकाश डालना होता है कि वास्तव में समस्या क्या है?, वह किस प्रकार उत्पन्न हुई है, उसे जन्म देने वाले कारक तत्व एवं प्रक्रियाएँ क्या हैं? तथा वे किस प्रकार गतिशील रही हैं? लक्ष्यानुसार अनुसन्धानकर्ता उस इकाई के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित तथा विभिन्न स्रोतों से सूचना सामग्री एकत्र करता है। उस सूचना सामग्री का उपयुक्त विधि से विश्लेषण करके लक्ष्यानुसार निष्कर्षों का निर्धारण करता है।

इकाई अध्ययन विधि के अन्तर्गत किसी एक सामाजिक इकाई से सम्बन्धित सभी पक्षों का व्यापक, सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है।

1.8 अध्ययन की सार्थकता

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में विद्यमान कुरीतियों में सुधार करने के साथ-साथ विद्यार्थियों में अनुशासन, चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों का विकास कर उनका सही मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध होगा; जिससे कि वे सही मार्ग का चयन कर सफलता की ओर बढ़ सकेंगे।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध न केवल शिक्षकों, बल्कि अभिभावकों को भी उनके उत्तरदायित्वों से अवगत कराने और शिक्षकों में कर्तव्य परायणता की भावना का विकास करने में सहायक सिद्ध होगा एवं वर्तमान शिक्षा के स्वरूप में सुधार तथा राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

किसी भी विषय पर शोध करने से पूर्व उस विषय से सम्बन्धित साहित्यिक पुनरावलोकन अति आवश्यक है। साहित्यिक पुनरावलोकन कर लेने से शोध कार्य में काफी सरलता आ जाती है और शोधकर्ता को छोटे-छोटे बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। शोधार्थी साहित्य का पुनरावलोकन करते समय यह ध्यान रखें जिसमें कि उसका शोध विषय परिपूर्ण हो जाये। जिस विषय पर वर्तमान में शोध हुए है उनका अध्ययन कर लेना चाहिए क्योंकि वे वर्तमान अध्ययन पर काफी प्रकाश डालते है और कार्य को अग्रसर करने के लिए दिशा निर्देश दे सकते हैं।

साहित्य सर्वेक्षण से तात्पर्य इस समस्या से सम्बन्धित पुस्तकों, शोधपत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, ज्ञान कोषों, प्रकाशित शोध-प्रबन्धों, अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि का अध्ययन कर लेने से है।

जॉनडब्लूवेस्ट के अनुसार, "व्यवहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संगृहीत एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर भोग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।" प्रस्तुत शोध अध्ययन की पृष्ठभूमि तथा परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित साहित्य की खोज करना आवश्यक है।

वर्तमान शोध के परिप्रेक्ष्य में यह बात कर लेना आवश्यक है कि इस क्षेत्र में कितने शोध हो चुके हैं तथा समान प्रकार के शोध अध्ययनों में से किस प्रकार के उद्देश्य निश्चित किये गये हैं।

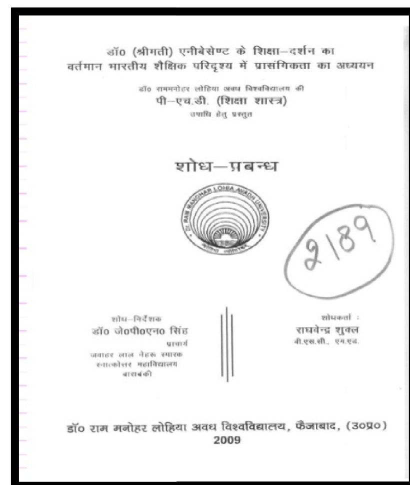
इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कौन सी शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही मालूम करना आवश्यक है कि इस प्रकार के पूर्व में किये गये अध्ययनों के क्या परिणाम रहे? तथा उनके मुख्य निष्कर्ष क्या प्राप्त हुए? इस प्रकार से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के उपरांत वर्तमान शोध अध्ययन हेतु उद्देश्य शोध विधि का चयन करना सुविधाजनक हो जाता है क्योंकि जब शोधार्थी दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसंधान कार्य का अध्ययन करता है तो उसे बहुत से अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों संरचनाओं एवं संदर्भग्रंथों का ज्ञान होता है, जो इसके अपने अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते है। सर्वेक्षण द्वारा बहुत से अनुसंधान प्रतिवेदनों की अच्छाईयों एवं कमियों को जान लेने के बाद इस बात की संभावना बहुत कम हो जाती है कि वह स्वयं एक निम्न स्तरीय अनुसंधान करेगा अथवा अनुसंधान प्रक्रिया संबंधी उन गलतीयों को पुनरावृत्तिकरेगा, जो उसके पूर्ववर्ती शोधकर्ता कर चुके हैं।

2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया जिसकाविवरण निम्नलिखित है —

1. **राघवेंद्र शुक्ल (2009)** ने 'डॉ० (श्रीमती) एनीबेसेण्ट के शिक्षा-दर्शन का वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में प्रासंगिकता का अध्ययन' किया इनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

- श्रीमती बेसेन्ट का मत है कि मानव आत्मा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति का अनन्त प्रयास ही धर्म है। 'ईश्वर का निवास मनुष्य के भीतर है, बाहर नहीं।" मानव-आत्मा ही ईश्वर प्राप्ति का एक मात्र साधन है। विश्व को भारतीय दर्शन तथा धर्म से ईश्वर की सर्वव्यापकता स्वीकार करने की उन्होंने सलाह दी थियोसोफी के अनुसार मानव के अन्तःमन में निवास करने वाले पर ब्रह्म परमेश्वर का साक्षात्कार करना ही धर्म है क्योंकि ईश्वर प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है।


डॉ० (श्रीमती) एनीबेसेण्ट के शिक्षा–दर्शन का
वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में प्रासंगिकता का अध्ययन

डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की
पी–एच.डी. (शिक्षा शास्त्र)
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

2189

शोध–निर्देशक
डॉ० जे०पी०एन० सिंह
प्राचार्य
जवाहर लाल नेहरू स्मारक
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बाराबंकी

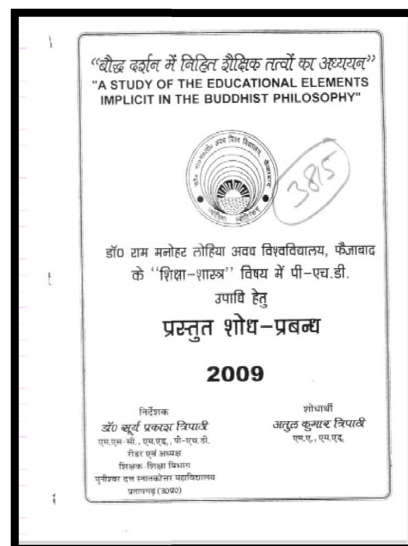
शोधकर्ता :
राघवेन्द्र शुक्ल
बी.एस.सी., एम.एड.

डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, (उ०प्र०)
2009

- भारत आकर श्रीमती बेसेन्ट का मन हिन्दू जीवन पद्धति में लग गया और ईसा मसीह तथा भगवान श्री कृष्ण के उपदेशों की तुलना में उन्होंने भगवान कृष्ण को अनुकूल पाया तथा हिन्दू दर्शन, पुराण और रीति-रिवाज को अपना लिया 'ईशावस्यमिदम्सर्वयत्किचित्जगत्यां जगत के सिद्धान्त में उनका विश्वास था हिन्दू धर्म के अवतारवाद तथा पुनर्जन्म में भी श्रीमती बेसेन्ट का विश्वास था वे मानती थीं कि इससे पूर्व जन्म में वे हिन्दू थी और उससे भी पूर्व जन्म में वे जियाडांनो बुनो थी महर्षि ब्रूनों पश्चिमी जगत के एक सुप्रसिद्ध दार्शनिक हो चुके है।"
- श्रीमती बेसेन्ट यह मानती थी कि मानव जाति का आध्यात्मिक एवं जातीय विकास निस्तर होता रहा है और होता रहेगा। मूल रूप से मानव की उन्होंने पाँच जातियाँ मानी है। इनमें से पाँचवी मूल जाति आर्यो की है जिनकी पाँच उपजातियाँ है।

2. **अतुल कुमार तिवारी (2009)** ने 'बौद्ध दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों का अध्ययन किया इनके अध्ययन' के निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

- विश्वविद्यालयों को आर्थिक सहायता समय-समय पर दिये गये दानों से मिलती थी। विश्वविद्यालयों के भवन निर्माण की समस्या राजाओं के सहयोग से सहज ही हल हो जाया करती थी। अधिकतर बौद्ध शिक्षा संस्थायें, राजाओं द्वारा संस्थापित तथा सहायता प्राप्त थीं जिनका पुनर्निर्माण गुप्त एवं पाल राजाओं ने कराया था। कभी-कभी विदेशी नरेश भी भवन निर्माण करवा दिया करते थे।लंका के नरेश ने गया में महाबोधि विहार का निर्माण कराया था। नालन्दा की शिक्षा व्यवस्था से प्रभावित होकर जावा और सुमात्रा के शासक बालपुत्रदेव ने भी एक विहार का निर्माण कराया था भवन निर्माण की तरह भूमिदान भी शिक्षण संस्थाओं की आय का एक प्रमुख साध न था। शिक्षकों की सहायता हेतु सम्राट हर्ष ने ऐसा नियम बनाया था कि भूमि की आय का ¼ भाग विद्वानों एवं विद्यार्थियों पर व्यय किया जाय। बौद्ध विहारों में भिक्षुओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रत्येक सुविधा प्राप्त थी जिसका व्यय विहार ही वहन करते थे। इन विहारों को राजाओं तथा धनिक वर्ग से पर्याप्त भूमि मिलती थीजिसकी समस्त आय का उपभोग विहार ही करते थे। इस प्रकार के दान को"विद्या दान" कहा जाता था।


"बौद्ध दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों का अध्ययन"
"A STUDY OF THE EDUCATIONAL ELEMENTS IMPLICIT IN THE BUDDHIST PHILOSOPHY"

3815

डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
के ''शिक्षा–शास्त्र'' विषय में पी–एच.डी.
उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध

2009

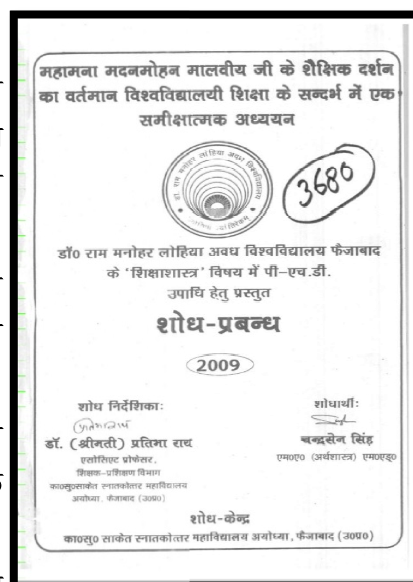
निर्देशक
डॉ० सूर्य प्रकाश त्रिपाठी
एम.एस-सी., एम.एड., पी-एच.डी.
रीडर एवं अध्यक्ष
शिक्षक-शिक्षा विभाग
मुनीश्वर दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय
प्रतापगढ़ (उ०प्र०)

शोधार्थी
अतुल कुमार त्रिपाठी
एम.ए., एम.एड.

- शिक्षण संस्थाओं को दान में ग्राम भी प्राप्त होते थे नालन्दा ताम्रपत्र मेंशासकों द्वारा अनेक ऐसे ग्रामदानों का उल्लेख है जिनकी आय से विद्यार्थियों केभोजन, वस्त्र और औषधि की आपूर्ति की जाती थी। इत्सिंग के उल्लेख

से ज्ञात होताहै कि नालन्दा बिहार के पास पर्याप्त कृषि भूमि व बाग थे हवेन्त्सांग के अनुसारनालन्दा के पास दान में प्राप्त सौ ग्राम थे।

3. **चन्द्रसेन सिंह (2009)** ने 'महामना मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान विश्वविद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन' किया। इनके निष्कर्ष इस प्रकार हैं—


महामना मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान विश्वविद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन

3680

डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद के 'शिक्षाशास्त्र' विषय में पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2009

शोध निर्देशिका:
डॉ. (श्रीमती) प्रतिभा राय
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षक–प्रशिक्षण विभाग
का०सु०साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अयोध्या, फैजाबाद (उ०प्र०)

शोधार्थी:
चन्द्रसेन सिंह
एम०ए० (अर्थशास्त्र) एम०एड०

शोध-केन्द्र
का०सु० साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या, फैजाबाद (उ०प्र०)

- पुरुषों में स्त्रियोचित और स्त्रियों में पुरुषोचित गुणों के विकास के लिए सह-शिक्षा व्यवस्था को आवश्यक मानते थे।
- पंडित मानवीय जी ने देश के कायाकल्प के लिए प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक और लघु उद्योग की शिक्षा से लेकर भारी उद्योग तक की शिक्षा पर काफी गंभीरता से चिंतन किया।
- किसी अर्थ में लड़कियों की शिक्षा लड़कों की शिक्षा से भी अधिक आवश्यक है, समाज के आधे भाग को ज्ञान की ज्योति से वंचित रखना बहुत दुःखदाई बात है।
- आज बेरोजगारी का प्रमुख कारण है कि हमारे विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों की शिक्षा नहीं देते. उनकी शिक्षा अर्थपरक नहीं है।
- इस वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि बीस वर्ष की शिक्षा के बाद भी भारतीय नवयुवक अपना, अपने स्त्री-बच्चों तथा निर्धन माता-पिता के निर्वाह के लिए कुछ नहीं कर पाता।
- प्रत्येक जिले के, कम से कम प्रत्येक कमीश्नरी में ऐसी माध्यमिक स्तर की औद्योगिक शिक्षा-संस्थाएँ खोली जायें जिनमे बुनाई, रंगाई, धुलाई, वस्त्र छपाई, लोहारी, बढ़ईगिरी, मीनाकारी आदि के शिक्षण और प्रशिक्षण का समुचित प्रबंध हो।

4. **अजीत कुमार (2011)**ने 'शंकराचार्य के दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यों एवं विचारों का वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन' किया। इनके निष्कर्ष इस प्रकार हैं—


"शंकराचार्य के दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यों एवं विचारों का वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता"

3507

डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से शिक्षाशास्त्र विषय में पी–एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध
2011

शोध निर्देशक
डॉ० हवलदार सिंह यादव
एम०ए०, एम०एड०
पी–एच०डी०(संस्कृत एवं शिक्षाशास्त्र)
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग
एम०एम०एम० पी०जी० कालेज, कालाकाँकर, प्रतापगढ़ (उ०प्र०)

शोधकर्ता
अजीत कुमार
एम०ए०, एम०एड०

शिक्षक–शिक्षा विभाग
मदनमोहन मालवीय पी०जी० कालेज, कालाकाँकर,
प्रतापगढ़ (उ०प्र०)

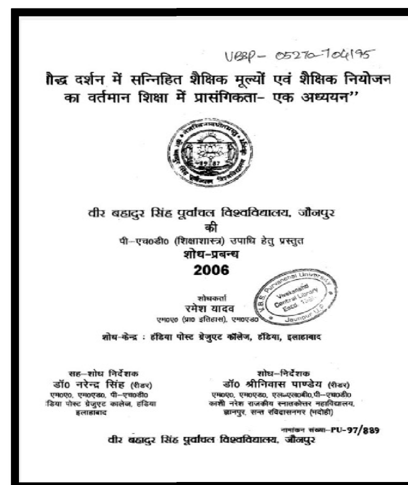
- वर्तमान समय में प्रचलित धर्म का स्वरूप व्यक्ति के दृष्टिकोण को संकुचित और सम्प्रदायवादी बना दिया है। आज मनुष्य अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को भूल चुका है। इसी का परिणाम है कि आज समस्त विश्व आतंकवाद, हिंसा, तनाव आदि दोषों के गाल का ग्रास बना है। अतएव शंकराचार्य के सार्वभौमिक धार्मिक मूल्यों को वर्तमान शिक्षा में स्थान देकर उनके प्रति व्यक्ति को निष्ठावान बनाकर लोगों के आधार विचार में परिवर्तन किया जा सकता है। शंकर द्वारा निरूपित धार्मिक मूल्य किसी विशेष सम्प्रदाय से सम्बन्धित नहीं है बल्कि सभी धर्मों का मूल होने के कारण वर्तमान प्रजातंत्रीय शिक्षा में भी शामिल किया जाना चाहिए। जिससे व्यक्ति के

हृदय पक्ष को सबल बनाया जा सके। क्योंकि ये धार्मिक मूल्य मानव एवं मानवता को स्थिर करने वाले अग्रगामी, मोक्ष प्रदायी एवं मनुष्य की रक्षा करने वाले हैं। धार्मिक मूल्यों के अभाव के कारण ही वर्तमान समय में भ्रष्टाचार एवं अन्य समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। शंकराचार्य ने मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के अन्तर्गत अभय, सत्वसंशुद्धि, दान, इन्द्रियों का संयम, ज्ञानयोग, व्यवस्थित यज्ञ, स्वाध्याय, तप आर्जव, अहिंसा, सत्य, अक्रोध त्याग, शांति, अपेशुन निर्लोभ, मार्दव, अचपलता, तेज, क्षमा, घृति, अद्रोह आदि मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। शंकर इन मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति को नैतिक एवं चारित्रिक रूप से पुष्ट करके एक प्रगतिशील आदर्श मानव समाज के स्थापना की संकल्पना किये हैं सम्प्रति इन मूल्यों की उपेक्षा हो रही है।

- वर्तमान समय में अपनाये जा रहे मूल्यों ने व्यक्ति को एक बेजान यंत्र बना दिया है, उसकी हृदय की संवेदनाएँ मृद्भांड हो चुकी है, यह मानवता को भूल चुका है, नैतिक एवं चारित्रिक रूप से पतित हो चुका है। जिसका परिणाम है कि आज समाज में सर्वत्र स्वार्थ एवं भय व्याप्त है मानव हिंसक पशु के रूप में विचरण कर रहे हैं जाति-पाति, सम्प्रदाय एवं क्षेत्रादि के नाम पर भ्रष्टाचार को प्रश्रय दिया जा रहा है। व्यक्तिवादी प्रवृत्ति ने अनेक बुराइयों को जन्म दिया है। मानवीय मूल्यों के अभाव के कारण ही वर्तमान भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद की समस्याएं उत्पन्न हुई है। आज व्यक्ति में मानवीय मूल्यों को दृढ़ करने की आवश्यकता है अतएव शंकराचार्य द्वारा निरूपित मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को वर्तमान शिक्षा में प्रमुख स्थानदेकर व्यक्ति को राष्ट्रीय विकास के एक प्रमुख अंग के रूप में विकसित किया जा सकता है। शंकराचार्य ने सामाजिक मूल्यों के अन्तगत पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) की प्राप्ति, कर्म, स्वधर्म पालन, प्रायश्चित, मित्रता, समता, उदासीनता (निष्पक्षता) अकृपणता, जाति-पाति का खण्डन तथा गुरू को महत्व आदि मूल्यों को प्रमुख स्थान दिया है। इन मूल्यों के पालन से व्यक्ति स्वतः त्याग, सहयोग, मित्रता, निःस्वार्थ भावादि, सामाजिक मूल्यों से समृद्ध होकर व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के आदर्श दृष्टिकोण का विकास करता है।

5. रमेश यादव(2006) ने 'बौद्धदर्शन में सन्निहित शैक्षिक मूल्यों एवं शैक्षिक नियोजन का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता एक अध्ययन का अध्ययन' किया गया। इनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

- बौद्ध शिक्षा दर्शन में उपरोक्त तत्वों पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है। यदि वर्तमान प्रारम्भिक शिक्षा में भी इसे अपनाया जाय तो सभ्य समाज की संकल्पना संभव हो सकती है और मनुष्य के इस विश्वास को बल मिलेगा कि वह अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकता है।



UBSP- 05270-T04195

बौद्ध दर्शन में सन्निहित शैक्षिक मूल्यों एवं शैक्षिक नियोजन का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता- एक अध्ययन"

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

की

पी–एच०डी० (शिक्षाशास्त्र) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

2006

शोधकर्ता

रमेश यादव

एम०ए० (प्रा० इतिहास), एम०एड०

शोध-केन्द्र : हंडिया पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, हंडिया, इलाहाबाद

सह–शोध निर्देशक	शोध–निर्देशक
डॉ0 नरेन्द्र सिंह (रीडर)	डॉ0 श्रीनिवास पाण्डेय (रीडर)
एम०ए०, एम०एड०, पी–एच०डी०	एम०ए०, एम०एड०, एल–एल०बी०,पी–एच०डी०
हंडिया पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, हंडिया इलाहाबाद	काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, सन्त रविदासनगर (भदोही)

नामांकन संख्या–PU-97/889

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

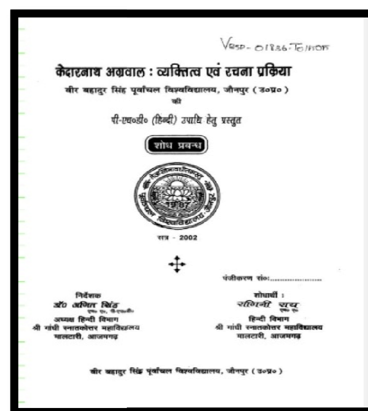
- प्रारंभिक शिक्षा की समाप्ति के उपरान्त विद्यार्थी अपेक्षाकृत एक बड़े विद्यालयी परिवेश के सम्पर्क में आता है। विद्यार्थी की यह अवस्था ऐसी होती है जिसमें प्राप्त अनुभव उसके भावी जीवन की दिशा निर्धारण में अधिक प्रभावी होते हैं। अतः माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी में शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और सौन्दर्य परक शक्तियों को विकसित करना चाहिए।उसमें वैज्ञानिक प्रवृत्ति तथा लोकतांत्रिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के साथ-साथ ऐसी भावना का उदय करना चाहिए जिससे वह अपने राष्ट्र पर गर्व कर सके तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की वृद्धि में सहायक हो।

- माध्यमिक शिक्षा जहाँ एक ओर प्रारम्भिक तथा उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है, वहीं दूसरी ओर रोजगार परक शिक्षा का टर्मिनल भी है। अतः इसमें रोजगार परक पाठ्यक्रम का समावेश किया जाना आवश्यक है।

इस स्तर पर राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास हेतु पाठ्यक्रम का नियोजन तथा पाठ्यपुस्तकों का निर्माण इस प्रकार किया जाय जिसमें विद्यार्थी को देश की सांस्कृतिक विरासत, अन्य प्रदेशों की भाषा का ज्ञान, क्लासिकी भाषाओं का ज्ञान, सामाजिक स्थिति, आर्थिक विकास की सम्यक जानकारी हो तथा सर्वधर्म समभाव, सहिष्णुता एवं दूसरों के गुणों को पहचानने की शक्ति का विकास हो, महिला और पुरुष के एक दूसरे के प्रति प्रश्नगत दृष्टिकोण में परिवर्तन हो, जिससे समता की भावना का विकास हो बौद्ध शिक्षा के पाठ्यक्रम में ये समस्त विशेषताएं विद्यमान थीं। पाठ्यक्रम व्यवसाय परक तो था ही साथ ही छात्रों के सभी धर्मों तथा दर्शनों की शिक्षा दी जाती थी। छात्र-छात्राओं के पाठ्यक्रम में कोई अन्तर न था।

6. **रागिनी राय (2002)** ने 'केदारनाथ अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं रचना प्रक्रिया प्रगतिवाद का अध्ययन' किया इनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

- बहुत कम उम्र से कवि सम्मेलनों में इनका आना-जाना आरम्भ हो गया था। इनके साहित्यिक प्रेरणा के स्रोत अयोध्या सिंह उपाध्याय, पन्त और निराला जैसे कवि ही थे।



VBSP-01836-TE/HON

केदारनाथ अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं रचना प्रक्रिया

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)

की

पी-एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

सत्र - 2002

पंजीकरण सं०:....................

निर्देशक
डॉ० अनिल सिंह
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
श्री गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मालटारी, आजमगढ़

शोधार्थी :
रागिनी राय
हिन्दी विभाग
श्री गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मालटारी, आजमगढ़

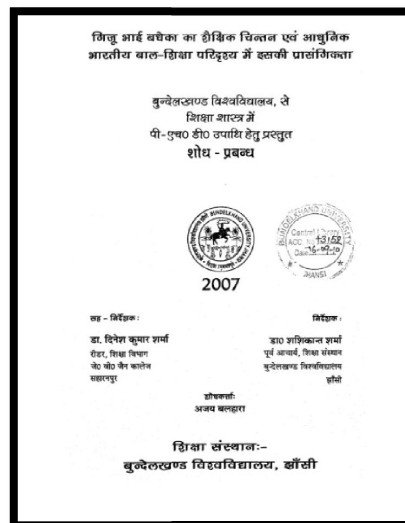
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)

- केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में साम्यवाद का प्रचार तो अधिक है परन्तु साहित्य के उच्च मूल्यों को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। रचनाओं में सहज प्रभाव है। वैचारिक शुष्कता का अभाव है। अन्य प्रगतिवादी कवियो की भाँति आपने भी लाल झंडा, रूस-चीन की प्रशस्ति के गीत उद्बोधन गीत लिखें है।
- 'नींद के बादल' कृति इनके छायावादी कवि रूप का दर्शन कराती है। इसका प्रकाशन 'युग की गंगा' के बाद हुआ था। इस संग्रह की रचनाओं में प्रणय की भावनाएं है। काव्य की प्रारम्भिक प्रेरणा ने भी प्रणय दीप्ति दी है। कवि ने स्वीकार किया है कि इस संग्रह में वैयक्तिक्ता अधिक है। परन्तु यहीं से उनके काव्य में विकास आया है। कविताओं में स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा के तमाम उच्छृंखलता नहीं मिलता वह स्वस्थ और निश्चल हृदय का परिचय देती हैं। प्रणय सम्बन्धी अपने भावों विचारों और कल्पनाशों को काव्य में पूर्ण सत्यता के साथ प्रकट करके कवि ने विचारों में भी सच्चाई का बोध कराया है।
- केदार नाथ अग्रवाल मूलतः कवि है। ऐसे कवि जिन्होंने गद्य के क्षेत्र में भी अच्छा कार्य किया है। वे अपनी रचना के लिए और उसकी समस्याओं के समाधान के लिए आलोचनात्मक प्रक्रिया में आते-जाते रहे हैं।

7. **अजय बलहारा (2007)** ने 'गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन' किया, इनके निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

- गिजू भाई का मत है कि शिक्षा व्यवस्था पर विचार करते समय क्या पढ़ाना? किस लिए पढ़ाना? और कैसे पढ़ाना? इन तीनों प्रश्नों पर चिंतन आवश्यक है वे मानते हैं कि मनुष्य को शिक्षा देने की शुरूआत करने से पूर्व ही उसमें अनेक प्रकार के संस्कार मौजूद रहते है। वह पूर्व जन्मों के संस्कार, समष्टिगत उपलब्धियों, पूर्वजों का उत्तराधिकार, गर्भावस्था के प्रभाव तथा समाज ववातावरण के प्रभावों से जनित संस्कार लेकर विद्यालय में प्रवेश करता है। शिक्षा देते समय इस सम्पूर्ण स्थिति को ध्यान रखा जाना चाहिए। शिक्षा मानव की स्वाभाविकता की रक्षा करने वाली तथा उसके स्वभाव को उच्चगामी बनाने वाली हो। गिजूभाई कीदृष्टि में शिक्षा जीवन-व्यापी प्रक्रिया है। इसका उद्गम मानव के भीतर से हुआ है। शिक्षा विकास है। विकास की आधार शिला है अनुभव, अनुभव स्वतंत्र क्रिया में निहित है। मार्ग के अवरोधकों को दूर करने तथा मानव के सम्मुख अपने जीवन लक्ष्य को सिद्ध करने की अनुकूलता जुटाना ही सच्ची शिक्षा है।

- गिजु भाई का मत है कि शिक्षा की प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु बालक है। शिक्षा के द्वारा उसके विकास के अनुकूल परिस्थितियाँ वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए। बालक को शारीरिक, मानसिक व हार्दिक इन तीनों वृत्तियों का सृजनात्मक पोषण ही शिक्षा का कार्य है।



गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, से
शिक्षा शास्त्र में
पी-एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध - प्रबन्ध

2007

सह - निर्देशक :
डा. दिनेश कुमार शर्मा
रीडर, शिक्षा विभाग
जे0 वी0 जैन कालेज
सहारनपुर

निर्देशक :
डा0 शशिकान्त शर्मा
पूर्व आचार्य, शिक्षा संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झाँसी

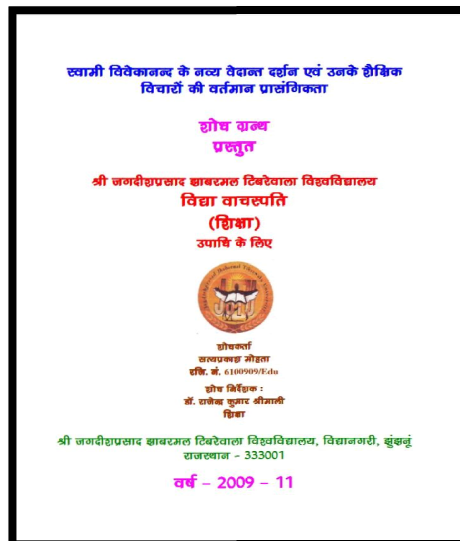
शोधकर्ता:
अजय बलहारा

शिक्षा संस्थान:-
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

- गिजू भाई शिक्षा को अंतस्थ शक्तियों के प्रकटीकरण व विकास को प्रक्रिया भी मानते हैं। सभी के आंतरिक रुझानों को पूर्णरुपेण विकसित कर सके, इस हेतु वांछनीय वातावरण वसाधन उपलब्ध कराना भी शिक्षा है गिजू भाई शिक्षा को स्वातंत्र्य व स्वयं स्फूर्ति के साधन के रूप में देखते हैं। बुद्धि को स्वतंत्र, विवेक पूर्ण व तार्किक चिंतन में सक्षम बनाने वाली शिक्षा ही उनको दृष्टि करती है, वही शिक्षा प्राणवान है। शिक्षा सच्चे मानव का विकास करने वाली हो, ऐसा मानव परानुभूति, सहिष्णुता, मैत्रीभाव, सेवाभाव, प्रेम, समानता, कल्पनाशीलता, औदार्य तथा सद्-असद्विवेक से युक्त हो।

8. सत्यप्रकाश मोहता (2009-11) ने 'स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन' किया, इनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं—

- शिक्षा किसी समाज का सर्वोच्च सकारात्मक पक्ष है। शिक्षा वह तत्व है जो मानव के ज्ञान का अग्रिम पीढ़ी में सम्प्रेषण करता है। मानव के ज्ञान के दो पक्ष होते है अनुभव जन्म ज्ञान तथा स्मृतिजन्य ज्ञान अनुभव मनुष्य के व्यक्तिगत होते हैं जबकि स्मृतियों से तात्पर्य विविध शास्त्रों एवं गुरुओं के माध्यम से प्राप्त ज्ञान है इन दोनों का अग्रिम पीढ़ी में समुचित एवं योग्य सम्प्रेषण ही शिक्षा का उद्देश्य है शिक्षा को भारतीय ज्ञान परम्परा में विशेष स्थान प्राप्त है।



स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

शोध ग्रन्थ
प्रस्तुत

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय
विद्या वाचस्पति
(शिक्षा)
उपाधि के लिए

शोधकर्ता
सत्यप्रकाश मोहता
रजि. नं. 6100909/Edu

शोध निर्देशक :
डॉ. राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शिक्षा

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं
राजस्थान - 333001

वर्ष – 2009 – 11

- ज्ञान के मूल स्रोत, स्वरूप, वेदों के अध्ययन एवं अर्थबोध के लिए अनिवार्य वेदांगों में शिक्षा को प्रथम स्थान दिया गया है वेदांग के रूप शिक्षा का तात्पर्य है जहां पर उच्चारण निमित्त स्वर वर्ण आदि का उपदेश दिया जाए।
- शिक्षा का वर्तमान तात्पर्य है व्यक्ति को जीवन निर्वहन की कला सिखाना तथा उसके व्यक्तित्व का सार्थक विकास करना। उपनिषदों में भी शिक्षा का व्याख्यान है तैतिरीयोपनिषद में प्रथम वल्ली ही शिक्षावल्ली है जहा पर गुरू के मुख से अन्त: वासी को इहलोक और परलोक दोनों में उपदेय, उपेदष, उपदृष्ट है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या होना चाहिए यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रसंग है प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाते हुए उसके पुरुषार्थ को परिपूर्ण करते हुए उसकी सामर्थ्य को समर्थता प्रदान करते हुए परमपुरुषार्थ अर्थात मोक्ष या मुक्ति की प्राप्ति करना था। समस्त वैदिक साहित्य में विद्या एवं अविद्या के भेद को विशिष्ट रूप में रेखांकित किया गया है तदानुसार विद्या वह है जो मुक्ति का साधन है– सं विद्या या विमुक्तये। एतत् विपरीत जो मुक्ति के लिये न होकर बन्धनकारी हो वह अविद्या है परिवर्तीसाहित्यों में भी इस

आदर्श को ध्यान में रखा गया है इस दृष्टि से वह शिक्षा जो मात्र भौतिक पदार्थों का ज्ञान कराती है अथवा भौतिकता को ही बढ़ाती है वह अविद्या है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

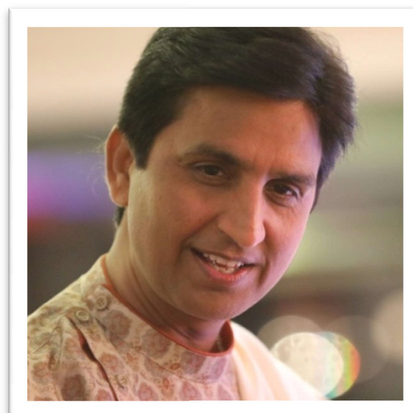
प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता के द्वारा पूर्व में किए गए कतिपय शोधों का समीक्षात्मक अध्ययन किया जिसमें डॉ० (श्रीमती) एनी बेसेण्ट के शिक्षा दर्शन, बौद्ध दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों का अध्ययन, महामना मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन, शंकराचार्य के दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यों एवं विचारों का वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का, बौद्ध दर्शन में सन्निहित शैक्षिक मूल्यों एवं शैक्षिक नियोजन का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता, केदारनाथ अग्रवाल: व्यक्तित्व एवं रचना प्रक्रिया प्रगतिवाद का अध्ययन किया गया है, गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता, स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात शोधकर्ता को प्रस्तुत समस्या "डॉ० कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान" से सम्बन्धित अध्ययन कहीं भी देखने को नहीं मिला। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघुशोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

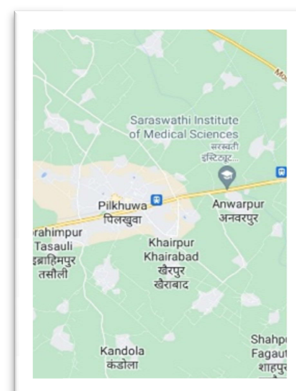
अध्याय तृतीय
डॉ० कुमार विश्वास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

भारत एक सांस्कृतिक प्रधान देश है। युगों-युगों से भारतीय संस्कृति विश्व में अपनी अमिट छाप बनाए हुए है। समस्त सृष्टि का जगतगुरु यह भारत वर्ष ऋषि, महर्षिओं एवं कवियों की पुण्य व कर्म भूमि रहा है। इन ऋषि-महर्षियों एवं कवियों ने भारतीय संस्कृति एवं आचरणात्मक नैतिक मूल्यों की अविरल धारा अनवरत प्रवाहित की, जिसमें अवगाहन कर अनेक जीवो ने अपने जीवन को सफल बनाया। यह पश्चिमी देश अपनी प्रारम्भिक स्थिति में थे, तब भारत अपने आत्मबल और आध्यात्मिक शक्तियों के द्वारा उनका मार्गदर्शन करता था। बड़े-बड़े महापुरुषों को जन्म देने वाली भारत माता सदैव से पूज्यनीय वन्दनीय रही है। सम्पूर्ण विश्व में इनका अपना एक विशिष्ट स्थान है। तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों में विदेशी ज्ञान पिपासु अध्ययन करने आया करते थे। ईसा मसीह ने स्वयं अपनी शिक्षा की विद्यापीठ भारत को ही बनाया था। कथनी करनी में साम्य रखने वाले भारतीय दार्शनिक एवं साधकों ने इस विश्व को अपने ज्ञानरूपी आलोक से आलोकित किया है। विकृति के परे सुकृति का जीवन प्रदान करने वाली वीर प्रसूती भारत माता ने विवेकानन्द, तिलक, दयानन्द और गाँधी जैसे युग दृष्टाओं, वाल्मीकि, कालिदास, कबीरदास, नानक जैसे सन्त कवियों, आचार्य चाणक्य,



भद्रबाहु जैसे महामना महापुरुषों, भगवान महावीर, बुद्ध, राम जैसे महान आत्माओं व साधकों को जन्म देती रही है। उन्हीं महापुरुषों एवं युग कवियों में महान कविराज, राजनीतिज्ञ, कुशल समाजसेवी, प्रखर वक्ता एवं प्रवक्ताके रूप में प्रो० डॉक्टर कुमार विश्वास का भी अद्वितीय स्थान है। **कुमार विश्वास** एक भारतीय हिन्दी कवि, वक्ता और सामाजिक-राजनैतिक कार्यकर्ता हैं। वे आम आदमी पार्टी के नेता रह चुके हैं। उनका मूल नाम **विश्वास कुमार शर्मा** है। वे युवाओं के अत्यन्त प्रिय कवि हैं। हिंदी को भारत विश्व तक पुनः स्थापित करने वाले कुमार विश्वास के कविता के मंचन, वाचन, गायन के साथ-साथ वकतव्य प्रतिभा के भी धनी हैं। मंच संचालन, गायन, काव्य वाचन, पाठन, लेखन आदि सब विधाओं में निपुण कुमार विश्वास हिंदी के प्राध्यापक भी रह चुके हैं।

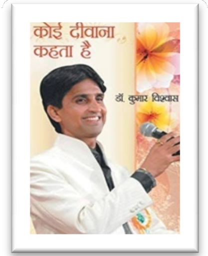






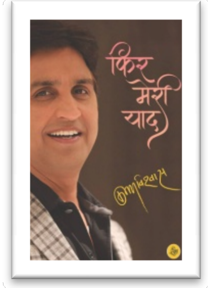
कुमार विश्वास का जन्म 10 फ़रवरी (वसंत पंचमी), 1970 को पिअखुआ, ग़ाज़ियाबाद (07 अक्टूबर 2011 से हापुड़ जिले में परिवर्तित। चार भाईयों और एक बहन में सबसे छोटे कुमार विश्वास ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा लाला गंगा सहाय स्कूल, पिलखुआ में प्राप्त की। उनके पिता **डॉ चन्द्रपाल शर्मा,** आर एस एस डिग्री कालेज चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (मेरठ से सम्बद्ध), पिलखुआ में प्रवक्ता रहे। उनकी माता **श्रीमती रमा शर्मा गृहिणी** हैं। राजपूताना रेजिमेंट इंटर कालेज से बारहवीं में उनके उत्तीर्ण होने के बाद उनके पिता उन्हें इंजीनियर बनाना (अभियंता)

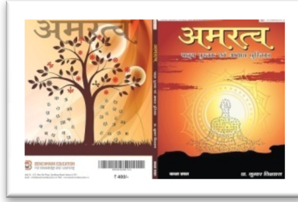
चाहते थे। डा कुमार विश्वास का मन मशीनों की पढाई में नहीं रमा, और उन्होंने बीच में ही वह पढाई छोड़ दी। साहित्य के क्षेत्र में आगे बढने के ख्याल से उन्होंने स्नातक और फिर हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर किया, जिसमें उन्होंने स्वर्ण–पदक प्राप्त किया। तत्पश्चात उन्होंने किया। उनके इस विषय पर पीएचडी प्राप्त "कौरवी लोकगीतों में लोकचेतना"शोध–कार्य को 2001 में पुरस्कृत भी किया गया। कलावादी माँ का लयात्मक लोकज्ञान व प्राध्यापकपिता का अनुशासन साथ–साथ मिले। इंजीनियरिंग से लेकर प्रादेशिक सेवा तक और कामू से लेकर कामशास्त्र तक, थोक में भटके, पर अटके



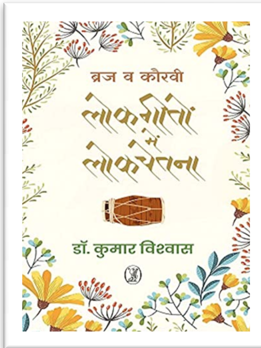


सिर्फ साहित्य पर, आईआईटी से लेकर आईटीआई तक और कुलपतियों से लेकर कुलियों तक,उनके चाहने वालों की फेहरिस्त भारत को लोकतांत्रिक समस्याओं जैसे विविध हुआ अंतहीन है। वे टीवी की रंगीन स्क्रीन से लेकर एफएम रेडियो के माइक्रो स्पीकर तक हर जगह सुनाई–दिखाई देते हैं। करोड़ों युवा उनसे प्रेरणा पाते हैं और साहित्य को विस्तार देने के सुपथ पर बढ़ते हैं। अब तक आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं— **'इक पगली लड़की के बिन'** (1996), **'कोई दीवाना कहता है'** (2007), **फिर मेरी याद** (2019) और





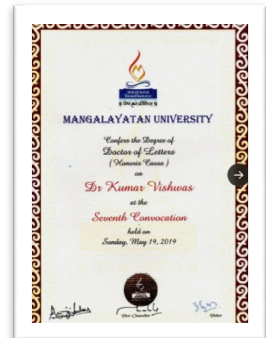
कक्षा 1 से 8 तक नयी शिक्षा नीति पर आधारित पाठ्यपुस्तक एवं अभ्यास के रूप में '**अमरत्व**' नामक पुस्तक बेंचमार्क एजुकेशन नॉलेज एंड लर्निंग के रूप में प्रकाशित किया है। राजपूताना रेजिमेंट इंटर कॉलेज से बारहवीं में उनके उत्तीर्ण होने के बाद उनके पिता उन्हें इंजीनियर (अभियंता) बनाना चाहते थे। डॉ. कुमार विश्वास का मन मशीनों की पढाई में नहीं रमा, और उन्होंने बीच में ही वह पढाई छोड़ दी।



साहित्य के क्षेत्र में आगे बढने के ख्याल से उन्होंने स्नातक और फिर हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर किया, जिसमें उन्होंने स्वर्ण–पदक प्राप्त किया। तत्पश्चात उन्होंने **"कौरवी लोकगीतों में लोकचेतना"** विषय पर पीएचडी प्राप्त किया। उनके इस शोध–कार्य को 2001 में पुरस्कृत भी किया गया



और इतना ही नहीं 20 मई 2019 को उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ में आयोजित मंगलायतन विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह में कुमार विश्वास जी को वहाँ के मुख्य अतिथि डॉक्टर विनय सहस्त्रबुद्धे जी द्वारा मानद **"डी०लिट्०"** की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनकी यह उपलब्धि उनके गौरव को और अधिक शिखर तक ले जाती है।



मात्र 24 वर्ष की उम्र में कुमार विश्वास हिंदी साहित्य के स्टेट प्रवक्ता बन चुके थे। पहली बार 1994 में राजस्थान के हिंदी साहित्य के रूप में अपनी सेवाएं आरम्भ की। कुछ वर्षो के बाद इन्होने आचार्य और हिंदी के प्राचार्य के रूप में पढ़ाने का भी कार्य किया। यदि आज कुमार विश्वास की कवि यात्रा को देखा जाए तो वे बेहद और सक्रिय साहित्यकार हैं। वे हिंदी पत्रिकओं के लिए लिखते हैं और अध्ययन भी करते हैं। कुमार विश्वास कविताओं के अतिरिक्त गीत और शायरी भी लिखते हैं। कई हिंदी सिनेमा की फिल्मों में इनके गानों को आजमाया जा चुका हैं। कुमार विश्वास ने दत्त की चाय गर्म हिंदी फिल्म में अभिनेता के रूप में अभिनय भी कर चुके हैं।

3.2 मंच



कवि–सम्मेलनों और मुशायरों के क्षेत्र में भी डॉ॰ विश्वास एक अग्रणी कवि हैं। वो अब तक हज़ारों कवि सम्मेलनों और मुशायरों में कविता–पाठ और संचालन कर चुके हैं। देश के सैकड़ों प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाओं में उनके एकल कार्यक्रम होते रहे हैं। इनमें आई आई टी खड़गपुर, आई आई टी बी एच यू, आई एस एम धनबाद, आई आई टी रूड़की, आई आई टी भुवनेश्वर, आई आई एम लखनऊ, एन आई टी जलंधर, एन आई टी त्रिचि, इत्यादि कई संस्थान शामिल हैं। कई कॉर्पोरेट कंपनियों में भी डॉ॰ विश्वास को अक्सर कविता–पाठ के लिए बुलाया जाता है।भारत के सैकड़ों छोटे–बड़े शहरों में कविता पाठ करने के अलावा उन्होंने कई अन्य देशों में भी अपनी काव्य–प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इनमें अमेरिका, दुबई, सिंगापुरमस्कट, अबू धाबी और नेपाल जैसे देश शामिल हैं।कुमार ने बेंचमार्क पब्लिकेशन के तहत कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के लिए अमरत्व नामक पाठ्यक्रम पुस्तक लिखी।



3.3 राजनीतिक जीवन

कुमार विश्वास अगस्त 2011 के दौरान जन लोकपाल आन्दोलन के लिए गठित टीम अन्ना के एक सक्रिय सदस्य रहे हैं। वे 26 नवम्बर 2012 को गठित आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं। कुमार विश्वास ने अमेठी से लोकसभा का चुनाव भी लड़ा, परन्तु हार गए। राजनीति से रूठे कवि कुमार विश्वास कहते हैं "सियासत में मेरा खोया या पाया हो नहीं सकता। सृजन का बीज हूँ मिट्टी में जाया हो नहीं सकता।" उनका कहना है कि 'राजनीति 10 साल 5 साल लेकिन कविता हजार साल।'





विश्वास 2005 से अरविंद केजरीवाल को जानते हैं और अन्ना हजारे के नेतृत्व वाले इंडिया अगेंस्ट करप्शन आंदोलन में शामिल हुए थे । इसके बाद, जैसे ही आंदोलन फीका पड़ गया और आज केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी के रूप में जाना जाता है, उन्हें इसकी राष्ट्रीय कार्यकारिणी का सदस्य बनने के लिए कहा गया।

3.4 कार्य और उपलब्धियाँ

कुमार विश्वास को श्रृंगार रस का कवि माना जाता है। उनके द्वारा लिखा काव्य संग्रह 'कोई दीवाना कहता है' युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय रहा। उन्होंने कई सुंदर कविताएं लिखी हैं जिनमे हिंदी कविता के नवरस मिलते हैं। उनके लिखे गीत कुछ फिल्मों आदि में भी उपयोग किये गए हैं। उन्होंने अपने से पूर्व में हुए महनीय कवियों को श्रद्धांजलि देते हुए 'तर्पण' नामक टीवी कार्यक्रम भी बनाया, जिसमे स्वयं विश्वास ने पुराने कवियों की कविताओं को अपना स्वर दिया है।विभिन्न पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपने के अलावा कुमार विश्वास की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं– 'इक पगली लड़की के बिन' (1996) और 'कोई दीवाना कहता है' (2007 और 2010 दो संस्करण में)। विख्यात लेखक

स्वर्गीय धर्मवीर भारती ने डॉ० विश्वास को इस पीढ़ी का सबसे ज़्यादा सम्भावनाओं वाला कवि कहा है। प्रथम श्रेणी के हिन्दी गीतकार 'नीरज' जी ने उन्हें 'निशा–नियामक' की संज्ञा दी है। मशहूर हास्य कवि डॉ० सुरेन्द्र शर्मा ने उन्हें इस पीढ़ी का एकमात्र आई एस ओ:2006 कवि कहा है। कुमार विश्वास ने 2018 हिंदी फिल्म परमाणु: द स्टोरी ऑफ पोखरण के लिए एक गीत डी दे जगह लिखा था।विश्वास आज तक टेलीविजन चैनल पर केवी सम्मेलन नामक एक कॉमेडी शो होस्ट करता है जिसका पहली बार प्रीमियर 29 सितंबर 2018 को हुआ था।उन्होंने अभिषेक बच्चन, यामी गौतम और निम्रत कौर अभिनीत फिल्म दसवीं के लिए संवाद लिखे। फिल्म 7 अप्रैल 2022 को ऑनलाइन रिलीज हुई थी और उसे समीक्षकों से मिली–जुली समीक्षा और दर्शकों का भरपूर प्यार मिला ।कुमार विश्वास को कई बड़े बड़े निमंत्रण भी मिले जिनमे 2014 का गूगल का निमंत्रण एक जाना माना निमंत्रण है। यह निमंत्रण स्वीकार करते हुए उन्होंने 2014 में गूगल के हेडक्वार्टर्स में लेक्चर भी दिया। एक नामित रियलिटी शो बिग बॉस द्वारा भी शो में शामिल होने का निमंत्रण मिला जिसमे किसी कारणवश उन्होंने हिस्सा नहीं लिया। विभिन्न पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपने के अलावा डा कुमार विश्वास की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं– 'इक पगली लड़की के बिन' (1996) और 'कोई दीवाना कहता है' (2007 और 2010 दो संस्करण में)। विख्यात लेखक स्वर्गीय धर्मवीर भारती ने डा विश्वास को इस पीढी का सबसे ज़्यादा सम्भावनाओं वाला कवि कहा है। प्रथम श्रेणी के हिन्दी गीतकार 'नीरज' जी ने उन्हें 'निशा–नियामक' की संज्ञा दी है। मशहूर हास्य कवि डा सुरेन्द्र शर्मा ने उन्हें इस पीढी का एकमात्र **ISO:2006** कवि कहा है। आधुनिक हिन्दी के साहित्यकार नीरज जी ने इन्हें निशा–नियामाक की उपमा दी है।



पुरस्कार/ उपलब्धियाँ

- डॉ० कुंवर बेचैन काव्य-सम्मान एवम पुरस्कार समिति द्वारा 1994 में 'काव्य-कुमार पुरस्कार'
- साहित्य भारती, उन्नाव द्वारा 2004 में 'डॉ० सुमन अलंकरण'
- 2006 में उन्हें हिंदी-उर्दू पुरस्कार समिति द्वारा साहित्य श्री पुरस्कार दिया गया था।
- 2010 में बंदायू में डॉ० उर्मिलेश जन चेतना समिति द्वारा डॉ० उर्मिलेश "गीत श्री" सम्मान दिया गया था।
- 20 मई 2019 को उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ में आयोजित मंगलायतन विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह में कुमार विश्वास जी को वहाँ के मुख्य अतिथि डॉक्टर विनय सहस्त्रबुद्धे जी द्वारा मानद "डी०लिट्०" की उपाधि से सम्मानित किया गया।



3.5 साहित्य सर्जना

साहित्य वही समृद्ध होता है जो समाज की समस्याओं और विसंगतियों को आवाज दे सके और एक साहित्यकार तभी सफल माना जाएगा जब उसकी रचनाओं में आमजन का स्वर समाहित हो। डॉ० कुमार विश्वास एक ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्होंने समाज के विभिन्न रंगों को साहित्य की अलग- अलग विधाओं में न केवल स्वयं बिखेरा है बल्कि शिक्षा जगत से जुड़े समाज की समझ रखने वाले तमाम शिक्षकों को लेखन की विभिन्न विधाओं में लिखने के लिए प्रेरित कर साहित्य को समृद्ध करने वाले सैकड़ों सृजन शिल्पी खड़े किये हैं।

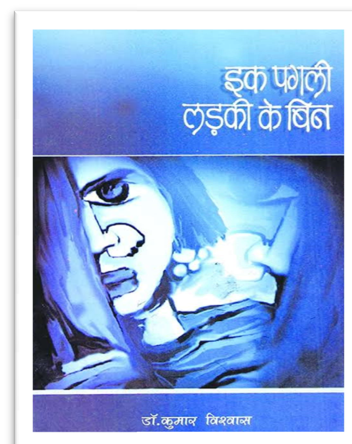
पेशे से शिक्षक, कवि, कुशल प्रेरक वक्ता तथा राजनीतिज्ञ होने के कारण आपके सम-सामयिक आलेखों व भाषणों में शिक्षा जगत एवं समाज की तमाम चुनौतियों को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत किया गया है और उनके लिए एक बेहतर समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। आप स्कूलों की सर्कस वाली और अध्यापकों की रिंग मास्टर वाली छवि से उबारकर विद्यालयों को आनन्दघर बनाने की वकालत करते हैं। आपने अपने लेख के माध्यम से शिक्षा में नवीन शोधों के साथ- साथ पुरातन परंपरा को अपनाने पर भी विशेष बल दिया है। तकनीकी के जमाने में पुस्तकों से दूर होते जा रहे समाज को पुस्तकों से जोड़ने पर बल देते हुए पुस्तक पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य किया है। आपका मानना है कि "संघर्ष जितना लंबा होगा सफलता उतनी ही शानदार होगी इसलिए जीवन में कभी भी संघर्ष से मुंह नहीं मोना चाहिए बल्कि डटकर सामना करना चाहिए। इंजीनियर डॉक्टर टीचर बनना बाई प्रोडक्ट है लेकिन उससे भी कहीं ज्यादा जरूरी है एक अच्छा इंसान बनना और जीवन में हमेशा खुश रहना।"

आज कुमार विश्वास हिन्दी कविता मंच के सबसे व्यस्ततम कवियों में से एक हैं। उन्होंने अब तक हज़ारों कवि-सम्मेलनों में कविता पाठ किया है। साथ ही वह कई पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखते हैं। विश्वास मंच के कवि होने के साथ साथ हिन्दी फ़िल्म इंडस्ट्री के गीतकार भी हैं। उनका मूल नाम विश्वास कुमार शर्मा है। वे युवाओं के अत्यन्त प्रिय कवि हैं। हिंदी को भारत विश्व तक पुनः स्थापित करने वाले कुमार विश्वास के कविता के मंचन, वाचन, गायन के साथ साथ वकतृत्व प्रतिभा के भी धनी हैं। मंच संचालन, गायन, काव्य वाचन, पाठन, लेखन आदि सब विधाओं में निपुण कुमार विश्वास हिंदी के प्राध्यापक भी रह चुके हैं।

साहित्य और समाज का बहुत गहरा नाता है। एक कवि इस समाज का ही अंग होता है। समाज का निर्माण लोगों से हुआ है। अतः एक कवि इसी समाज का अंग माना जाएगा। कवि समाज से थोड़ा-सा अलग होता है। वह समाज में व्याप्त असंगतियों से आहत और क्रोधित होता है। अतः वह रचनाओं का निर्माण करता है। इन्हीं रचनाओं के भंडार को साहित्य कहते हैं। एक कवि या लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य का सृजन करता है और समाज को नई दिशा देता है। कवि या लेखक का दायित्व होता है कि वह अपनी रचनाओं से समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करे और समाज में पुरानी सोच के स्थान पर नई सोच का विकास करे। समाज में कई प्रकार की कुरीतियाँ, परंपराएँ, विद्यमान हैं। ये परपंराएँ और कुरीतियाँ समय के साथ पुरानी पड़ती जा रही हैं और इसमें विसंगतियाँ विद्यमान हो जाती हैं। साहित्य के माध्यम से उन्हें हटाने तथा क्रांति लाने का प्रयास किया जाता है। हमारे कवियों, लेखकों ने जो कुछ भी लिखा है, वे साहित्य कहलाता है। साहित्य में हर तरह की रचनाएँ सम्मिलित होती हैं; वे चाहे फिर प्रेम, भक्ति, वीरता, सामाजिक-राजनीतिक बदलाव, उनमें हुई उथल-पुथल या व्याप्त विसंगतियाँ इत्यादि विषय हों। इस तरह से ये रचनाएँ ऐतिहासिक प्रमाण भी बन जाती हैं। आज डॉ० कुमार विश्वास जी की ढ़ेरों ऐसी रचनाएँ हैं जिनके माध्यम से उन्होंने समाज, राजनीति व विशेषकर युवाओं को सही दिशा देनें का पुरजोर प्रयास किया है।

3.5.1 काव्य संग्रह

एक पगली लड़की के बिन



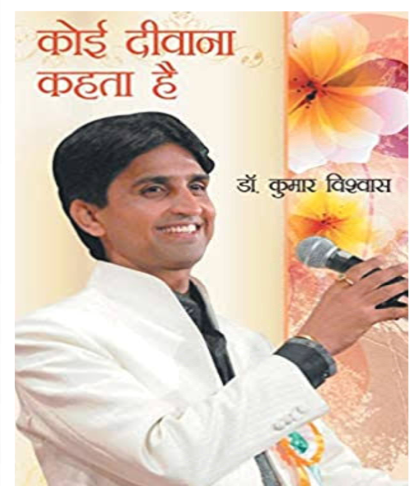
'एक पगली लड़की के बिन' नाम से उनका पहला कविता संग्रह प्रकाशित हुआ। 90 के दशक में 'एक पगली लड़की' ने ही कुमार विश्वास को शोहरत की ऊँचाइयों पर पहुँचाया। कुमार विश्वास के करीबी लोग बताते हैं कि 'एक पगली लड़की' असल मायनों में कुमार विश्वास के जीवन की सच्ची घटना पर आधारित है। हापुड़ में एक लड़की के प्यार में पागल होकर कुमार ने यह कविता लिखी थी। इस कविता में प्यार है तो प्यार से दूर होने की तड़प को नजदीक से महसूस किया जा सकता है।

मावस की काली रातों में, दिल का दरवाज़ा खुलता है,
जब दर्द की काली रातों में गम आंसुओं के संग घुलते हैं,
जब पिछवाड़े के कमरे में हम निपट अकेले होते हैं,
जब घड़ियां टिक-टिक चलती हैं, सब सोते हैं, हम रोते हैं,
जब बार-बार दोहराने से सारी यादें छूट जाती हैं,
जब ऊंच-नीच समझने में, माथे की नस दुख जाती है,
तब एक पगली लड़की के बिन जीना गद्दारी लगता है,
और उस पगली लड़की के बिन मरना भी भारी लगता है।

जब पोथे खाली होते हैं, जब हर्फ सवाली होते हैं,
जब गजलें रास नहीं आतें, अफसाने गाली होते हैं।
जब बसी फीकी धूप समेटें दिन जल्दी ढल जाता है,
जब सूरज का लश्कर छत से गलियों में देर से जाता है,
जब जल्दी घर जाने की इच्छा मन ही मन घुट जाती है,
जब कॉलेज से घर लाने वाली पहली बस छूट जाती है,
जब बेमन से खाना खाने पर माँ गुस्सा हो जाती है,
जब लाख मन करने पर भी पारो पढ़ने आ जाती है,
जब अपना हर मनचाहा काम कोई लाचारी लगता है,
तब एक पगली लड़की के बिन जीना गद्दारी लगता है,
और उस पगली लड़की के बिन मरना भी भारी लगता है।

कोई दीवाना कहता है

कुमार विश्वास द्वारा लिखी गई 'कोई दीवाना कहता है' एक कविता संग्रह है जिसमें उनकी अनेक प्रसिद्ध कविताएँ शामिल हैं। यह पुस्तक उनकी प्रशंसित रचनाओं में से एक है जो उनके व्यक्तिगत और सामाजिक भावनाओं को सुंदरता से प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में कुमार विश्वास ने प्रेम, जीवन, समाज, और मानवीय भावनाओं को व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से बयां किया है।



'कोई दीवाना कहता है' में उनकी कविताएँ अपने उदात्त भावों और गहरी भावनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। इस संग्रह में उन्होंने विविध विषयों पर अपनी दृष्टि प्रस्तुत की है, जैसे प्यार, विरह, समाजिक न्याय, और मानवीय संबंध। उनकी रचनाएँ व्याकुलता, प्रेम, और विचारशीलता के प्रतीक हैं और उनकी भाषा सरल और संवेदनशील है।

यह एक सराहनीय कविता संग्रह है जो पाठकों को उनकी सामाजिक और व्यक्तिगत भावनाओं की गहराई में ले जाता है। इसमें समस्त प्रेमी, कवि और साहित्य प्रेमियों के लिए कुछ न कुछ होता है।

कोई दीवाना कहता है कोई पागल समझता है,
मगर धरती की बेचैनी को बस बादल समझता है,
मैं तुझसे दूर कैसा हूँ तू मुझसे दूर कैसी है,
ये तेरा दिल समझता है या मेरा दिल समझता है।

मुहब्बत एक अहसासों की पावन सी कहानी है,
कभी कबिरा दीवाना था, कभी मीरा दीवानी है,
यहां सब लोग कहते हैं मेरी आँखों में आँसू है,
जो तुम समझते तो मोती है, जो ना समझे तो पानी है।


कोई दीवाना कहता है
कोई पागल समझता है
मगर धरती की बेचैनी को
बस बादल समझता है
मै तुझसे दूर कैसा हूं
तू मुझसे दूर कैसी है
ये तेरा दिल समझता है
या मेरा दिल समझता है

मुहब्बत एक अहसासों की
पावन सी कहानी है
कभी कबिरा दीवाना था,
कभी मीरा दीवानी है
यहां सब लोग कहते है
मेरी आँखों में आँसू है
जो तुम समझते तो मोती है,
जो ना समझे तो पानी है

कुमार विश्वास के गीत 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' के सांस्कृतिक दर्शन की काव्यगत अनिवार्यता का प्रतिपदान करते हैं। कुमार के गीतों में भावनाओं का जैसा सहज, कुंठाहीन प्रवाह है, कल्पनाओं का जैसा अभीष्ट वैचारिक विस्तार है तथा इस सामंजस्य के सृजन हेतु जैसा अद्भुत शिल्प व शब्दकोश है, वह उनके कवि के भविष्य के विषय में एक सुखद आश्वस्ति प्रदान करता है।

—स्व0 डॉ. धर्मवीर भारती

डॉ0 कुमार विश्वास उम्र के लिहाज से नये लेकिन काव्य–दृष्टि से खूबसूरत कवि हैं। उनके होने से मंच की रौनक बढ़ जाती है। वह सुन्दर आवाज़, निराले अंदाज और ऊँची परवाज़ के गीतकार, ग़ज़लकार और मंच पर कहकहे उगाते शब्दकार हैं। कविता के साथ उनके कविता सुनाने का ढंग भी श्रोताओं को नयी दुनिया में ले जाता है। गोपाल दास नीरज के बाद अगर कोई कवि, मंच की कसौटी पर खरा लगता है, तो वो नाम कुमार विश्वास के अलावा दूसरा नहीं हो सकता।

—निदा फाज़ली

डॉ0 कुमार विश्वास हमारे समय के ऐसे सामर्थ्यवान गीतकार हैं, जिन्हें भविष्य बड़े गर्व और गौरव से गुनगुनाएगा।

—गोपालदास 'नीरज'

आँखों में गज़ब का सम्मोहन, मंच पर जबरदस्त पकड़, गीतों में बाँध लेने वाली रसमयता, समय–अवसर के अनुकुल स्मरण–शक्ति और वाल्मीकि रामायण से लेकर राधेश्याम रामायण तक का विराट ज्ञानकोष, इन सब चीजों का एक साथ होना डॉ0 कुमार विश्वास कहलाता है। देशभर में तो उसका जादू सर चढ़कर बोलता ही है, मैंने विदेशों में भी ऐसे श्रोता देखे हैं, जिन्हें उसके पूरे–पूरे गीत याद हैं। बाजार की भाषा में कहे तो वो इस पीढ़ी का एकमात्र I.S.O. कवि है।

—हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा

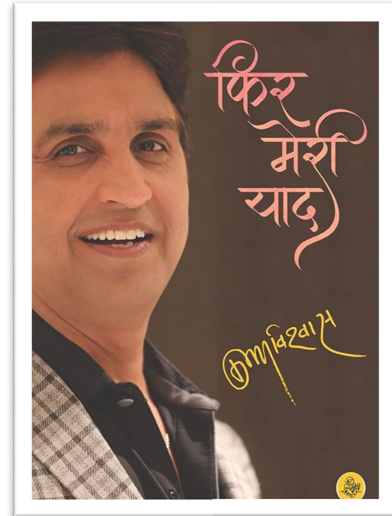
फिर मेरी याद

'फिर मेरी याद' एक प्रसिद्ध हिंदी कविता संग्रह है जो डॉ॰ कुमार विश्वास की के द्वारा लिखी गई है। यह पुस्तक उनकी संवेदनाओं, भावनाओं और व्यक्तिगत अनुभवों को व्यक्त करने के लिए जानी जाती है। 'फिर मेरी याद' में इन्होंने विभिन्न विषयों पर अपने भावनात्मक अनुभवों को उत्कृष्ट शब्दों में व्यक्त किया है। इस पुस्तक में प्यार, यात्रा, समाज, और मानवीय रिश्तों के विभिन्न पहलुओं को समझाया गया है। कुमार विश्वास की इस पुस्तक में उनकी विचारधारा और भावनाएं व्यक्तिगत स्तर पर पाठकों के साथ साझा की गई हैं। इस पुस्तक में उनकी सुन्दर भाषा, संवेदनशीलता, और भावुकता की प्रशंसा की गई है।

इस संग्रह की एक कविता निम्नलिखित है—

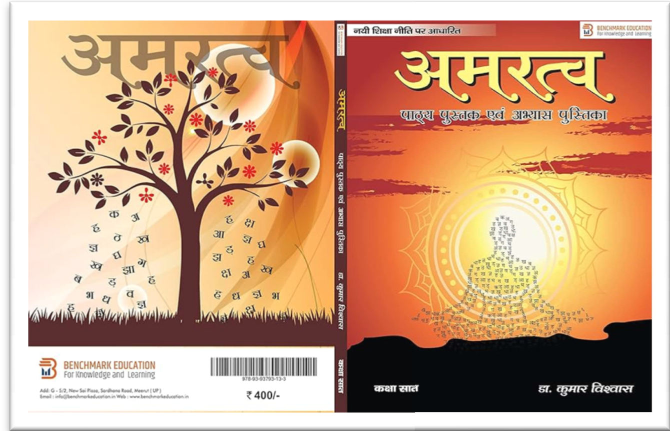
हम हैं देसी, हाँ मगर हर देश में छाए हैं हम
एशिया के हम परिंदे आसमाँ है हद हमारी
जानते हैं चाँद सूरज जिद हमारी, जद हमारी
हम वहीं, जिसने समंदर की लहर पर बाँध साधा
हम वही, जिनके लिए दिन-रात की उपजी न बाधा
हम, कि जो धरती को माता मान कर सम्मान देते
हम, कि जो चलने से पहले मंजिलें पहचान लेते
हम वही, जो शून्य में भी शून्य रचते हैं निरंतर
हम वही, जो रौशनी रखते हैं सबकी चौखटों पर
उन उजालों का यही पैगाम ले आए हैं हम
हम हैं देसी, हाँ मगर हर देश में छाए हैं हम

जिंदा रहने का असल अंदाज़ सिखलाया है हमने
जिंदगी है जिंदगी के बाद समझाया है हमने हमने
बतलाया कि क़ुदरत का असल अंदाज क्या है
रंग क्या है, रूप क्या है, महक क्या है, स्वाद क्या है
हमने दुनिया में मुहब्बत का असर जिंदा किया है
हमने नफ़रत को गले मिल-मिल के शर्मिंदा किया है
इन तरक़्क़ी के ख़ुदाओं ने तो घर को डर बनाया
इन बड़े खाली मकानों को हमीं ने घर बनाया
हम न आते तो तरक़्क़ी इस क़दर ना बोल पाती



अमरत्व

कुमार विश्वास की अमरत्व **पुस्तक** एक उपन्यास है जो जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाती है। कहानी दो भाइयों और उनकी दादी के इर्द-गिर्द घूमती है। अमरत्व का पढ़ने के बाद उनको जिज्ञासाएँ सबसे पहले आपको सम्बोधित करेंगी। उनका बाल सुलभ कौतूहल सबसे पहले आपसे सवाल पूछेगा। उन प्रश्नों से टकराते समय यह प्रयास करें कि उनकी जिज्ञासाएँ सदैव उतनी हो जाग्रत रहे। उनका उत्सुक कौतूहल उनके प्रश्न करने की आदत का सदा बनाए रखें। जिज्ञासु प्रवृत्ति को एक सकारात्मक दिशा देने में हम सबकी यह संयुक्त सफलता ही इस पुस्तक अमरत्व की वास्तविक सफलता को रेखांकित करती है।



3.5.2 टी०वी० काव्य धारावाहिक

तर्पण



'तर्पण' कवि और प्रस्तोता कुमार विश्वास द्वारा प्रस्तुत एक संगीतमय काव्य श्रृंखला है। यह उन कवियों की सराहना है जो अब मर चुके हैं, जिसे संगीत की पृष्ठभूमि में कुमार विश्वास द्वारा उनके कार्यों के संगीतबद्ध वाचन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। श्रृंखला की उत्पत्ति विश्वास द्वाराअपनी कविता "यह असंगति" के माध्यम से भारत भूषण को एक गीत समर्पित करने से हुई है। यह एबीपी न्यूज़ पर प्रसारित महाकवि श्रृंखला के बाद आया, जिसने हिंदी दर्शकों को आकर्षित किया। चित्रित कवियों में भारत भूषण, भवानी प्रसाद मिश्र, रामधारी सिंह दिनकर, दुष्यन्त कुमार, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, हरिवंश राय बच्चन, महादेवी वर्मा, बाबा नागार्जुन, जयशंकर प्रसाद, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिली शरण गुप्त, धर्मवीर भारती और सच्चिदानंद वात्स्यायन शामिल हैं। सीरीज के वीडियो वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म यूट्यूब पर उपलब्ध कराए गए हैं।

अध्याय चतुर्थ
चयनित शैक्षिक मूल्य परक काव्य रचनाएँ

4.1 विविध कविताएँ–

❖ फिर बसंत आना है

फिर बसंत आना है
तूफ़ानी लहरें हों
अम्बर के पहरे हों
पुरवा के दामन पर दाग़ बहुत गहरे हों
सागर के माँझी मत मन को तू हारना
जीवन के क्रम में जो खोया है, पाना है
पतझर का मतलब है फिर बसंत आना है

राजवंश रूठे तो
राजमुकुट टूटे तो
सीतापति-राघव से राजमहल छूटे तो
आशा मत हार, पार सागर के एक बार
पत्थर में प्राण फूँक, सेतु फिर बनाना है
पतझर का मतलब है फिर बसंत आना है

घर भर चाहे छोड़े
सूरज भी मुँह मोड़े
विदुर रहे मौन, छिने राज्य, स्वर्णरथ, घोड़े
माँ का बस प्यार, सार गीता का साथ रहे
पंचतत्व सौ पर है भारी, बतलाना है
जीवन का राजसूय यज्ञ फिर कराना है
पतझर का मतलब है, फिर बसंत आना है





भावार्थ: कुमार विश्वास नवल चेतना के प्रेम-परख एवं राष्ट्रवादी चेतना के रचनाकार हैं। वह नैराश्य के गहरे अंधेरे में आशा का दीप जलाने वाले साहित्य साधक हैं। प्रस्तुत कविता में वह मानव जीवन में दैनन्दिन आने वाले तमाम बाधाओं एवं चुनौतियों के सम्मुख हार मान जानें की बजाय उनसे जूझने और जीवन में नवल प्रभात लाने की पैरवी करते हैं।

प्रासंगिकता: कवि कुमार विश्वास नवल समाज रचना एवं समता ममता युक्त समाज की पुनर्संरचना के अभियान से उपजा एक क्रांतिकारी रचनाकार है। जो शोषित पीड़ित व्यक्ति के साथ खड़ा हो उसके मन में जीतने का विश्वास पैदा करता है।प्रस्तुत कविता में कवि का मंतव्य है कि पतझड़ प्रकृति का एक निश्चित उपक्रम है और पतझड़ के बाद ही बसंत का आगमन होता है इसलिए पतझड़ रुपी संकट और बाधाओं के सागर में जीवन नौका फंसी होने के बाद भी जीतने का उत्साह बनाए रखना है जो कुछ भी समय के संघर्ष में खोया है उसे अपने श्रम व पराक्रम से पुनः अर्जित करना है। कवि आगे कह रहे हैं कि जीवन में भले ही जीवन के इस संघर्ष में व्यक्ति का आश्रय स्थल छूटे, प्रकाश की कोई राह दिखाई

ना पड़े, सच का पक्ष रखने वाले भी मौन हो बैठ जाए लेकिन मां का स्नेहिल आशीष साथ है और गीता के उपदेशों का सार तत्व 'कर्म की कुशलता' में अभ्यास और विश्वास है तो अकेला व्यक्ति शताधिक बाधाओं से पार निकल जाता है। सर्जनात्मक दृष्टि से एक शिल्पी बेजान पत्थर से एक जीवंत प्रतिमा का निर्माण कर देता है ठीक उसी प्रकार यदि उत्साह एवं विश्वास हृदय में हो तो तमाम तूफानी चुनौतियों और पहरों के बीच भी व्यक्ति कर्म साधनारत रहते हुए विजय पताका फहराता है।

प्रस्तुत कविता की प्रासंगिकता वर्तमान समय में कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जब नवयुवा एवं शैक्षिक पीढ़ी निराशा,कुंठा के भंवर में फंस अपनी जीवन नौका स्वयं ही डुबाये दे रहे हैं।

❖ हो काल गति से परे चिरंतन

हो काल गति से परे चिरंतन
हो काल गति से परे चिरंतन,
अभी यहाँ थे अभी यही हो।
कभी धरा पर कभी गगन में,
कभी कहाँ थे कभी कहीं हो।
तुम्हारी राधा को भान है तुम,
सकल चराचर में हो समाये।
बस एक मेरा है भाग्य मोहन,
कि जिसमें होकर भी तुम नहीं हो।
न द्वारका में मिलें बिराजे,
बिरज की गलियों में भी नहीं हो।
न योगियों के हो ध्यान में तुम,
अहम जड़े ज्ञान में नहीं हो।
तुम्हें ये जग ढूँढता है मोहन,
मगर इसे ये खबर नहीं है।
बस एक मेरा है भाग्य मोहन,
अगर कहीं हो तो तुम यही



भावार्थ: प्रस्तुत कविता में कवि ने राधा और कृष्ण के परस्पर प्रेम एवं विश्वास के माध्यम से समाज को विश्वास के महत्व से परिचित कराया है। भगवान श्री कृष्ण को किसी स्थान विशेष मंदिर या कोई प्रतिमा भर में स्थित नहीं समझा जा सकता जिस प्रकार श्रीकृष्ण जगत के कण-कण में समाहित है, उसी प्रकार जीवन के प्रत्येक पल में विश्वास घुला-मिला होता है।

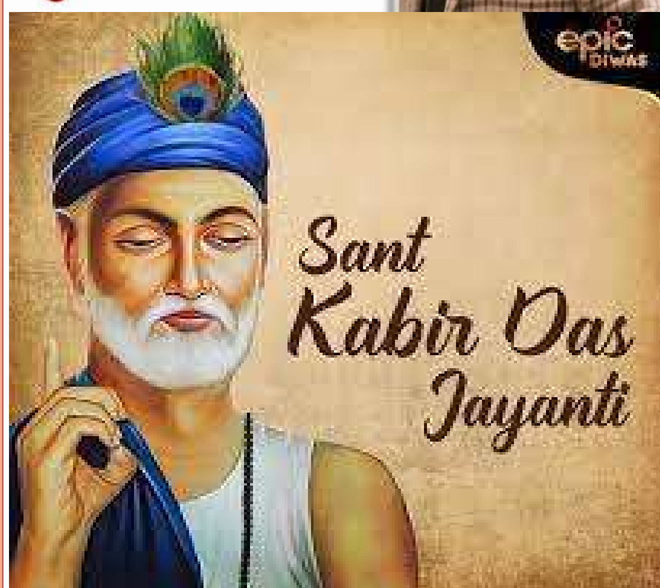
प्रासंगिकता: कवि श्री कृष्णा और राधा को प्रतीक मन कर कह रहे हैं कि श्री कृष्णा समय की गति से परे सदा सर्वदा विद्यमान रहने वाली चेतना है वह कभी यहां दिखाई देती है तो कभी अन्यत्र। कभी धरती पर तो कभी आकाश में, कभी वह कहीं हैं लेकिन राधा को अच्छी तरह पता है कि वह भगवान श्री कृष्णा कहां हैं। सकल जड़ चेतन में तुम्हारी सत्ता ही प्रतिविंबित है। तुम्हें ना द्वारिका में पाया जा सकता है और ना ही ब्रज की गलियों में तुम दिखाई पड़ते हो। तुम ना तो योगियों के ध्यान में हो और ना ही ज्ञानमार्गी साधना करने वाले ब्रह्म ज्ञानियों की पहुंच में हो। यह संसार तुम्हें तमाम स्थानों में खोजता है पर उसे यह समझ नहीं है कि श्री कृष्णा कहीं बाहर नहीं बल्कि स्वयं उसके अंदर अवस्थित हैं। परस्पर पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों तथा व्यक्तिक जीवन में हो रहे विश्वास के क्षरण के इस दौर में कुमार विश्वास की यह रचना अपनी प्रासंगिकता से मानव मन में विश्वास जगाती है। यह कविता हमारे समाज की शैक्षिक परिदृश्य को

भी एक प्रकाश स्तंभ की भांति दिशा दर्शन कराती है। विद्यार्थियों द्वारा आए दिन की जा रही आत्महत्याएं, प्रतियोगी परीक्षाओं मैं मिल रही असफलताओं से हार कर बैठ जाने के विरुद्ध यह रचना समस्त विद्यार्थियों में उत्साह एवं ऊर्जा का निर्झर बन सफलता के प्रति विश्वास का संगीत उत्पन्न करती है।

❖ वे बोले दरबार सजाओ

वे बोले दरबार सजाओ
वे बोले जयकार लगाओ
वे बोले हम जितना बोलें
तुम केवल उतना दोहराओ
वाणी पर इतना अंकुश कैसे सहते
हम कबीर के वंशज चुप कैसे रहते
वे बोले जो मार्ग चुना था
ठीक नही था बदल रहे हैं
मुक्तिवाही संकल्प गुना था
ठीक नही था बदल रहे हैं
हमसे जो जयघोष सुना था
ठीक नही था बदल रहे हैं
हम सबने जो ख्वाब बुना था
ठीक नहीं था बदल रहे हैं
इतने बदलावों में मौलिक क्या कहते
हम कबीर के वंशज चुप कैसे रहते
हमने कहा अभी मत बदलो
दुनिया की आशाएं हम हैं
वे बोले अब तो सत्ता की
वरदाई भाषाएँ हम हैं
हमने कहा वयर्थ मत बोलो
गूंगों की भाषाऐं हम हैं
वे बोले बस शोर मचाओ
इसी शोर से आए हम हैं
इतने मतभेदों में मन की क्या कहते
हम कबीर के वंशज चुप कैसे रहते
हमने कहा शत्रु से जूझो
थोड़े और वार तो सह लो
वे बोले ये राजनीति है
तुम भी इसे प्यार से सह लो
हमने कहा उठाओ मस्तक
खुलकर बोलो, खुलकर कह लो
बोले इस पर राजमुकुट है
जो भी चाहे जैसे सह लो
इस गीली ज्वाला मे हम कबतक बहते
हम कबीर के वंशज चुप कैसे रहते।







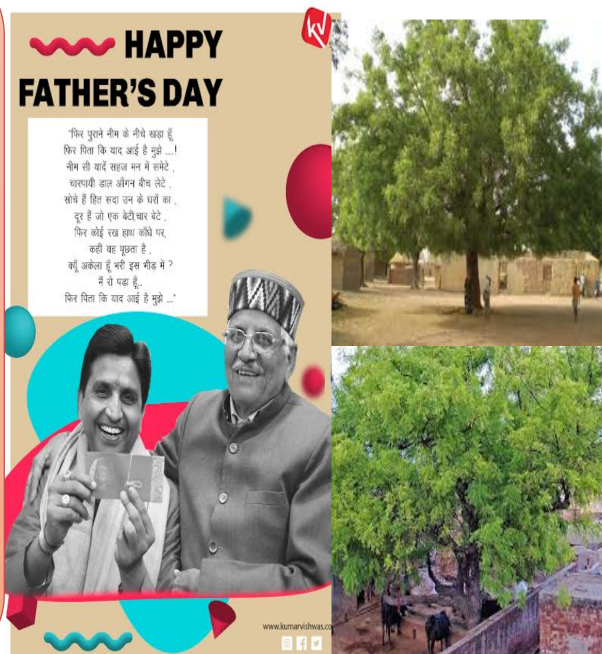
भावार्थ: प्रस्तुत रचना लोकतंत्र के अंदर प्रवाहित एक प्रकार की सामंतवादी सोच एवं दृष्टि की धारा की प्रतिनिधि रचना है। इसमें कई कह रहे हैं कि जब लोकतांत्रिक व्यवस्था में हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति एवं कर्म की स्वतंत्रता हो तब उसे अभिव्यक्ति और कर्म की पैरवी करने वाली व्यक्ति अधिकार प्राप्त हो जाने पर व्यवहार में सामंतवादी दिखाई पड़ते हैं वे न केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गला घोंटते हैं बल्कि अन्य से अपेक्षा रखते हैं कि वे वही बोले जो सत्ता बोल रही हो।

प्रासंगिकता: कवि कह रहे हैं कि अधिकार संपन्न अलोकतांत्रिक व्यक्ति अपने विरुद्ध की जा रही गतिविधियों में अंकुश लगाना चाहता है वह अपने तरीके से संपूर्ण व्यवस्था का संचालन करते हुए उन तमाम तौर तरीकों को शहर स्वीकार कर लेता है जिसके विरुद्ध वह अभियान के द्वारा जागरूकता पैदा कर सत्ता की चौखट तक पहुँचा है।
कवि का दायित्व समाज को न केवल जागरूक बनाए रखना है बल्कि सत्ता द्वारा आमजन के प्रति की जा रही तमाम बांधो एवं बेडियों को तोड़ना भी है। रचनाकार कबीर की परंपरा से स्वयं को जोड़ते हुए हमेशा सत्ता कि गलत कार्यो के विरुद्ध समाज जागरण का शंखनाद करता है। वह सत्ता के गलियारों की चमक और धन के तराजू पर लेखनी को नहीं धरता अर्थात निर्भर नहीं करता बल्कि असत्य और अनाचार के विरुद्ध कविता के औजारों से युद्ध करते हुए सत्य की स्थापना करता है।

प्रस्तुत कविता शैक्षिक महत्व की दृष्टि से बहुत उपयोगी है विद्यार्थी गुरु एवं आमजन को सर्वदा सत्य के साथ खड़ा रहकर सत्ता द्वारा किए जा रहे अनैतिक अनाचार एवं अमानवी व्यवहार के विरुद्ध जूझना चाहिए। यही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भी है कि बेहतर नागरिक तैयार हो। हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कविता एक समर्थवान पीढ़ी को तैयार करने में समर्थ है।

❖ पिता की याद

फिर पुराने नीम के नीचे खडा हूँ
फिर पिता की याद आई है मुझे
नीम सी यादें हृदय में चुप समेटे
चारपाई डाल आँगन बीच लेटे
सोचते हैं हित सदा उनके घरों का
दूर है जो एक बेटी चार बेटे
फिर कोई रख हाथ काँधे पर
कहीं यह पूछता है -
"क्यूँ अकेला हूँ भरी इस भीड़ में
" मैं रो पड़ा हूँ
फिर पिता की याद आई है मुझे
पुराने नीम के नीचे खड़ा हूँ।



भावार्थ: प्रस्तुत कविता 'पिता की याद' एक पिता एवं पुत्र के संबंध, एवं सहज विश्वास की परिचायक है। पिता उसे नीम के पेड़ की तरह है जो संतान को न केवल आरोग्य प्रदान करता है बल्कि शीतल सुखद छांव भी देता है। नीम के कड़वेपन में निरोगता का गुण समाहित है।

प्रासंगिकता: कवि कह रहे हैं कि संकट के वर्तमान समय में जब अनेक प्रकार के संकट जीवन की राहों में दिखते हों, जैसे– पारस्परिक आत्मीय संबंधों पर संकट, भाषाई बोलचाल संकट, सामाजिक सद्भाव में संकट के बीच यह कविता संकटों से उबरने का समाधान प्रस्तुत करती है।

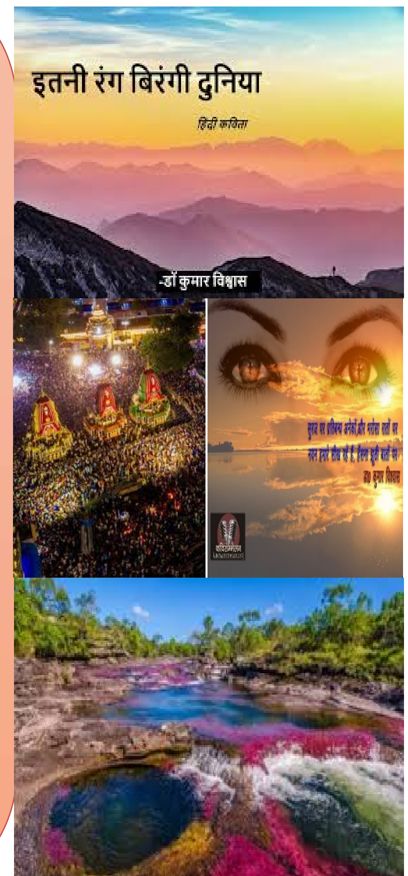
कवि कहते हैं कि नीम अपने कड़वेपन के लिए प्रसिद्ध है किंतु सुखप्रद शीतल छाँव एवं आरोग्य प्रदान करती है। वह अपने आश्रय में आए व्यक्तियों की चिंताएँ एवं तनावों को हर लेता है।

कवि कह रहा है कि पिता, नीम की तरह अपनी सन्तान को सुखद, छाँव देता है और तमाम चिताओं, दुविधाओं, परेशानियों से उबार भी लेता है। पिता ही है जो बचपन में कंधे के उपर बिठाकर घूमाता है और फिर जीवन के संकट काल में कंधे पर हाथ रखकर साहस भी बढ़ाता है।

प्रस्तुत कविता शैक्षिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण संदेश देती है कि पिता के प्रति पुत्र को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए उनका संबल बनना चाहिए।

❖ इतनी रंग बिरंगी दुनिया

इतनी रंग बिरंगी दुनिया, दो आँखों में कैसे आये,
हमसे पूछो इतने अनुभव, एक कंठ से कैसे गाये.
इतनी रंग बिरंगी दुनिया....
ऐसे उजले लोग मिले जो, अंदर से बेहद काले थे,
ऐसे चतुर मिले जो मन से सहज सरल भोले-भाले थे.
ऐसे धनी मिले जो, कंगालो से भी ज्यादा रीते थे,
ऐसे मिले फकीर, जो, सोने के घट में पानी पीते थे.
मिले परायेपन से अपने, अपनेपन से मिले पराये,
हमसे पूछो इतने अनुभव, एक कंठ से कैसे गाये.
इतनी रंग बिरंगी दुनिया, दो आँखों में कैसे आये.
जिनको जगत-विजेता समझा, मन के द्वारे हारे निकले,
जो हारे-हारे लगते थे, अंदर से ध्रुव- तारे निकले.
जिनको पतवारे सौंपी थी, वे भँवरो के सूदखोर थे,
जिनको भँवर समझ डरता था, आखिर वही किनारे निकले.
वो मंजिल तक कैसे पहुंचे?, जिनको रास्ता खुद भटकाए
हमसे पूछो इतने अनुभव, एक कंठ से कैसे गाये,
इतनी रंग बिरंगी दुनिया, दो आँखों में कैसे आये...



भावार्थ: प्रस्तुत कविता में कवि ने मानवीय व्यवहारों का सहज एवं विस्तृत चित्रण किया है। इन दो चर्म चक्षुओं एवं हृदय की अंतरपीड़ा से दुनिया की तमाम उतार चढ़ाव एवं मानव मन की गहराई तथा उथलापन को महसूस किया जा सकता है। कवि कह रहे हैं कि इतनी सारी विसंगतियों एवं विरोधाभासों को एक कवि कैसे व्यक्त कर सकता है। समाज में

उज्ज्वल चरित्र के रूप में प्रतिष्ठित व्यक्ति मन से कलुष स्वभाव वाले मिलें, वहीं चतुर चालाक दिखने वाले व्यक्ति बहुत ही सहज-सरल एवं भोले-भाले दिखाई दिए तो वहीं तमाम अमीरों का व्यवहार गरीबों से भी गया गुजरा दिखाई दिया। सामाजिक व्यवहार में भी रिश्ते नातों में परायापन मिला तो वहीं तमाम पराये(अनचीन्हे) लोग अपनेपन की आत्मीयता एवं प्रेम से मिले, जिनको विजेता समझा गया था वह स्वयं से हारे हुए मिले जिनको पराजित समझा था वे दृढ़ प्रतिज्ञ विजेता मिलें।

प्रासंगिकता: प्रस्तुत कविता मानव के व्यवहार परिवर्तन एवं उसके वास्तविक चरित्र को प्रदर्शित करती एक सशक्त रचना है। कवि कह रहे हैं कि इस रंग बदलती स्वार्थ केंद्रित दुनिया के विविध रंग-बिरंगी कार्य एवं व्यवहार को लिख पाना संभव नहीं है। पग-पग पर तमाम विरोधाभासों से परिचित हुआ। जिन व्यक्तियों को दयालु, सदाचारी, उपकारी व्यक्ति के रूप में सार्वजनिक जीवन में देखते रहें वही व्यक्ति व्यक्तिगत जीवन में कठोर, कदाचारी, स्वार्थी दिखाई दिए। वहीं निर्धन व्यक्ति की कुटियाओं में भरपूर प्रेम-स्नेह, सौहार्द मिला किंतु भव्य महलों में उपेक्षा, निराशा एवं तिरस्कार ही मिला। जग विजेता समझे जाने वाले व्यक्ति खुद को संयमित कर जीत नहीं सके और समाज में अलग-थलग पड़े व्यक्ति या बहुत उपलब्धियों से रहित व्यक्ति नैतिक दृष्टि से ध्रुव तारे के समान प्रकाश बिखेरते मिले। प्रस्तुत कविता का शैक्षिक निहितार्थ आँखें खोलने वाला एवं हृदय को ज्ञानात्मा से अन्तर्मन को झकझोरने वाला है। शैक्षिक दृष्टि से यह कविता व्यक्ति के विपरीत आचरणों की ओर संकेत करती है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी के लिए यह कविता सामाजिक समझ के दायरे का विस्तार करती है।

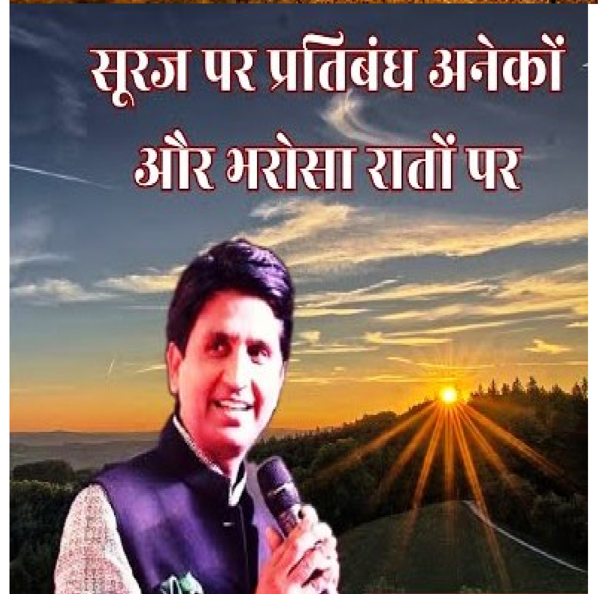
❖ सूरज पर प्रतिबंध अनेकों

सूरज पर प्रतिबंध अनेकों
और भरोसा रातों पर
नयन हमारे सीख रहे हैं
हँसना झूठी बातों पर

हमने जीवन की चौसर पर
दाँव लगाए आँसू वाले
कुछ लोगों ने हर पल, हर दिन
मौके देखे बदले पाले
हम शंकित सच पा अपने,
वे मुग्ध स्वयं की घातों पर
नयन हमारे सीख रहे हैं
हँसना झूठी बातों पर

हम तक आकर लौट गई हैं
मौसम की बेशर्म कृपाएँ
हमने सेहरे के संग बाँधी
अपनी सब मासूम खताएँ
हमने कभी न रखा स्वयं को
अवसर के अनुपातों पर
नयन हमारे सीख रहे हैं
हँसना झूठी बातों पर।





भावार्थ: प्रस्तुत कविता में कवि परस्पर विरोधी बातों का संकेत करते हुए समझ का नवल वितान(चाँदनी) तानती है। अंधकार को कोसने वाले लोग प्रकाश के केंद्र सूरज को प्रतिबंधित कर रात्रि की आराधना करते हैं अर्थात अवगुणों को खोजने वाले लोग गुणी व्यक्ति को संबल एवं मान प्रतिष्ठा ना देकर अवगुणीं लोगों की सराहना करते मिलते हैं। जीवन के कर्म चौंसर (दाँव) पर परिश्रम, संकल्प एवं सतत अभ्यास की बजाय शिकायतों उलाहनों और असफलताओं का रोना-रोने वाले लोग मिलते हैं। कवि का आशय है कि व्यक्ति को अवसरों को बुलाने, भुनाने के लिए परिश्रम से आगे बढ़ना चाहिए।

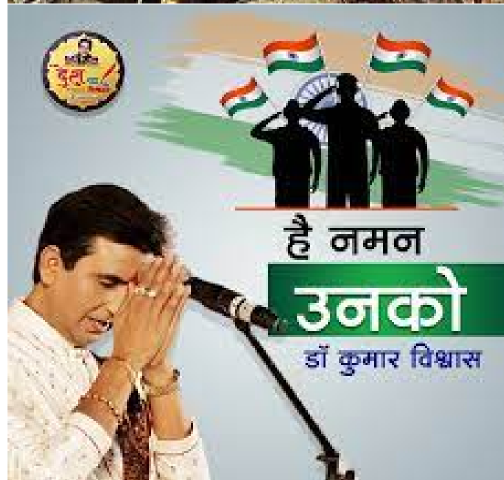
प्रासंगिकता: प्रस्तुत कविता के प्रासंगिकता पर कुछ महत्वपूर्ण बातें रखी जा सकती हैं। आज संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था में एक बनावटी पान दिखाई पड़ता है। मुखौटे लगाकर हम सामाजिक व्यवहार करने की आदी हो गए हैं साथ ही हमारी अपेक्षाएं सच के साथ खड़ा होने की बजाय स्वार्थ पूर्ति का माध्यम बन जाने वाले लोग अधिक हैं इसीलिए स्वार्थ पूर्ति के लिए समाज उन व्यक्तियों या विचारों के साथ खड़ा दिखाई देता है जो मानवीय मूल्यों एवं नैतिक आदर्शों के विरुद्ध आचरण करते हैं। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आज व्यक्ति को पाला (स्थान) बदलने में देर नहीं लगती है। इस कविता का शैक्षिक निहितार्थ यही है कि विद्यार्थी एक बेहतर नागरिक के रूप में विकसित हो जो निस्वार्थ भाव से सामाजिक विकास राष्ट्र निर्माण एवं पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति अपना योगदान दे सके।

4.2 देशभक्ति कविताएँ

❖ **हैं नमन उनको**

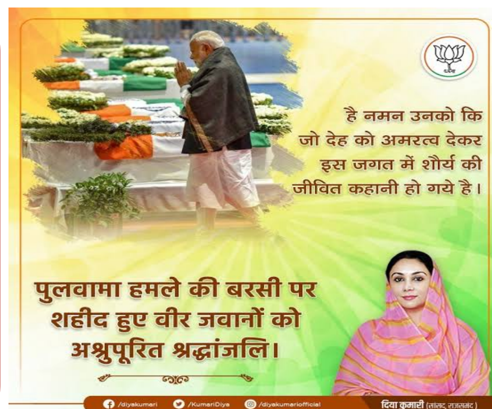
है नमन उनको कि जो यशकाय को अमरत्व देकर
इस जगत के शौर्य की जीवित कहानी हो गये हैं
है नमन उनको कि जिनके सामने बौना हिमालय
जो धरा पर गिर पड़े पर आसमानी हो गये हैं
है नमन उस देहरी को जिस पर तुम खेले कन्हैया
घर तुम्हारे परम तप की राजधानी हो गये हैं
है नमन उनको कि जिनके सामने बौना हिमालय ....
हमने भेजे हैं सिकन्दर सिर झुकाए मात खाऐ
हमसे भिड़ते हैं वो जिनका मन धरा से भर गया है
नर्क में तुम पूछना अपने बुजुर्गों से कभी भी
सिंह के दाँतों से गिनती सीखने वालों के आगे
शीश देने की कला में क्या गजब है क्या नया है
जूझना यमराज से आदत पुरानी है हमारी
उत्तरों की खोज में फिर एक नचिकेता गया है
है नमन उनको कि जिनकी अग्नि से हारा प्रभंजन
काल कौतुक जिनके आगे पानी पानी हो गये हैं
है नमन उनको कि जिनके सामने बौना हिमालय
जो धरा पर गिर पड़े पर आसमानी हो गये हैं
लिख चुकी है विधि तुम्हारी वीरता के पुण्य लेखे
विजय के उदघोष, गीता के कथन तुमको नमन है
राखियों की प्रतीक्षा, सिन्दूरदानों की व्यथाओं







राखियों की प्रतीक्षा, सिन्दूरदानों की व्यथाओं
देशहित प्रतिबद्ध यौवन के सपन तुमको नमन है
बहन के विश्वास भाई के सखा कुल के सहारे
पिता के व्रत के फलित माँ के नयन तुमको नमन है
है नमन उनको कि जिनको काल पाकर हुआ पावन
शिखर जिनके चरण छूकर और मानी हो गये हैं
कंचनी तन, चन्दनी मन, आह, आँसू, प्यार, सपने
राष्ट्र के हित कर चले सब कुछ हवन तुमको नमन है
है नमन उनको कि जिनके सामने बौना हिमालय
जो धरा पर गिर पड़े पर आसमानी हो गये।



भावार्थ: प्रस्तुत कविता डॉक्टर कुमार विश्वास की राष्ट्रवादी विचारधारा को पल्लवित करती देश एवं समाज की रक्षा करते हुए सहर्ष प्राणों की आहुति देने वाले वीर-बलिदानियों के प्रति श्रद्धा का समर्पण है। कल कहता है कि भले ही वे सैनिक हताहत हो धराशायी हुए पर भारत माँ की रक्षा अंतिम श्वाँस तक की। इसीलिए उनकी वीरता एवं शौर्यता का गौरव गान आसमान तक संपूर्ण ब्रह्मांड में गुंजित है। कवि उस देहरी और घर के सभी सदस्यों को भी नमन कर रहे हैं जहां सैनिक का बचपन युवावस्था बीती है। जहां उसने यौवन के साथ सीमाओं की रक्षा के लिए तप,साधना की है। कभी आगे कहते हैं कि भारत वह देश है जहां से विश्व विजयी की आकांक्षा पाले सिकंदर को भी खाली हाथ नतमस्तक होकर वापस जाना पड़ा। जहाँ भरत के समान साहसी बच्चों सिंह के दाँतों को गिनकर गिनती सीखते हैं। उनकी ऐसी धीरता, वीरता, शौर्यता एवं बलिदान को हम शत-शत नमन करते हैं।

प्रासंगिकता: राष्ट्रहित के लिए व्यक्ति-व्यक्ति को समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरणा देती यह कविता उन सैनिकों के प्रति श्रद्धा एवं संवेदना के पुष्प भेंट करती है जो अपने रक्त की अंतिम बूंद तक दुश्मनों से लड़ता है। वर्तमान संदर्भ में जब वैश्विक संघर्ष की एक श्रृंखला रूस-यूक्रेन युद्ध, इजरायल-हमास फिलिस्तीन युद्ध के संघर्ष के रूप में दिखाई देती है। तब यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि भारत अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की रक्षा के लिए सदैव सावधान रहे। इसीलिए एक-एक सैनिक अपने घर परिवार से दूर तप्त रेगिस्तान और बर्फीले प्रदेशों, दुर्गम क्षेत्रों मैं देश की सुरक्षा के लिए अहर्निश (दिन-रात) जागृत रहता है। बलिदान के प्रति समाज में श्रद्धा निष्ठा उपजाती यह कविता शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में नवल आयाम रचते हुए तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जब पाकिस्तान और चीन जैसे बदमाश पड़ोसी देश बार-बार शांति के पुजारी भारत देश की धैर्य की परीक्षा लेने हेतु सीमा विवाद उत्पन्न कर युद्ध के लिए उकसाते हैं। नई पीढ़ी को देश रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पित करने का भाव उत्पन्न करती है। यह कविता शैक्षिक दृष्टि से राष्ट्रवादी, देश-प्रेम, समाजवादी विचारधारा के शिखर-कलश को स्पर्श करती प्रतीत होती है।

❖ होठों पर गंगा हो हाथों में तिरंगा हो

होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो
दौलत ना अता करना मौला, शोहरत ना अता करना मौला
बस इतना अता करना चाहे जन्नत ना अता करना मौला
शम्मा-ए-वतन की लौ पर जब कुर्बान पतंगा हो
होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो
होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो



बस एक सदा ही सुनें सदा बर्फ़ीली मस्त हवाओं में
बस एक दुआ ही उठे सदा जलते-तपते सेहराओं में
जीते-जी इसका मान रखें
मर कर मर्यादा याद रहे
हम रहें कभी ना रहें मगर
इसकी सज-धज आबाद रहे
जन-मन में उच्छल देश प्रेम का जलधि तरंगा हो
होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो
होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो
गीता का ज्ञान सुने ना सुनें, इस धरती का यशगान सुनें
हम सबद-कीर्तन सुन ना सकें भारत मां का जयगान सुनें
परवरदिगार,मैं तेरे द्वार
पर ले पुकार ये आया हूं
चाहे अज़ान ना सुनें कान
पर जय-जय हिन्दुस्तान सुनें
जन-मन में उच्छल देश प्रेम का जलधि तरंगा हो
होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो
होठों पर गंगा हो, हाथों में तिरंगा हो।





भावार्थ: देश प्रेम के उत्ताल तरंगें प्रवाहित करती इस कविता में कई ने ईश्वर से केवल देशभक्ति प्रदान करने की इच्छा प्रकट की है। वह कहते हैं कि हे ईश्वर तुम मुझे यश और समृद्धि भले न दो,स्वर्गिक आनंद भी न दो बस मैं तुमसे यह मांगता हूं कि जब देश प्रेम की ज्योति पर यह तन-मन अर्पित हो तो मेरे होठों पर माँ गंगा का गौरव गान हो तथा हाथों पर देश की पहचान अपना तिरंगा शोभायमान हो। इसी प्रकार कवि अनेक प्रकार की सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनिच्छा प्रकट करते हुए केवल देशभक्ति माँग रहा है।

प्रासंगिकता: देश की सीमाओं की रक्षा के लिए एक-एक आवश्यक भाव है कि देश के नागरिक निवासियों में देशभक्ति एवं देश के प्रति सर्वोच्च समर्पण करने की भावना विद्यमान हो। ऐसे समय में जब मानवता परस्पर न्याय एवं विश्वास तथा जीवन मूल्य का रस दिखाई पड़ता हो जब निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए व्यक्ति संबंधों को ताक(अरवा) पर रखे हों तब कवि का ईश्वर से तमाम सांसारिक वस्तुओं के मोह का त्याग कर केवल देश भक्ति माँगना शैक्षिक संदर्भों में विद्यार्थियों एवं युवा पीढ़ियों के सम्मुख देश प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। कवि कह रहा है कि हम भले ही धार्मिक (गीता) जैसे उपदेश न सुन सके पर मेरी इच्छा है की मेरा हृदय देश का गौरव गीत जरूर सुनता रहे। नागरिकों के हृदय सागर में देशभक्ति की तरंगे उछलती रहें और मन, भावना भी राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत रहे।

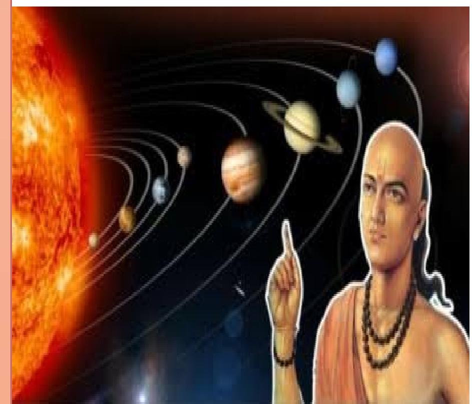
❖ हम हैं देसी हाँ मगर हर देश में छाए हुए

हम हैं देसी, हाँ मगर हर देश में छाए हैं हम
एशिया के हम परिंदे , आसमाँ है हद हमारी ,
जानते हैं चाँद सूरज , ज़िद हमारी ज़द हमारी ,
हम वही जिसने समंदर की , लहर पर बाँध साधा ,
हम वही जिनके के लिए दिन , रात की उपजी न बाधा,
हम कि जो धरती को माता , मान कर सम्मान देते ,
हम कि वो जो चलने से पहले , मंजिलें पहचान लेते ,
हम वही जो शून्य में भी , शून्य रचते हैं निरंतर ,
हम वही जो रौशनी रखते , हैं सबकी चौखटों पर ,
उन उजालोंका यही, पैगाम ले आए हैं हम ,
हम हैं देसी हम हैं देसी हम हैं देसी ,
हाँ मगर हर देश में छाए हैं हम ....
ज़िंदा रहने का असल अंदाज़ , सिखलाये है हमने ,
ज़िंदगी है ज़िंदगी के , बाद समझाया है हमने ,
हमने बतलाया कि, कुदरतका असल अंदाज़ क्या है ,
रंग क्या है, रूप क्या है , महक क्या है, स्वाद क्या है ,
हमने दुनिया में मुहब्बत , का असर ज़िंदा किया है ,
हमने नफरत को गले मिल-मिल के शर्मिंदा किया है ,
इन तरक्क़ी के ख़ुदाओं , ने तो घर को डर बनाया ,
इन बड़े ख़ाली मकानों , को हमीं ने घर बनाया ,
हम न आते तो तरक्क़ी , इस क़दर ना बोल पाती
हम न आते तो ये दुनिया , खिड़कियाँ न खोल पाती ,
हैंजसोदा के यहाँ पर , देवकी जाये हैं हम ,
हम हैं देसी हम हैं देसी हम हैं देसी ,
हाँ मगर हर देश में छाए हैं हम ....
इस धरा से भी वफ़ादारी, का प्रण हमने चुना है
पूरी दुनिया अपना घर है, ये ही बचपन से सुना है
हम, कि जो सरहद से दूरी पर हैं लेकिन लाम पर हैं
हम, कि जो होली, दीवाली, ईद पर भी काम पर हैं
हमने पतझर भर लिया है ख़ुद ही अपने सावनों में
तब कहीं चुन-चुन किरण भेजी है घर के आँगनों में
रौशनी के इस बड़े मेले में हम खोए नहीं हैं
आँसुओं का हम समुन्दर हैं मगर रोए नहीं हैं
ख़ुद ही ख़ुदका कल मिटाकर ख़ुद ही ख़ुद को आज़ देगा
हम इसी आशा में जीते हैं, वतन आवाज़ देगा
क्रांति की ज्वाला यहाँ भी ख़ुद में सुलगाए हैं हम
हम हैं देसी, हाँ मगर हर देश में छाए हैं हम.....


दुनिया

इंटरैक्शन : लिटिल एंजिल्स स्कूल में हिन्दी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए कवि डॉ. कुमार विश्वास

'हम हैं देशी, हां मगर हर देश में छाए हम'





भावार्थ: प्रस्तुत कविता महनीय(श्रेष्ठ) भारतवर्ष द्वारा अतीत में अर्जित उपलब्धियों का वर्णन है तो वहीं दुनिया को स्वस्थ, स्वच्छ एवं प्रेममय बनाए रखने का संदेश भी। अपने देश के नागरिकों की उपलब्धियां की चर्चा करते हुए कवि

कह रहा है की अपनी कर्मठता, निष्ठा, प्रेम, लगन एवं विश्वास के प्रति भारतीय लोग पूरी दुनिया में छाए (विद्यमान) हुए हैं। हम उन्हीं महापुरुषों की संताने हैं जिन्होंने सागर पर सेतुबंधन किया था। हम वही हैं जो धरती की मातृ वत एवं आसमान की पितृवत आराधना करते हैं। हमने ही ज्ञान का प्रकाश, शून्य की खोज, शेष दुनिया तक पहुँचाया है। हमने ही दुनिया में विद्या, बुद्धि और विवेक की खिड़की खुली है जिससे शेष दुनिया के लोग विश्व का सौंदर्य निहार रहे हैं। ज्ञान-विज्ञान एवं शिक्षा की साधना के लिए विश्व विद्यार्थी के रूप में भारतवर्ष की पद वंदन करता रहा है तभी से हमारे भारत देश को इस जगत में विश्वगुरु होने का दर्जा प्राप्त है।

प्रासंगिकता: प्रस्तुत कविता अपनी देश की समसामयिकता से पाठक को मानवता के उच्च आदर्शों से जोड़ती है। वैयक्तिक उपलब्धियों पर इतराना या अपने शोध-अनुसंधान के फलदाई परिणाम अपने लोगों तक सीमित रखने की मानसिकता से परे भारत नें सदैव मानवता विश्वबंधुत्व के कल्याण के लिए साधना की है। शिक्षा, साहित्य, समाज, विज्ञान, गणित एवं अन्यान्य क्षेत्रों में अर्जित अपने अनुभवों का लाभ मानव मात्र को प्रदान किया है। दार्शनिक परम्परा में सम्पूर्ण पृथ्वी हमारे लिए अपना परिवार ही है। इसी भाव से भारतीय मनीषियों ने ज्ञान की साधना एवं आराधना की है। हम भारतीयों की अपनी प्रकृति, संस्कृति एवं मधुर स्वभाव, आचरण-व्यवहार संपूर्ण विश्व में एक अलग ध्रुव तारे के समान झलकता रहता है।

❖ साथ रहो तो सबसे बेहतर...

साथ रहो तो सबसे बेहतर
साथ रहो तो सबसे बेहतर
मौन रहो आभारी है
सत्ता की कविता से केवल
इतनी रिश्तेदारी है
सारी दुविधा प्रतिशत पर है
कितना सच बोला जाए
गूँगे सिखा रहे हैं हमको
मुँह कितना खोला जाए।
हक़ के लिए लड़ो मर जाओ
जग को बतलाने वाले
आत्ममुग्ध बौने स्वराज का
परचम फहराने वाले
हम को बच्चा समझ रहे हैं
ख़ुद को बहलाने वाले
शाल ओढ़ कर घी पीते हैं
त्यागी कहलाने वाले
इतने हलके हैं कहते हैं
हमें नहीं तोला जाए
गूँगे सिखा रहे हैं हमको
मुँह कितना खोला जाए

एम्स के वार्षिकोत्सव में कुमार विश्वास की कविताओं के साथ झूमते रहे जूनियर डॉक्टर, चार दिवसीय काइजेन शुरू

मौन रहो तो सबसे बेहतर, साथ रहो आभारी हैं ...

पटना एम्स

फुलवारीशरीफ | संवाद सूत्र

पटना एम्स में वार्षिकोत्सव पर चार दिवसीय कार्यक्रम काइजेन बुधवार से शुरू हुआ। पहले दिन लोकप्रिय कवि कुमार विश्वास ने देर रात तक मेडिकल छात्रों को गुदगुदाया। कवि से राजनेता बने विश्वास ने व्यंग्य बाण भी चलाए।

कवि डॉ. कुमार विश्वास जैसे ही मंच की ओर बढ़े तालियों की गड़गड़ाहट और जोशीले शोर से पूरा माहौल गूंज उठा। एम्स फाइनल ईयर के एमबीबीएस छात्र-छात्राओं के साथ मौजूद चिकित्सकों में भी जोश भर गया। मेडिकल छात्र-छात्राओं के जोश और जुनून को देख डॉ. विश्वास ने कहा कि 'पटना वालों दिल थाम के बैठो। आगे बहुत कुछ है। मंच पर उन्होंने संवाद की शुरुआत कुछ इन पंक्तियों से की-' बहुत टूटा बहुत बिखरा थपेड़े से नहीं पाया, हवाओं के इशारों पर मगर मैं बह नहीं पाया, अधूरा अनसुना ही रह गया यूं प्यार का किस्सा, कभी तुम सुन नहीं पायी कभी मैं कह नहीं पाया। डॉ. कुमार विश्वास के इस अंदाज पर फिदा होकर जूनियर डॉक्टरों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ खूब हौसला बढ़ाया। इसके बाद लगातार कविताओं की सरिता बहा दी। भंवर में है सफिना ले के हम पतवार बैठे हैं, किनारे दर्द की बस्ती के साहूकार बैठे हैं, तुम्हारे ख्वाब में आने की हसरत आज भी है पर, तुम्हारे द्वार पर पलकों के पहरेदार बैठे हैं।





पटना एम्स में बुधवार से शुरू हुए वार्षिकोत्सव समारोह काइजेन में अपनी कविताओं से डॉक्टरों को झुमाते कुमार विश्वास। एम्स कैम्पस रातभर गुलजार रहा। • हिन्दुस्तान

राजनीति के व्यंग्य बाण भी चलाए

कविताओं के माध्यम से उन्होंने राजनीति के व्यंग्य बाण भी चलाए। कवि से राजनेता बने विश्वास ने बिना किसी का नाम लिए कहा कि मौन रहो तो सबसे बेहतर...साथ रहो आभारी हैं... सत्ता से कविता की केवल इतनी रिश्तेदारी है. सारी दुविधा प्रतिशत पर है, सच कितना बोला जाए...गूंगे सिखा रहे हैं हमको मुंह कितना खोला।

कोई दीवाना कहता है पर सभी झूम उठे

कविताओं की पेशगी का सिलसिला यूं ही चलता रहा। युवाओं की दिवानगी उस वक्त बढ़ गई, जब उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कविता 'कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है...सुनायी। डॉ. कुमार विश्वास के साथ पटना एम्स के मेडिकल छात्र-छात्राओं व चिकित्सकों से खचाखच भरा कार्यक्रम स्थल भी संग हो लिया। कार्यक्रम देर रात तक चलता रहा। मौके पर डॉ. उमेश भदानी, डॉ. क्रांति भावना, डॉ. रवि कृति, डॉ. प्रितांजली, डॉ. अनील, डॉ. मुक्ता अग्रवाल समेत एम्स के सभी डॉक्टर व मेडिकल छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

गूंगे सीखा रहे हैं हमको
मुंह कितना खोला जाए ।।
- डॉ कुमार विश्वास



वास्तविक आतंकवाद पर मुंह नही खुलता इनका

ये अवसरवादी, गूंगे बन जाते हैं!



इजरायल पर अब तक के सबसे बड़े आतंकी हमले पर इंडी गठबंधन वाले किसी सूरमा का कोई पोस्ट या ट्वीट किसी ने देखा क्या?*
ये सब मौन व्रत पर हैं।
ये अपने असली वोट बैंक को ध्यान में रखकर ही मुंह खोलते हैं।
तो फिर क्या गारंटी है कि भारत पर अगर कोई आतंकवादी हमला हुआ तो ये वोट बैंक से ऊपर उठकर आपकी लड़ाई लड़ेंगे?
*आप लोग निरंतर ध्यान रखिए कि आप निरंतर युद्ध में है, आप अपना ऐसा कोई समर्थन या वोट ऐसे लोगों को करेंगे तो समझ लीजिए अपने पैरों कुल्हाड़ी स्वयं मार रहे हैं ।।

भावार्थ: प्रस्तुत कविता में व्यक्ति संस्था या संगठन के सत्तावादी चरित्र का मूल्यांकन करते हुए कवि कहता है की सत्ता अपेक्षा करती है कि लोग उसके साथ रहें, सवाल उठाने की बजाय मौन रहें एवं अपनी मूक सहमति प्रदान करें। सत्ता से कविता का जुड़ाव या हिस्सेदारी केवल इतनी चाहते हैं कि कविता उनका महिमा-मण्डन करती रहे। आत्ममुग्ध बौनें या षड्यंत्रकारी चटुकार लोग अति महत्वाकांक्षा के साथ जीते हुए शेष लोगों को केवल नासमझ बच्चा ही समझ रहे होते हैं।

प्रासंगिकता: प्रस्तुत कविता राजनीति एवं सामाजिक चेहरे पर शब्दों का एक चाँटा रूपी प्रहार है। आज कविता की प्रासंगिकता शैक्षिक संदर्भों में विद्यार्थियों से सवाल उठाने की संस्कृति एवं अधिकारिता को पोषण देती है। सत्ता हमेशा से ऐसे लोगों का आश्रय एवं सम्मान देती है जो उसका यशगान कर सके। उसकी हाँ-हुजूरी कर सके। सत्ता के विरुद्ध सवाल उठाने की प्रवृत्ति बिल्कुल ना हो। इसलिए यह कविता मानव हृदय एवं मन को सत्ता से जूझने एवं प्रश्न करने के अधिकार पालन करने को उकसाती है। वह सत्ता का सच भी सामने रखती है। यह कविता वास्तव में मानवीय चेतना के प्रसार एवं बहाव की कविता है। ये कविता आत्ममुग्ध सत्ता से टकराने की शक्ति का द्योतक है।

❖ जब राजा अंधा हो जाए तो

राजा अन्धा हो जाए तो, सेवा धन्धा हो जाए तो,
सच दिखलाने वाला खम्भा छवि प्रबन्धा हो जाए तो,
युग कवि मत समझों ख़ुद को तुम निर्बल या कमजोर,
वाणी में भरकर जनता के संकल्पों का ज़ोर,
चौराहों पर अभय पुकारों चोर, चोर, चोर….
वह क्या बोलेंगे जिनपर है कर्जा इन दरबारों का,
वह क्या बोलेंगे जिनपर है हिस्सा इन बटमारों का,
वे क्या बोलेंगे जिन पर है पट्टा इन सरकारों का,
तुम ही बोलो विदुर अकेले इन्द्रप्रस्थ में क्योंकि अब,
धृतराष्ट्रों की आँखों पर है चश्मा साहूकारों का
गूँजे कवि की ललकारों से छोर, छोर, छोर
चौराहों पर अभय पुकारो चोर, चोर, चोर ॥
दलदल के बंधक दिवालियों से कैसी आशा करना,
विज्ञापनजीवी सवालियों से कैसी आशा करना,
सदनों में लड़ते मवालीयों से कैसी आशा करना,
तुम गाओ निर्भीक तराना जिसकी बस धुन को सुनकर
सौ करोड़ आँखों की दहके कोर, कोर, कोर
चौराहों पर अभय पुकारो चोर, चोर, चोर ॥


सिटी भास्कर

कुरुक्षेत्र गोशाला में कवि सम्मेलन • कुमार विश्वास के गीतों ने बांधा समां, श्रृंगार, करुणा के साथ सियासी कटाक्ष भी छाए

राजा अंधा हो जाए, सेवा धंधा हो जाए तो युगकवि मत समझो निर्बल या कमजोर... चौराहों पर अभय पुकारो चोर...चोर...चोर...

प्रेम, विरह और त्याग की अनुभूतियों को कुमार विश्वास ने अपने अंदाज में प्रस्तुत किया

बृजेन्द्र सिंह ने किया नवनिर्मित राधा कृष्ण मंदिर का लोकार्पण

भावार्थ: प्रस्तुत कविता राजनीति एवं साहूकारी के गठजोड़ का चित्रण प्रदर्शित करती है। भारतीय प्रज्ञा ने राजा को हमेशा प्रजा हितैषी एवं विवेक से निर्णय लेने वाला सर्वजन हिताय की सोच वाला माना है। जब राजा यह सत्ता नायक अपने कार्यों के प्रति उदासीन हो जाता है तो राजकीय प्रबंध और व्यवस्था में अराजकता एवं विसंगति पैदा होती है। सेवा

को व्यापार के रूप में करने से अर्थाजन अर्थात धन अर्जन तो हो सकता है परंतु संतुष्ट नहीं इसलिए कवि कहता है कि सत्ता का सच दिखाने की जिम्मेदारी रखने व स्पष्ट करने वाला लोकतंत्र का चौथा स्तंभ (मीडिया) यदि केवल सत्ता की छवि को चमकाने, गढ़नें का काम करने लगे तो समाज में अविश्वास एवं अराजकता उत्पन्न होती है। कवि रचनाकारों का आह्वान करते हुए कहता है कि तुम जनता के हित के विरुद्ध किए जा रहे निर्णयों को चौराहों पर अभय व जोर से आंदोलन रूप में बोलने को प्रकट किया है क्योंकि सत्ता कि कृपापात्र लेखनी से लोकहितकारी लेखन की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।



प्रासंगिकता: प्रस्तुत कविता की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है क्योंकि इसमें करारा व्यंग्य समाहित है। सत्ता सत्ता की चौखट के अभिवादन की अभ्यस्त लखनी जिन्होंने सत्ता के नाम की पट्टिका गले में धारण कर ली हो वे सत्ता का सच उजागर नहीं कर सकते। कवि का आह्वान है कि जब सत्ताधीश, साहूकारों की आंखों से देखने लगे तो इस इंद्रप्रस्थ में कवि तुमको विदुर बनकर अपनी ललकार से छोर-छोर तक इन चोरों के विरुद्ध अपनी बुलंद आवाज को गुंजायमान करना होगा। शैक्षिक दृष्टि से यह कविता पाठक, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सामने सत्ता के चरित्र की प्रचलित झाँकी की झलक दिखलाती है। यह कविता स्वयं के हितों के लड़ने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती हुई अनेक सवाल उत्पन्न करती है जैसे कि वे प्रतिनिधि आमजन की लड़ाई नहीं लड़ सकते। जिनका आचरण सदन में मावलियों या बिगड़े लोगों की तरह हो। इसलिए हे कवि तुम ऐसा गान करो कि पूरे देश के नागरिकों की आँखें अंगारा बनकर दहक उठे एवं सत्ता के चोरों को पड़कर उन्हें उजागर कर सुधारने का प्रयत्न हो सके। यह कविता जहाँ एक ओर शैक्षिक ज्ञान रूपी प्रेरणा की निर्मल धार है वहीं दूसरी ओर उत्साह एवं ऊर्जा का अथाह सागर भी है।

4.3 मुक्तक–

सियासत में तेरा खोया या पाया हो नहीं सकता

सियासत में तेरा खोया या पाया हो नहीं सकता
तेरी शर्तों पर गायब या नुमायाँ हो नहीं सकता
भले साजिश गहरे दफ़्न मुझको कर भी दो, पर मैं
सृजन का बीज हूँ मिट्टी में जाया हो नहीं सकता



भावार्थ: प्रस्तुत मुक्तक में कवि का आशय है की स्वाभिमानी एवं रचनाधर्मी व्यक्ति राजनीतिक दल के नेताओं या प्रमुख नेता की शर्तों या इच्छाओं के अनुसार आचरण नहीं कर सकता है। राजनीतिक नेता के कहने पर स्वयं को प्रस्तुत करना या पर्दे के पीछे ले जाना भी नहीं कर सकता क्योंकि रचनात्मक बीज मिट्टी में भले ही गहरा दबाया जाए वह गलेगा अथवा बेकार नहीं होगा बल्कि अंकुरित हो प्रस्फुटित होगा।

प्रासंगिकता: राजनीतिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण इस संदर्भ में महत्वपूर्ण संदेश समाहित किए हुए हैं कि रचनाधर्मी लोकतांत्रिक व्यक्तित्व किसी के आदेश-निर्देश पर कार्य नहीं करते बल्कि वह कठपुतली की भाँति प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं। सर्जनात्मक ऊर्जा एवं संभावना से ओत-प्रोत वह अपना स्थान स्वयं निर्धारित करते हैं।

❖ वतन

प्रथम पद पर वतन ना हो तो हम चुप रह नहीं सकते
किसी शवपर क़फ़न ना हो तो हम चुप रह नहीं सकते
भले सत्ता को कोई भी सलामी दे न दे लेकिन
शहीदों को नमन ना हो तो हम चुप रह नहीं सकते।

जले कश्मीर की वादी तो हम चुप रह नहीं सकते
अराजक हो अगर खादी तो हम चुप रह नहीं सकते
भले शिशुपाल के निन्यान्नवे अपराध सहते हों
मगर संसद हो अपराधी तो हम चुप रह नहीं सकते।

फसल पानी को तरसेगी तो हम चुप रह नहीं सकते
फकत दिल्ली ही हर्षेगी तो हम चुप रह नहीं सकते
मिटाकर गांव की हस्ती अगर शासन-प्रशासन की
कृपा महलों में बरसेगी तो हम चुप रह नहीं सकते।



भावार्थ: प्रस्तुत मुक्तक में कवि ने रचनात्मक व्यक्ति के मुखर होने पर अपनी बात कहा है कि रचनाधर्मी व्यक्ति कभी भी चुप नहीं बैठते। कार्य के प्रथम पद पर ही रणनीति स्पष्ट न हो या कोई शव कफन रहित हो तो रचनाधर्मी व्यक्ति पूरी संवेदना के साथ सवाल उठाता है। वह कहते हैं कि भले ही सत्ता के प्रति आदर हो या न हो लेकिन समाज में देश के शहीदों के प्रति श्रद्धा अवश्य होनी चाहिए। महिमामंडित या राष्ट्र के श्रेष्ठ, सम्मानित प्रमुख व्यक्तियों का विपरीत आचरण रचनाधर्मी व्यक्ति को आहत करता है। सामान्य तौर पर कितने भी अपराध क्षमा कर दिए जाएं परंतु ऐसे वरिष्ठ व्यक्तियों के अपराध अक्षम्य में होते हैं। गाँव में यदि एक तरफ गरीब किसान कर्ज से डूब कर बदहाल स्थिति में है वहीं दूसरी तरफ शहर या नगरों के वरिष्ठ व्यक्ति महलों में आराम से खुशियां मना रहे हैं तो कई ऐसी भावना से असंतुष्ट हैं एवं मुक्तक के माध्यम से अपनी अंतरात्मा से रोष व्यक्त कर रहे हैं।

प्रासंगिकता: संवेदना एवं जन सामान्य के प्रति आत्मीयता रखने वाले रचनाकार हमेशा सकारात्मक एवं समाज को आगे ले जाने वाली प्रवृत्तियों के पक्ष में खड़े होते हैं। वे हर उस कार्य के विरुद्ध आवाज उठाते हैं जो लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक मूल्यों के विपरीत होती है। शैक्षिक दृष्टि से प्रस्तुत मुक्तक अभिव्यक्ति की आजादी के साथ-साथ सच के साथ खड़े होने की पैरवी करते हैं। यह मुक्तक देशभक्ति एवं विश्वबंधुत्व की भावना विकसित करता है। अपने देश का कोई अंग अलगाव की आग में झुलसे यह स्वीकार्य नहीं है। खादी सेवा स्वावलंबन एवं ग्राम स्वराज का प्रतीक है। खद्दरधारी व्यक्ति का विपरीत आचरण रचना धर्मी व्यक्ति को आहत करता है भले ही 99 अपराध क्षमा करने का क्षमता क्यों न हो। समान अपराधी के अपराध तो सही जा सकते हैं किंतु जनप्रतिनिधि या लोकतंत्र का नेतृत्व करने वाले छवि निर्धारक व्यक्ति के अपराध सह नहीं जा सकते। दूसरी तरफ जब किसान कर्ज के जाल में फंस कृषि संबंधी आवश्यक सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पा रहे हो और केवल सत्ताधारी व्यक्ति ही खुश हों, गाँव का अस्तित्व मिटाकर सुविधाओं की धारा महलों की तरफ मोड़ दी जाए तो रचनात्मक व्यक्ति या कवि चुप नहीं रह सकते हैं। जब जनता और सरकारें मिलकर भ्रष्टाचार में शामिल रहती हैं तब कवि अपने दायित्व का पालन बखूबी निभाते हैं और लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

❖ वक़्त

वक़्त के क्रूर छल का भरोसा नहीं
आज जी लों की कल का भरोसा नहीं
दे रहे हैं वो अगले जनम की ख़बर
जिनको अगले ही पल का भरोसा नहीं।



भावार्थ: प्रस्तुत मुक्तक में जीवन की नश्वरता के साथ-साथ जीवन की यथार्थता एवं पुनर्जन्म के बारे में प्रचलित मान्यता पर कवि ने विचार व्यक्त किया है। वर्तमान को बेहतर तरीके से जीने का संदेश देते कवि कह रहे हैं कि अगले पल का कोई भरोसा नहीं है इसलिए वर्तमान में ही अपनी सभी खुशियाँ जी लेना चाहिए।

प्रासंगिकता: प्रस्तुत मुक्तक में व्यंग्य की छाया और वर्तमान में जीने का संदेश। शैक्षिक दृष्टि से देखें तो अनेकों ऐसे व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं जो अगले जन्म को सुख-सुविधा संपन्न बनाने हेतु वर्तमान समय में कर्मकाण्डो पर बल देते हैं जबकि उनको स्वयं के अगले पल का भरोसा नहीं है। यह मुक्तक युवा पीढ़ी के लिए अति प्रासंगिक है क्योंकि इंसान को केवल भविष्य की योजनाओं एवं कल्पनाओं में समय नष्ट न कर वर्तमान को योजनाबद्ध तरीके से परिश्रमपूर्वक जीने का प्रयत्न करना चाहिए।

❖ किस्मत

किस्मत सपन सँवार रही है, सूरज पलकें चूम रहा है
यूँ तो जिसकी आहट भर से धरती अम्बर झूम रहा है
नाच रहे हैं जंगल,पर्वत, मोर, चकोर सभी,लेकिन
उस बादल की पीड़ा समझो जो बिन बरसे घूम रहा है।



भावार्थ: प्रस्तुत मुक्तक में कवि का आशय है कि जिस प्रकार आसमान में बादल छा जाने से धरती, पेड़, नदियाँ, आसमान, पशु-पक्षी प्रसन्न हो जाते हैं उसी प्रकार श्रम करने वाले किसान, मजदूर व्यक्ति भी वर्षा की संभावना होने से किस्मत को संवारने लगते हैं। जैसे धनी व्यक्ति या रचनात्मक व्यक्तित्व के संपर्क में आ जाने मात्र से लोग प्रसन्न हो जाते हैं किंतु बिन बरसे बादल उड़ जाने की तरह पात्रता का अभाव देखकर कला-समृद्ध व्यक्ति भी उदास हो जाते हैं।

प्रासंगिकता: प्रस्तुत मुक्तक शैक्षिक निहितार्थ की दृष्टि से परम उपयोगी प्रतीत होता है। कला संपन्न व्यक्तित्व से कुछ प्राप्त करने के लिए सीखने का भाव पात्रता और कृतज्ञता होना आवश्यक है। प्रायः देखा गया है कि वर्तमान पीढ़ी बिना श्रम एवं अभ्यास के अर्थात सपने देखने की भांति सब कुछ पा लेना चाहती है। कला-प्रवीण लोग ऐसी प्रवृत्ति देखकर नीरसता का अनुभव करते हैं।

❖ नेकी

नेकियों का सिला बदी में मिले
और शोहरत की कमाई क्या है
इस बुलंदी पे आ के जाना है
अच्छा होने में बुराई क्या है।



भावार्थ: कवि कहता है कि उपकार करने पर अपयश ही मिलता है। प्रसिद्धि की कमाई यही है कि कर्म क्षेत्र के शिखर पर आकर वापस लौट जाने में आखिर बुराई क्या है?



प्रासंगिकता: प्रस्तुत मुक्तक की प्रासंगिकता सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दर्पण की भांति मुख दिखाने में स्पष्ट है कि उपकार करने पर हमेशा बुराई ही मिलती है। किसी व्यक्ति द्वारा उसके सामाजिक जीवन में उच्च शिखर पर पहुँचने के बाद आरोप रहित वापस हो जाना बहुत बड़ी बात है। अर्थात हमारे द्वारा किए गए अच्छे कार्यों से अपयश मिलने पर भी हमें अपने नेक कार्य करने नहीं छोड़ने चाहिए और लोकप्रियता के उच्चतम शिखर पर कायम रहना चाहिए।

❖ शहर

शहर से आने वाले राज–रस्ते
कभी तो गांव का दु:ख–दर्द पूछें
समन्दर की हवाएँ सो गई हैं
चलो अब नाव का दु:ख–दर्द पूछें



भावार्थ: प्रस्तुत मुक्तक में कवि कह रहा है कि हमारे जीवन के आधार गाँव के विकास की बात करने वाले कभी उसकी समस्याओं, उसकी पीड़ा को समझे तो बात बने। जिस प्रकार समुद्र में हवाएं बंद हो जाने पर किसी नौका का परिचालन कठिन हो जाता है उसी प्रकार सत्ता से प्रदान की जाने वाली सुविधाएं गाँव तक न पहुंचने से गाँव दर्द में डूब जाते हैं।

प्रासंगिकता: गाँव के प्रतिनिधि शहरों में स्थापित सत्ता में भागीदार हैं। उन्हें गाँव की समस्याओं और पीड़ा से कोई संबंध नहीं है। गाँव का उपयोग वह केवल सत्ता प्राप्ति के पथ पर, एक माध्यम के रूप में चुनते हैं। गाँव बेहाल है, मर रहें हैं। जिस प्रकार समुद्र में हवा बंद हो जाने से नौका फंस जाती है ठीक उसी प्रकार गाँव भी फंसे हुए हैं।

❖ जीवन

जो हार गया निज अंतर से
उस को जीता तो क्या जीता
जो जीत गया निज क्षमता को
उसका जीवन जीवित गीता ॥



भावार्थ: कवि कह रहा है कि जो व्यक्ति स्वयं अंतर्मन से पराजित है, यदि उसको जीत लिया तो कोई खुशी नहीं है लेकिन जो व्यक्ति स्वयं को जीत लेता है उसका जीवन श्रीमद्भगवत गीता का जीवंत स्वरूप होता है।

प्रासंगिकता: प्रस्तुत मुक्तक में कवि जीवन में सतत संघर्ष करने की प्रेरणा देता है व्यक्ति को कम में जीवन जीने और स्वयं को पहचानने का सुंदर संदेश देता यह मुक्तक युवा पीढ़ी के लिए शैक्षिक दृश्य नए आयाम व रास्ते खोलती है। जो

स्वयं की क्षमताओं को समझ कर कार्य व्यवहार में पारदर्शिता रखते हों, लोकहितैषी भाव के साथ काम करता है, वह गीता के उपदेश का जीवित दर्शन ही है।

❖ दुःख

हमने दुःख के महासिंधु से सुख का मोती बीना है
और उदासी के पंजों से हँसने का सुख छीना है
मान और सम्मान हमें ये याद दिलाते है पल-पल
भीतर-भीतर मरना है पर बाहर बाहर जीना है ।

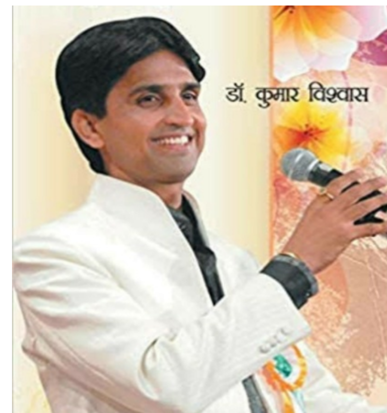


भावार्थ: कवि कह रहा है कि यह संसार दुःख का महासागर है। उसने इसमें से सुखपूर्वक जीने का रास्ता समझा व जीया है तथा उदास, निराश व्यक्तियों के साथ हँसी-मजाक एवं विनोद के कुछ पल खोजे हैं। इस दुनिया में विभिन्न अवसरों पर मिलने वाले मान-सम्मान वास्तव में यह याद दिलाते हैं कि व्यक्ति कितने खोखले जीवन में जी रहे हैं।

प्रासंगिकता: कल का यह महत्वपूर्ण मुक्तक इस आसार (सारहीन) संसार में सुखपूर्वक रहने का तरीका बताता है। बाहर-बाहर मान-प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले व्यक्ति अंदर से मरे हुए हैं। प्रकारान्तर में हमको आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए अंदर मन में व्याप्त तमाम बुराइयाँ एवं कुंठाओं को मारकर लोक व्यवहार समदर्शी जीवन जीना होता है।

❖ जिंदगानी

मुस्कुराती जिंदगानी चाहिए, शब्द की जागृति कहानी चाहिए,
सारी दुनिया अपनी हो जाती है बस, एक उसकी मेहरबानी चाहिए।।



भावार्थ: प्रस्तुत मुक्तक में कवि का आशय है कि इस संसार में उसे परमपिता परमात्मा अर्थात ईश्वर की कृपा हो जाने पर और हँसते-मुस्कुराते जीवन के लिए मधुर स्वभाव के साथ सकारात्मक शब्दों एवं मीठी बोली से यह संपूर्ण संसार अपना हो जाता है अर्थात हम लोगों में एक-दूसरे के प्रति गैरपन का भाव नहीं रहता है।

प्रासंगिकता: इस मुक्तक के माध्यम से कवि स्पष्ट करना चाहता है कि ईश्वर की महिमा और व्यक्ति के हँसते-मुस्कुराते स्वभाव एवं शब्दों की सार्थकता के साथ बोले गए मीठे बोल व सत्कर्मों के प्रयास से यह पराई दुनिया भी अपनी हो जाती है। इस संसार में व्यक्ति का मधुर स्वभाव, आचरण एवं सत्कर्म ही उसे महान बनाता है और वह सभी के दिलों को जीत लेता है। इस मुक्तक के माध्यम से कवि शैक्षिक दृष्टि से युवाओं, शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों में राष्ट्रभक्ति के साथ-साथ विश्व-बंधुत्व की भावना को भी विकसित करने का प्रयास करता है।

अध्याय पंचम

डॉ० कुमार विश्वास की शैक्षिक विचारधारा

5.1 प्रस्तावना

कुमार विश्वास जी एक प्रसिद्ध कवि, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उनकी शैक्षिक विचारधारा व्यक्तित्व विकास और राष्ट्रीय प्रगति पर आधारित है। विश्वास जी के विचार धारा में सामाजिक न्याय, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता, कविता और संस्कृति का अहम स्थान है।

उनकी शैक्षिक विचारधारा में शिक्षा का महत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्हें हमेशा शिक्षा को सक्षम भारत की जरूरत है। +उनकी राय है कि अच्छी शिक्षा और सामाजिक व्यवस्था के बिना देश का विकास संभव नहीं है। कुमार विश्वास जी के विचार राष्ट्रवाद में भी महत्वपूर्ण हैं। उनका मानना है कि राष्ट्र वंदन और राष्ट्र भक्ति ही देश की गरिमा का प्रतीक है। राष्ट्रीय एकता और सम्मान उनके लिए सर्वोपरी है। विश्वास जी के विचार में सभी भारतीयों की प्रगति और उन्नति के लिए एकता और सम्मान होना जरूरी है। विश्वास जी का कवित्व और संस्कृति के प्रति भी विशेष रूप से प्रेम है। उनका मानना है कि कविता एक ऐसा माध्यम है जो मानवता को जोड़े रखता है और प्रकाश करने के लिए समाज और संस्कृति में सुधार लाता है। उनके विचार में संस्कृति का हमेशा सम्मान करना और उसकी रक्षा करना बहुत महत्वपूर्ण है।

कुमार विश्वास जी की शैक्षिक विचारधारा में प्रगतिशील विचारों का प्रमाण है। उन्हें हमेशा सामाजिक न्याय, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता, कविता और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष करना है। उनकी विचारधारा में देश और समाज की प्रगति और विकास के लिए समर्पण कार्यक्रम और योजना शामिल है। सभी विचारों के साथ, कुमार विश्वास जी एक सामाजिक कार्यकर्ता और राष्ट्रीय नेता के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। उन्हें हमेशा देश की सेवा और सामाजिक उन्नति के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। डॉ० कुमार विश्वास जी की शैक्षिक विचारधारा प्रायः उनके वक्तव्यों के माध्यम से देखने को मिलती है। यहाँ उनके कुछ वक्तव्यों का विवरण दिया जा रहा है—

5.2 विभिन्न कार्यक्रमों में दिए गये वक्तव्य

5.2.1 टी०वी० धारावाहिक – अपने अपने राम



.

वीडियो स्क्रिप्ट—

बहुत बहुत प्रणाम! मैंने कल के सत्र में कहा था कि अगर हर मनुष्य ये सोच ले कि सामने वाले में ईश्वर है। , तो मुझे लगता है कि मुझे आपकी बजाय आप के अंदर बैठे राम को प्रणाम करना चाहिए। सबसे पहले तो आभार इस बात का कि कल शाम लगभग 2000 लोगों में से 600-700 लोगों ने अपने प्रश्न लिखकर दिए इसके दो तात्पर्य हैं, एक तात्पर्य यहकिआप लोगों नेमुझे अच्छे से सुना तभी सवाल पैदा हुए और दूसरा ये है किइतने वर्ष होने के बाद इतने सारे लोगों को सुनने के बाद इतनी बात होने के बाद हमारे जन जीवन में लोक आस्था के सबसे बड़े प्रतीक के बारे में इतने सवाल हैंऔर मुझे आश्चर्य हुआ कि 19 साल की एक लड़की का जो सवाल था। वही सवाल 82 साल के कोई सज्जन यहाँ आए हैं हॉल में उनका भी। जो सवाल मेरे हाथ लगे हैं, उनमें से कुछ सवाल ले के आया हूँ। मैंने कल भी आपसे कहा था कि सर्वज्ञ होने का भ्रम परमात्मा को चुनौती देने जैसा है और जो ईश्वर को चुनौती देता है वो बचता नहीं है। आज तो नहीं छोटा भी आये ये किसी ने सवाल पूछा है। यहाँ से अधिवक्ता हैं लिखने वाली उन्होंने कहा कि देह मृत्यु के उपरांत दान करना चाहते हो मगर संशय है कि जो विधान हमें सिखाया गया है। अगर वो पूरा नहीं हुआ अंतिम संस्कार से तो आत्म शांति मिले गी कि नहीं मिले गी राम पृथ्वी पर आये थे।

आप सब जानते हैं जीतने भी पैगंबर आये है। जीतने भी ईश्वर का संदेश देने वाले लोग आये है। वो मनुष्य का शरीर करके आये हैं और राम ने अपने शरीर को अग्नि के हवाले नहीं किया था। राम ने सरयू के जल में स्वयं को समाहित किया था। तो अगर जीते जी आप ने वो कर लिया है। जो मरने के बाद मिलेगा मरने के बाद क्या मिलेगा की आपने इतने लोगों का भला किया इसलिए आपको स्वर्ग एलॉट होगा और अगर आप की आँखों में किसी अंधे दृष्टि दे दी है। तो आपको यही स्वर्गएलॉट होगा। और जिस भी बहन ने मुझे यह लिखा है। तुमने किसी अनँद्अर को दृष्टि दे दी है। तो आपको यही स्वर्ग लौट होगा और जिस भी बहन नहीं है। मुझे लिखा है। उसकी सूचना के लिए बता दूँ कि मैं पिछले वर्ष देहदान कर चुका आपका जन्म महत्वपूर्ण नहीं है। आपकी मृत्यु महत्वपूर्ण है। ये देखिये की आज अगर मैंनरहूं तो मेरे बारे में क्या सोचेंगे आदि शंकराचार्य तो 40 पूरी नहीं कर पाए उसके बाद सनातन धर्म को जिंदा कर दिया था। गुरु गोविंद सिंह के पुत्र बैठे हैं यहाँ पर पगड़ी वाले पूरी दुनिया में अपने संकल्प की शपथ लेते हैं 80 साल की 82 साल की 90 साल की उम्र तक जीवन से 23 साल का भगत सिंह का जीवन ज्यादा प्रासंगिक है। भारतीय संस्कार विधि में ऐसा कुछ भी नहीं है। जिसमे आपको मुक्ति नहीं मिली हमारे पर्यावरणविद बहुत कहते हैं कि नदियों के किनारे कॉम्बिनेशन मत करिये नदियां प्रदुषित हो जाएँगे बात है।



भारतीय संस्कार विधि में ऐसी कोई चीज़ ही नहीं है। मनुष्य के जलाने में जिससे नदी प्रदुषित हो आप सबने संस्कार देखे होंगे मखाने है। खेल है। गोला है। लकड़ी है। पूल है। जब उसका शरीर है। ये सब येई को डाइवर्सिटी के ऐसे एलिमेंट्स है। जो डिसॉल्व होते हैं जो जरूरी है। नदी के लिए लेकिन नदियों के किनारे जो आपने कूड़ा फेंकने के संयंत्र लगाए हैं करप्शन से दलाली खा के ये गंगा और यमुना को चंबल को पवित्र कर रहे हैं तो नदियां कृमि नेशन से खराब नहीं होती है। आपके करप्शन से खराब होती है। सरकार कर्मचारी हैं उन्होंने बताया कि राम के पथ पर चलने के लिए खुद से बाहर कैसे निकलना होगा आपने कहा खुद से बाहर निकलना होगा एक सामान्य बात है। आप कभी कार में बैठे गा और ऊंची कार में बैठे गा तो जो पहली दूसरी बार मैं लंबा सफर करते हैं उनको असहजता होती है। कभी कुछ लोग ट्रक में बैठेंगे मैंने यात्राएँ किया ट्रक में कई बार कई बार जब बस नहीं मिलती थी कवि सम्मेलन में जाना है। रात को कुछ मिला नहीं तो ट्रक वाले को हाथ दिया ट्रक में चले गए तो ट्रक में जब आज भी पहली बार बैठता है। तो बहुत असहज लगता है। डबल डेकर बस में अगर आप बैठे हो कभी लंदन में चलती है। तू तो बहुत ही ज्यादा लगता है। यानी की उचाई पर जाते जाते धीमे धीमे चीजें आपके लिए विस्तृत होनी शुरू हो जाती है। जब आप 19 से मंजिल पर होते हैं तो आपको ज्यादा दिख रहा होता जितनी भी बड़ी बिल्डिंग से उनकी सबसे ऊपर छत पे जाकर आप को एरियल यू दिखाई देता और जब आप आसमान में पहुंचते हैं तो ज्यादा अच्छा दिखाई देता है। तो जितनी आप ऊपर उठते हैं उतनी आपको जिन्हें छोटी लगने लगती है। अपने से बाहर आता है। ऐसा है। जैसे राम अपने से बाहर आएँ रामनाथ सन अयोध्या की सीमा छोड़ी उस दिन उन्होंने अपनी निजता की सीमा छोड़ दी उस दिन मुझे भूल गए कि मैं एक शौक वर्ष का राजकुमार उस दिन वो भूल गए कि मैं पृथ्वी के सबसे बड़े चेतना संपन्न समूह का अधिकारी है। इसलिए उन्हें सबरीको गले लगाने में दिक्कत नहीं इसलिए उन्हें हनुमान से लाड़ करने में दिक्कत नहीं है। समाजवाद पैदा करना यही अपने से बाहर आने की प्रक्रिया से बाहर है।



आज एक व्यक्ति का पत्र मिला उन्होंने लिखा है। क्या आदमी हैं कुमार विश्वास जी, मैं अजमेर का निवासी हूँ, आपका कार्यक्रम सुनने आया था। । मेरे बड़े भाई साहब सुना करते रहते हैं दोनों के बीच में संपत्ति को लेकर 40 वर्षों से विवाद चल रहा था। आज आपका संवाद सुनने के बाद मैंने तय किया रविवार का कार्यक्रम सुनने के बादशं मैं अपने भाई साहब के पास जाऊंगा उनसे क्षमा मांगूंगा और जिस तरह वो कहेंगे उसी तरह का आचरण करूँगा। एक सज्जन हैं इन्होंने मुझसेकहा किराम मंदिर कब बनेगा, सवाल अच्छा है। पर गलत आदमी से पूछ लिया आपकी चिंता यह है कि राम मंदिर कब बने और मेरी कोशिश ये है किभारत के हिंदू मुसलमान के मन का मंदिर राम मंदिर बनेगा। मैं जिस कॉलेज में पढ़ाई करता था। उस कॉलेज में जब मैं अंदर जाता तो वहां एक पट्टा लगा हुआ था। बहुत बड़ा संग मर मर का उसमें लिखा हुआ था। कि इस कॉलेज की स्थापना महात्मा लटूरी सिंह जीने करवाया तो मैंने अपने लोगों से पूछा कौन है लटूरी सिंह जी हमारे उन्होंने बताया कि हमारे इलाके के एक बड़े ज़मींदार थे। लटूरी सिंह अभिनय करते थे। तो चौबासी

में कोई काम होता नहीं है। हमारे गाँव में भारत में चातुर्मास में तो हर बार मैं एक नाटक मंडली बुलाते थे। और अभिनय करते थे। एक बार लटूरी सिंह जी ने गाँव में एक मंडली बुलाई नाटक करने के लिए और उस मंडली ने ऐसा नाटक किया जिसमेंसब कुछ त्याग दिया था। उसमें है। भारतीय हरकतें कर रहे थे। लेकिन खुद उस समय चौधरी लटूरी सिंह इतने बड़े आदमी से पत्नी थी बच्चे थे। बहुत थी 9 दिन का नाटक था। लटूरी सिंह 8 दिन अभिनय किया लोग कहते थे। अद्भुत अभिनय किया लटूरी सिंह आठवें दिन से वो रात को खाना खा रहे थे। तो अपनी पत्नी से बोले कल शांता आपके दिन है। कल तुम ताना तू बोले मैं मतलब हम सब बोले नहीं बहुओं को भेज देना बेटे आ जाएँगे तुम घर पे रहना लेकिन महिलाओं के अंदर शक होता है कि आज क्यों मना कर रहा है। बस बहुत अच्छा तू बता न अब चौधरी साहब की पत्नी चौधरी पर लगा सब चले गए घर से अकेली बैठी है। क्या करू पता नहीं क्या हो रहा होगा और जो गया हो तो कल्पना बहुत तेज चलती उस समय थे। तो रिकॉर्डेड कॉल आती है। किसी महिला की वो भी किसी और की लगती है। लटूरी सिंह की पत्नी पर लगा कि जाना तो चाहिए यार देखनतो चाहिए की हो क्या रहा है। लटूरी सिंह की पत्नी ने घूंघट निकाला अकेली गयी और संघ में तो सामने बैठे थे। उनमें बैठने की बजाय पड़ोस के घरों की छत पे महिलाओं के बीच चुप बैठ यहाँ से देख लूँगी अब सात प्रारंभ हुआ नटराज के बाद अभिनव प्रारंभ किया जब अभिनय समापन के अवसर पर आया तो लटूरी सिंह जीने के राजा के कपड़े उतारे और योगी के कपड़े पहने और अपना डाइअलॉग बोला इस प्रकृति में उपलब्ध शंकर को साक्षी मानकर यहाँ जल नहीं अग्नि को साक्षी मैं भरती रही हूँ। आज ये घोषणा करता हूँ। कि आज से कोई धन-धान्य भूमि कम है। अधिकारी नहीं मेरा पुत्र नहीं है। मेरी कोई माँ नहीं है। मेरी कोई पत्नी नहीं है। दुनिया की सारी महिलाएँ मेरी माँ है। मेरी बहन है। मेरी बेटियां है। मैं आज व्यस्त जीवन को जागकर योगी के जीवन में प्रवेश करता लोगों ने तालियां बजाई अच्छा अभिनव बहुत अच्छा अभिनव जैसे ही वो कार्यक्रम समाप्त हुआ।



लोगों ने कपड़े बदल लिए लटूरी सिंह ने भगवा पहने रखा लोगों ने कहा कि ये सब कपड़े बदल लीजिये वोबोले भोजन के लिए भिक्षा ले आओ और उन्होंने वहाँ रखा हुआ है। जो काम आता था। कटोरा अभिनय में उसको उठाया और अपने द्वार पर जाकर बोले कि वहाँ भिक्षा दो उनकी पत्नी निकल कर आई उन्होंने कहा कपड़े चेंज नहीं करे उन्होंने कहा मैंने आपसे कल निवेदन किया कि जिस समय में अभिनय करता हूँ। मेरे अंदर शंकर होतेहैं मैं एक क्षण उस अभिनय के अन्यत्रनहीं जाता। मैंवहाँ से सत्यजीत हूँ। और आज आपके सम्मुख मैंने घोषणा की प्रकृति और यहाँ उपस्थित सारी महिलाएँ मेरी माँ है। उस दृष्टि से आप मेरी माँ हुई आज से मैंने ये सांसारिक जीवन त्याग दिया उनकी पत्नी रोने लगी बेटे आगये बहू आ गयी पापा जी मान जाइए पिताजी मान जाइए अंदर आ जाये उन्होंने कहा नहीं आप तो बहुत अच्छे है। जीवन चलाइये मैं तो भिक्षा मांगने आया था। दूसरे गाँव लटूरी सिंह सन्यास करोगे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ मुजफ्फरनगर सहारनपुर गाजियाबाद बुलंदशहर जिले में लगभग 40 कॉलेज ऐसे हैं जिनमें आईटीआई हैं जिनमें

मेडिकल कॉलेज हैं बारहवीं का स्कूल है। इंजीनियरिंग कॉलेज है। डिग्री कॉलेज है। जो महात्मा लटूरीसिंह के स्थापित किए हुए अगर लकड़ी एक अभिनय जीने के लिए 1 घंटे में इतने प्राकृतिक पहुँच सकते थे कि उन्होंने अपना जीवन त्याग दिया तो रामविष्णु की आज कल आऊँ संयुक्त होकर पृथ्वी पर आये हैं वो इस मनुष्य जीवन के अभिनय को जीने के लिए इतने हाथ में तो हो ही सकते थे कि पशु पक्षी से रोककर हो जाएगी मेरी पत्नी का है। मैंने कहा जाना चाहिए शिक्षक हैं आपने श्रीराम से प्रभावित होकर अपने प्रोग्राम कराया बहुत अच्छा है। क्या भविष्य में राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी प्रोग्राम की तर्ज पर अपने अपने राम अपने अपने रहीम अपने अपने बौद्ध अपने अपने अपने महावीर जैसा सर्वधर्म प्रोग्राम होगा क्या आदिवासियों के लिए भी कोई प्रोग्राम होगा अगर आदिवासी नहीं होंगे वंचित नहीं होंगे दलित नहीं होंगे तो राम भी नहीं होंगे रात की पूरी यात्रा होगी से रावली बनाया है। जिसे पढ़कर में बहुत हंसाया साहब ने कितने भोले हैं देखिये मैं व्यवसायी हूँ। व्यवसाय में रोज़ 50 बार झूठ बोलता हूँ। अपने राम को जीवन में उतारने की चेष्टा करता हूँ। पर कर्म क्षेत्र में अपने आप को अलग कर पाना कठिन महसूस होता है, असहाय महसूस करता हूँ। हमारे दर्शन करेगा बहुत मुश्किल काम है। जी आप ने सवाल पूछा है। मुझे भी नहीं सदा कोशिश में हूँ। लेकिन एक बात मैं आपको बता दूंगा थोड़ा मुश्किल लगता है। एक बार कर लो फिर मुश्किल नहीं लगता एक कदम भरने के बाद सारा सरल हो जाती आसान हो जैसे एक क्षण के सोना इसलिए मैं आपको निर्णय लेना और एक बार आपको कठोर निर्णय ले लो तो उसके पास सब सही हो जाता है। मैंने जीवन में दो चार विपत्तियां देखें जिन्हें तात्कालिक रूप से कहा गया लेकिन एक क्षण के 100 में इसे मैंने खुद से बात की और ये सोमाइ सा कौन सा है। ये सब है किअंधेरे कक्ष में दशरथ ने बुलाकर राम से कहा की बेटा का राज्याभिषेक नहीं होगा अपनी पत्नी से कहो कपड़े बजाओ ये सेकंड का सौवां हिस्सा है। एक क्षण में राम ने तय किया जो पिता कह रहे हैं वही करना है। ये सारा संघर्ष प्राप्त और पर्याप्त के बीच का संघर्ष जो हमारे पास प्राप्त है। अगर वो हम पर्याप्त मान ले तो संघर्ष समाप्त हो जाए पवन दीक्षित मेरा एक दोस्त है। उसका एक शेर सुनें एक बात सिखाई हमें आँखों की नींद में एक बात सिखाई हमें आँखों की नींद में इन सब तीर कर दिया ने सुनेगा की एक बात सिखाई हमें आँखों की नींदे चिड़ियों को झुकते देख रहा था। कि अचानक हंसकर कटोरा फेंक दिया एक फकीर फकीर ने कहा इसकी क्या जरूरत है। इसके भी क्या आवश्यकता है।

एक सवाल सारे सवालों में 60% मिलाएँ इसका मतलब ये सवाल तो बहुत ही प्रासंगिक हो गया भाई इसका उत्तर तो देना ही आवश्यक है। ये सवाल है कि माँ सीता ने सदैव राम का साथ निभाया हर कष्ट में लेकिन उसके बाद भी अग्नि परीक्षा लेने के बाद भगवान राम सीता का परीक्षा क्यों किया एक सवाल है। जो लगातार हैं और इतने लोगों के अंदर है। तो मुझे लगता है कि आज कुछ किया जाए इस सवाल का उत्तर तो जरूर दिया जाना चाहिए लेकिन उससे पहले जैसे मैंने कल कहा था कि मनुष्यता ने जितना बड़ा सपना देखा है। वो राम से बड़ा सपना नहीं देखा कि मैं की खुली आंख के सबसे सुंदर सपने जी जब जब जी गाड़ी अमिताभ चलिए अब प्रीत अपने एक देखें पांच आयेगी तो पाली नहीं अपने छोटे भाई की पत्नी का हरण कर लिया किस पर राम मंदिर मार दिया चुपके श्री लंका जीतने के बाद डिप्रेशन का जिम्मा अपने बड़े भाई की पत्नी मंदोदरी से मुझे ये किसी एक सज्जन ने पूछा किसी प्रश्न क्षमा पांच बार मानता हूँ। क्षमा मांगता हूँ। और आप के बारे में इतना खराब सोच रहा हूँ। बिलकुल कोई दिक्कत नहीं है। सोचिए क्यों की जो श्रद्धा के बल पर आएगी जो श्रद्धा ज्यादा चिकित्सा ही रहेंगी राम ने कोई प्रकृति पैदा की है। चुनाव सबके दुख से सही है। सहजता से मिल पाती प्रश्न भाई की कलाई की बाली को तो मार दिया मिशन की शादी का प्रतीक इसे कहते हैं संस्कृतियों का सम्मान करना भारत की संस्कृति में आदिवासी संस्कृति में ये चाहिए कि नहीं की आप अपने बड़े भाई की छोटे भाई की पत्नी के साथ विचार इसलिए के बाद ही कुमार ने संभाली को कहा नहीं करनी है। समय इसलिए मारा लेकिन जिस संस्कृति में वहाँ पे गए थे। वहाँ आराम से स्पेनी संस्कृति को आदर देने वाला ही रास्ता सच्चाई बन सकता उन्हें पता थाकि भैया जहाँ जाएँगे वहाँ मैं भी लगा लेंगे हमारे इस काम में पालक है। जो टीम में बच्चे कर रहे हैं मछली खाता तो मछली उनके संबंध में मछली खाता है। तो मैं बात कर रहा था। कोई सवाल उठ गया एकदम पकड़ लिया पहुँचे तो भारत हारे लाना उसने मुझे एक सेकंड सर इसमें जो मेन है। वो क्या जो तू समझ रहा है। तुमने काम के लिए भारत नहीं

लायी मछली लाये मैंने कही मछली के लिए आपको पता है। जहाँ रहने वाले पहली भी खाते होंगे तो जो संस्कृतियों को साथ लेने की कल्चर है। ये तो एक साथ लेने की कल्चर है। ये राम ने सिखाई है। मेरी और आपकी जिम्मेदारी है। इस हॉल में बैठे हुए लोगों की हम सब को हटा दें आज आपके पास में खबर छापी है। सारे फोरेनर जाती है। एक अखबार की खबर के मन में बड़ा अजीब सा लगा कि ये बहेस बदलनी चाहिए अरे में लिखा था। कि कुमार विश्वास को सुन्नी मुसलमान और सिख भारी संख्या में यानी वो अच्छी लग सकती है। कोशिश करेंगे 10 वर्ष में 15 वर्ष में इस देश में खबर ये है किफलां शहर में जयपुर में जोधपुर में रामपुर बात हुई और पता नहीं ऐसी क्या बात हुई है। मुसलमान क्यों नहीं जाना चाहिए उनका भी है। देवी तक की परंपरा पर भी दिन बात करूँ मैं किसी दिन सिख धर्म के इतिहास गौरवशाली परंपरा पर बात करूँ और भास्कर पर पड़ने मैं ये जानना पड़ेगी इस पर विचार करना पड़ेगा ऐसा क्या हो गया की पूरी महफिल में जितना आप ये कर लेंगे आपके किसी प्रिय दूसरे धर्म तो कहीं और है। उसके किसी आइकन पर चर्चा चल रही है और उसमें सारे हिन्दुस्तानी सारे मानवता के लोग बैठे हैं उस दिन आप मान लेंगे कि राम सिर्फ आपका नहीं है। वो कटा है। एक 1 घंटे का है। आपका वो निकलता ही नहीं किया कोशिश करता है। मेरी हिम्मत नहीं है। कुछ नहीं है। फिर ऐसा कोई नहीं पर लिखूं छोड़ो नहीं है। कुछ भी फिर ऐसा कोई खास कदम पर नहीं हूँ। मैं लेकिन वतन की खाक से बाहर नहीं हूँ। नहीं सर कल तमाचे हुआ था। ईश्वर अपनी सर्वश्रेष्ठ के साथ प्रति भरोसा कभी राम बनकर उतरा कभी मजदूर के रूप में उतरा कभी कृष्ण के रूप में होगा इतनी अवतार हुए कितने परंपरा ये हर बार इतना हमने हर बार उसे मंदिर में कैद कर दिया मैं नहीं डरता था। टाइम वो अलग समय था। हम संघर्ष से बचना चाहते हैं मेरे पिता का संघर्ष उससे पारी था। मेरे पिता 11 किलोमीटर चलकर करना चाहते थे। तस्कर के खिलाफ़ मेरी बेटी कार में जा और हमारे बच्चों के संघर्ष हो गयी है। तो अगर बस जो लेने आती है। स्कूल की अगर वो सो मीटर में थोड़ी कहा कर सकता हूँ। 15 वर्ष की आयु में चले गए थे। राम विश्वामित्र के 719 वर्ष पर मांग लिया था। मैडम मैं खराब है। राजीव अनुजनमित्र लेकर गए थे। और उन्होंने कहा कि यदि उन्हें लाभ चाहते हो दशक से कहा यदि इतने इधर मतलब हम इससे अगर चाहते हो यश और आपका जीवन पूरे आगे चलता है। तो मेरा नाम दे दो बस आने में दूसरी वर्णन किया दोनों को लेके चले विश्वामित्र महानिधि पाई श्याम को और सुंदर दो भाई दोनों चले विश्वामित्र ने रात को सारे अर्जुन के पास भी थी इसलिए अर्जुन का नाम राकेश अर्जुन के नाम है। उसको लड़ने के लिए गया था। बंद करें तो विराट के बेटे ने किसी अलवर के पास पूछा कभी तुम झूठ बोला है। नहीं है। उसने कहा ये हमारे हथियार लगे हुए हैं सकता है। उन्होंने कहा कि 12 नाम तेरे नाम बताइए की मेरा नाम भारत है। गिरी है। सब्यसाची है। कौन से हैं परंतु है। गुडाकेश है। पारे के बारे में नामों के बारे में बताये कितना पर विजय पाने वाला और लक्ष्मण को हाथी बता दीजिए जो भी पढ़ने नहीं जाएँगे चलो गुरु के साथ नहीं जाएँगे जो लोग अपने से बड़े से नहीं सीखेंगे उन्हें कुछ नहीं मिलेगा रहे थे। भाई बढ़ाने के लिए सब गए है।



आज कल क्या इतना पैसा टीचर लगा लेते हैं घर में बुला लेते हैं के पास गए कृष्ण पढ़ने के लिए वहीं सुधा मिले वहीं दोस्ती हुई गुरु रह गए थोड़े समय में विद्यालय के लौटाए बहुत ही बनाई जाती है। जिसमे हाँ खून के रख सकते

हैं इसलिए यहाँ पे तो आप सबने शरण गुप्त की बात की थी उनका जन्मदिन थाकि जब मैंने उसको थे। सीताराम कुटिया में मैं पूरी रात लक्ष्मण पहरा देती जा रहा है। जब कौन धनुर्धर है। जबकि भवन बस होता है। होता है। इस फकीर मैं क्या था। यार कभी पूछता है कि इसकी रक्षा में रत इसका मन है। मन है। जीवन है। ऐसा क्या इसके अंदर है। प्रबजी दबा देते कीमत चले तो मालिन्य मेटने इस लंका से नाश करने इस उपभोक्तावाद की लंका को नष्ट करने के लिए मेरे को मालूम नहीं मेरे स्वामी जो आई है। लोगों की लक्ष्मी ने ये गुड्डी आजमाई है। कैसे रहा है। जैसे हम लोग लेते थे। सूर्यवंशी जैसे लेते और आपने कहा कि सूर्य की तरह टैक्स देना जैसे सूरज टैक्स देना है। अब सूर्यवंशी टैक्स तो तुलसी में इसका अनुवाद करके बताया सूरज कैसे टैक्स लेता प्रथ्वी में जितना भी पानी है। वो हमारी कमाई है। वो जीवन है। उसे सूरज समेटता है। समुद्र से समुद्र का समेटता है। तालाब से तालाब का समेटता है। यहाँ तक कि हमारी अंजुरी हो चला है। उसको भी समय लेता है। आपको पता ही नहीं चलती तो वो सब टैक्स ले लेता और उस टैक्स के पानी को सूरज अपने घर नहीं रखता उसका बादल बनाता है और वहाँ बरसाता है।

जहाँ उसकी आवश्यकता जहाँ वो पहुंचना चाहिए रास्ता ऐसी होनी चाहिए कि जब टैक्स ले राजा जब राजस्थान सरकार टैक्स लें तो पता न चले कि कब कट गया अभी तो हमें प्रतिफल पता चलता है कि हमारा है। टैक्स कट गया आप काम ने कहा कि राजा से टैक्स लेके किसी को बताना चाहिए बेटा मुझे सूरज की तरह हम पूरे वर्ष लेकिन जैसे सूरज इस पानी से बादल बना के जब बरसाता है। तो सब हर्षित होते है। मज़ा आ गया क्या बात है। लेकिन उसी पैसे से जब वो फ्लाइओवर बनाया उसी पैसे से जब वो हॉस्पिटल बनाया उसी पैसे से विश्वविद्यालय बनाए तो हर आदमी के की स्टेट ने क्या जबरदस्त काम किया है। सरकार ने क्या बनाया है। वह मैंने कहा कहा उन्होंने कहा कि फर्स् हरसत सब जब बरसता है। पानी नहीं बरसता है। तो सब देखते हैं हर्ष के प्रसन्न होकर देखते हैं हर्ष तो हर्ष तो सब लखे है। क्रश अरशद सब अलग है। कर शक्ल केनतुलसी प्रकाश के सौभाग्य से भाग हो राजा जैसा होना चाहिए अब टैक्स लगेगा कैसे इसमें कितना लगे हाँ सुनियेगा दोहावली का धुआं कैसे टैक्स लगता था। राम के राज्य में मन माणिक महंगे की सब ज्यादा टैक्स किस पर होना चाहिए किस पे हीरे जब तक इस देश में एक बच्चा खाना पड़ता है। अब तक इस देश में यह आवश्यक है किहीरे पर टैक्स लगे मर्सिडीज़ पर टैक्स लगे महंगे की और बिना टैक्स करता है। छोड़ो सहब तीन जल नाज इस बात पर टैक्स नहीं है। जो पशु खायेगा जल पानी पर टैक्स लगना इस देश में पानी जो जो जीवन की आवश्यकता है। उस पर टैक्स है। मेरे महंगे किये सही नाज सी सोई जानिए राम गरीब शासन की जो है। उसके इसलिए सबसे पहला जो लेख नवजीवन में 1930 में लिखा बापू ने उसने इस बात का जिक्र किया और साफ कहा तुम्हें जीने की ओर से कहा इस राजा के राज्य में प्रजा दुखी है। उसको क्या दण्ड मिलना चाहिए नरक अधिकारी विषमता तू है।



रामराज बैठे तरणका हर्षित भाई ये सब का बाजार नुक्कर का कोई अगली पंक्ति ध्यान देने योग्य है। सांप्रदायिक विषमता इस पूरे देश में समस्या है। जिन पर हैं उन पर अधिक है और जिन पर नहीं है। उन पर बिलकुल किसी ने नक्सलवाद की समस्या है। इसलिए पूंजीवादियों के खिलाफ़ आक्रोश है। राम ने कहा सांप्रदायिक विषमता कोई सबके लिए मूलभूत आवश्यकता तो वही हुई है। भारत का संविधान 1947 के बाद जो 1950 किया गया भारत के संविधान की जो पहली कॉपी हैं जिसपर पूज्य बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के हस्ताक्षर हैं पूरी संविधान निर्मात्री सभा के हस्ताक्षर हैं उसके सबसे ऊपर कवर पर लिखा हुआ है। कॉन्स्टिट्यूशन भारत का संविधान और नीचे राम दरबार का चित्र बनाती है। वहाँ बैठे हो तो मैं एमबीए करना है। मतलब करना यूनिवर्सिटी ऑफ विक्टोरिया में भाषण देना था। न्यूज़ीलैंड में 3 साल पहले कौन सी पी के बहुत सारे बच्चे सुनने के लिए आया तो विषय था। प्लीज़ फाइन्ड ऑफ इंडिया 5000 उसके बाद प्रश्न सेशन होता है। तो बड़े सारे सवाल आए एक चीन का लड़का उठा जो करते है। उसने मुझसे कहा कि पूरी दुनिया से और मैं आपका पड़ोसी मेरे से कोई रिलेशन ही नहीं आई है। व इन रिलेशन पोस्टिंग आउट विथ ऋषि द होल वर्ल्ड ऑफ हाउ मेनी पीसी ब्रदरहुड है। व यू थिंक अबाउट आई ऐम जस्ट टु यू तो जीतने भी भारत में भी लड़के बैठे हुए थे। पाकिस्तान के भीतर क्या फंसा हिंदुस्तान का खलीफा लेकिन हम भी यहीं से गए मतलब अब मैं तुम्हारा पड़ोसी हूँ। मेरे साथ तुम्हारी मदद के लिए नहीं है। तुम्हें नहीं करते हैं ऐसा है। इफ यू वॉन्ट टू बीट मी अप आई मीन बाइ अगर विक्रेता की तरह मेरे दरवाजे पर तू आता है। तो मैं खरीदार हूँ। फ़ोन डोर सलमान सूर्य का ताप है। भवन की शक्ति है। सोने के किले में जाते हैं लेकिन रहते भगवान कई बार हमारे नहीं नहीं मैं देखता हूँ। मतलब पता है कि सोने के लालच में फंसे तो दुनिया से कट जाएँगे तो लगता नहीं आपको मंच करने मैंने कहा नहीं हमारी माँ है। नामक राजा की बेटी थी महाराष्ट्र से आयी थी बहुत समझाया था। शयन कक्ष में जाके किसी का गुजराती में कहानी आती है। ठीक है। ऐसा करना था। और उससे कहना है कि रामाज्ञा वो तुम्हारी गली लेकिन तुम्हारी हो गया प्रयास किया लेकिन जैसे ही राम का वेश धारण करता हूँ। मुझे तुम्हारे अतिरिक्त दुनिया की हर इसकी माँ महाभारत में पांच प्रकार के बारे में बताएँ हमने सबसे पहले बात अगर आप किसी को तो इसका मतलब सबसे कम मंत्रियों से परिचय हम आपको लाभ हो मिलने वाला लाभ पैसे चौथा। बट क्या है। आप किस खानदान इस मनीष इन सवालों का समझ है। तो इसलिए वो उनकी खुद की कोई गारंटी नहीं है। जिसका काम कर रहा है। इसमें कल भी आ रहे हैं सरकारी बैठे अधिकारी देख रहा हूँ। पुलिस में काम करने वाले लोग बैठे आपके पास जो स्टार लगा हुआ है। आपके विज़िटिंग कार्ड में जो अशोक चक्कर लगा हुआ है। तो भारत के 125, 00, 00, 000 लोगों के हस्ताक्षर से आपको मिला तो आपकी शक्ति एक आदमी की शक्ति से सड़क पर खराब हो का परिचय देते समय हनुमान ने नहीं बताया की मैं लेकिन रामपुरे मानस में या किसी कथा। में सेवक नहीं देते राग ने भाई कहते हैं कहते हैं मित्र कहते हैं साथ ही कहते लेकिन एक मंत्री नहीं ला सकते हैं जहाँ भगवान स्वामी के मैंने कभी एक शेर कहा थाकि एड्रेसनमिल सके वो शरीर को सामान्य कोंसा माना हो वो सुना मिल सके शरद को समान हो आपके सबसे पहले मित्र को गति मिलेंगे आप क्या करना है। वो कौन है। कॉल छीन लिया एक्साइल काट रहा है। 25 को आपकी कहानी का एक पात्र की तो वो नदी पार करके दिखा नदी पार करनी थी विशेष 14 बरस राम काम कर रही है।



अयोध्या का ऐसा एक हाथ वैभव आदमी सति एक ऐसा सामान्य आदमी थे। बट जिसके सामने गतिविधि राम आए हैं और राम ने नदी पार्क दामोदर इसे कहते है। हाँ राम रहीम के पास देने को कुछ जिसकी कृपा कटाक्ष से सृष्टि हो जाती है। जिसके एक बार सोच लेते है। मात्र से जीवन संभव हो जाता होगा साथ ही बंदे ने कुछ नहीं है। इसलिए समझती है। कौन कैसा है। समझती है। सीता के लिए सबसे बड़े संकट का समय है कि कब पति मालिक के सामने लाचार खड़ा है। क्या करूँ सीता ने अपने पति के हृदय के हित को जाने वाली सीता ने क्या कमाल किया बुखार के दे दी आप सोच के देखो की राम से शादी हुई थी मिथिला की बेटी थी किस बात कि मेरे पति का चेहरा किसी के सामने अपमानित दिखाओ हिंदुस्तान के महीना है।



विश्वविद्यालय में मेरे भाईयो को मेरे पिता के पास देखा भाई साहब आस-पास के बच्चे अक्षय बच्चे के पास मेरे किताबें इतनी विराट कोष में से कभी कुछ नहीं निकला लेकिन मेरी माँ को संदूक में से वो निकला जो भारतीय रिज़र्व काम करते हो बोले आज हम नहीं ले रहे हैं मारने का जब करके हमारे तो मतलब कहानी में इसका विस्तार पूरी दुनिया में है। ये भी समझ लेना मैं से कैलिफोर्निया तो मैं दुकान में चला गया किताब की दुकान मैं एक किताब थोड़ा सा मतलब आप ने ये कहा लेकिन इसमें काटे निकले हुए थे। मेरे पास नंबर आया था। फिर क्या हुआ था। कंट्री ऑफ उनकी नाइट में किताब पढ़ी आपने सबसे बड़ा विराम जब दसवीं छोड़कर उससे पहले अपने भतीजों को अपने भाइयों को सबको खान के बराबर यहाँ तक कि हनुमान के एक और सूत्र है। पाताल लोक का शांति के लिए तो पता है। आपको एक जगह है। एक देश है। हम उसको उस किताब में उस देश का भंडार है। वहाँ के नागरिक बाकी दीवार पर वहाँ के हर पत्थर पर एक बंदर बनाओ और ये माना जाता है किलाखों वर्ष पहले किसी बंदर नहीं है। बस अगर क्रोध को आप भारत की ओर से पीछे सीधा अच्छे नहीं नहीं तो सबको रास्ते जा के निकाल दिया मैं इस पर चर्चा होगी इस पर बहुत सारे लोग सब रुक गया तुम्हारा पूरा सीता माझी की माँ रात का कैसा रिलेशन है। ऐसा आप निकाल देगा क्या ऐसे पत्नी को छोड़ देगा नाम कैसा नाम है। करते हैं निकासी रघुवीर चलो और सीता के चरणों में कहानी सुनाई राजा राम सनेही के साथ जबरदस्ती ले जाऊंगा क्या खाया जैसे पार्क बच्चे कितना बड़ा आदमी हैं सब को उठा ले वेरी सॉरी ऐसा क्या हो गया कि दिन का रखने पर माँ जी तो मैं इतना प्रश्वास आ गया और कहा जी इसे मार कर संस्कृत से मुझे क्या नाम है। क्या कहते हैं महिलाएँ अपने कलेजे पर हाथ रखकर बताएँ पति के साथ रहते भी वो इतना सुरक्षित अनुभव नहीं करती सफाई के साथ पता है। वो क्षेत्र है। भाई और सीधा कहती हैं उस लपट से लकेश जिससे मेरी शादी हुई आपको क्या लगता है। सीता ने उठा दिया पोछा लगाते समय थोड़ा मत उठाना सीता की अशोक वाटिका में जो कालांश है। वो हमारे देश की शांति का नैतिक सत्याग्रह देखिए सीता पतन में हैं नहीं हम हमने नहीं है। बात यह है कि जब आप अनाचार के पानी के इसलिए ये दोनों भाई राम आपका विशेष रूप से सीता के साथ ऐसा करेंगे ये क्यों नहीं हुआ था। तो आपके पहले पता चला सर ये माना जाता है। आपके लें तो फैल गया वॉट्सऐप एक विश्वविद्यालय यहाँ से बचाने के लिए आता है। इससे पैदल होने के

अंदर कोई आवश्यकता नहीं होती ताकत बाल्मिकी रामायण थे। पहली बार मैंने कल भी बताया था। आपको नहीं न भाइयों ने पहला काम किया की चले स्पर्श राधा देवी सबसे पहले स्पष्ट है। अब आप सोच के देखिए कीचड़ ने स्पष्ट कर के सामने यह घोषणा कर दी की ये महिला नमक माँ बाप से मुक्त है। तो ये होता है। इसलिए उसके चरण स्पर्श करता हूँ। बाली का वध करते हैं हर माँ के अपहरण 1% दीवाली की रामायण में जब वन गमन होने लगता है। सीता विलाप करती है। यदि यह तर्क देती है कि मैं राजभवन से निकलूंगी मैं तुम्हारे मार के कंकर पत्थर साफ करूँगी आप को समझते हैं और जब नहीं मानती है। तो सीता को अपने साथ ले जाने का उपक्रम और ऐसा कहते हुए जो श्लोक आता है। ऐसा कहते हुए टिप्पणी आती है। उसमें राम ये कहते है कि बन छोड़ो मेरे लिए तो स्वर्ग भी तेरे साथ जाएगी न ऐसा कहने वाला रॉ निर्वासन कर सकता है। उत्तराखण्ड बाद में जोड़ा गया ऋषि वाल्मिकी करते ही नहीं राम की महिमा को तंग करने के लिए ऐसी योजना बनाई गई तो उसमें कोई बात ऐसी जुड़ी चार बातें ऐसी हो गई शंभू को पद से लेकर उत्तराखंड पर मैं अलग से किसी दिन बोलूँगा कांड में ऐसी इससे बाते हैं जिनको देख के आपको पता चलेगा की ये अलग से जुड़ा है। आप देखिएगा कि जब वनवास हो रहा है। वन गमन हो रहा है। तो सीता को रामकोला के नमस्ते काशी में रहने वाला है। रेशम का कॉपी नहीं पहनता तुम्हारा नाम मंगलम यात्रा विभूति विभूषणं साथ काशी ऐसी सीता के हाथ में तपस्वी का नाराज हो गए वशिष्ठ ने कहा वनवास राम का हुआ है। इसे लेकिन जब छाती है। तो आप चाहते हैं कि सामने वाला और उत्पाद गुरु वशिष्ठ ने फटकारा सीता निवास लेकिन सीता को पहनना नहीं आता उसमें आप सोचिये पूरी सभा है। माँ है। भाई अगर सब खड़े हुए हैं गुरुवार शाम बाहर खड़ा हुआ है। इसमें तो अगली टिप्पणी है। उस पर आप दांत के समर्थन में खड़े हो की अपवाद हैं जूते जो तो उस महफिल में राम ने वो काम किया है।

प्रेम करने वाला पति कर सकता स्वयं आगे बढ़ें और उन्होंने सीता को अपने हाथ से वस्त्र पहनाया प्रमाणित रामू उधर मता हमारा सीता के ऊपर ही स्वयं सीता को से वस्त्र पहनाया जो आदमी अपनी पत्नी के सार्वजनिक अपमान को अपनी छाती पर झेलता हो वो अपनी पत्नी को किसी के कहने पर जंगल भेज देगा कैसी वॉन्ट मैक्सिमाइज प्रॉफिट प्रोबेबिलिटी ऐडमिट माइज़र इसके ऑप्शन इसलिए कहने पर जंगल में देखा कैसी मूर्खता पर बात है। अग्नि परीक्षा के बारे में लोग बात करते हैं राम ने भीषण से कहा युद्ध जीतने के बाद हो स्वच्छ वस्त्र पहनाकर ले के आओ सीता ने कहा कि मैं बिना इस मान के पति का दर्शन करना चाहें मैंने कहा की प्रभु ने तो आगया दिया है किआप कर ले आप कपड़े पहन ले नहीं कपड़े दे दिए गए माल की मंगवा दी गई सीतापुर जब सीधा होने देखा तो उनका हम लोग हमलावर हो गया अब आप समझेंगे कि इतने लंबे समय के बाद राम इसके बारे में गलत नहीं था। और ये करने के बाद समाज गलत सोचेगा सीता ने कहा मैंने प्रभु से अपने पति से अन्य प्रेम किया है। अगर क्षण भर भी मेरा मन राम मेरी रक्षा करें उसमें मतलब शिक्षण होगा एक शब्द है। जितनी महिलाएँ बैठी है। सीता ऐसी नहीं है। ये सब चलता है। सब ये होता रामायण की कथा। एँ जो बाइक के सीता का तो उधर कितना बड़ा है। सीता का स्वाभिमान इतना बड़ा है। कालिदास ने रघुवंशम् में जब सीता को जंगल में छोड़ा लक्ष्मण से कहा कि बेटा छोड़ के आओ इस कहानी को बनाया उन्होंने तो सीता से लक्ष्मण ने पूछा बहुत देर तक खड़े रहे भाभी के सामने से पूछो लक्ष्मण ने पूछा कि माँ मेरे लिए कुछ आगया है। तो कालिदास लिखते हैं सीता कहती हैं लक्ष्मण जी तो स्मृति सौम्य चिढ़ाया जी बाहर हूँ। मैं तुमसे बहुत खुश बहुत समय तक जीवित साहस फिर भैया के लिए कुछ आ गया सीता का चरित्र तो एक हाँ क्या बोलती है। एक शब्द बोलती है। आपके अंदर से आंसू खीचेगा वो शब्द वहाँ कभी लिख रहा है। तो कौशल दिया उसके पास लिखने का राजीव है। भाई से कुछ कहना वॉट जस्ट सर आज उस राजा से मेरी ये बात पति नहीं उत्तरखंड आप पढ़ लीजिये वो वाल्मीकि का कथन ही नहीं है। वाल्मीकि स्टाइल ही नहीं है। जो यहाँ विज्ञान ज्ञान ही बैठे हैं जिनका परिणाम उनसे चुनौती देता हूँ। वाल्मीकि रामायण जहाँ से कहानी शुरू हुई है। जहाँ से जुड़ें सीता को निर्वासन दिया गया ये कहानी कभी नहीं थी ये बाद में जोड़ी गई है। क्योंकि आप उत्तरखंड की भाषा पढ़ी है। वो बाल्मिकी की भाषा ही नहीं है। हमारे मंचों पर कई लोग उस्तादों से गज़ल लिखवाकर ले आती आप सबको पता है। हमारा उर्दू का एक शायर है। ज्यादा चाबी उसका एक शेर है। उत्तरकाण्ड प्रदर्शन मुझे वो शेर याद दूसरों से कहलवा के फसल लाते जो दूसरों से कहलवाकर गज़ल लाते है। जब

आपने तो खाते इसी पे विचारपूर्वक बल कांड का प्रति और चक्रित करके लिखा गया ताकि उत्तराखंड की वैधता दिखाई देते तो आज के बाद इस सभा में आपसे कोई भी पूछे सीता का निर्वासन हुआ तो उससे कहना कि भाई सीता का कभी निर्वासन नहीं हुआ दिवाली की उस समय जीवित बाली के लिए जीवनी लिखी है। ऑटो बाइक रैली कल एलिमेंट है और समाप्त कर दिया कहा युद्ध कांड पर और युद्ध कांड के बाद में कहा कि इस प्रकार राजा ने राम ने 11, 000 वर्षों तक राज्य किया जब एक बार बात कह दी और कथा। समाप्त हुई ज़ोर से बोलिये इसलिए वाल्मीकि ने योगबल से देखा और वाली भी अपने आश्रम में ही सीता को देख रहे हैं राम मिलने आए हैं नारद ने खुद ने कहा है। 11, 000 वर्षों याद किया है।



तो आज के बाद से इस कहानी का एक प्रसंग आप आगे से ध्यान रखेंगे शंभू को और सीता का परित्याग यार ये कोई कहानी राम को दलित विरोधी दिखाएँ आदिवासियों का विरोधी दिखाने के लिए और राम को स्त्री विरोधी दिखाने के लिए जिन लोगों को भारतीय आचार विचार में आस्था नहीं थी उन्होंने षड्यंत्र को तो एक बात आपसे मान के चलिए गा ये उत्तराखंड में जितना कुछ तो है। रात के बारे में अपने श फैलाने के उद्देश्य से उसकी सुधि और यहाँ बैठे तमाम लोगों से मैं निवेदन करता हूँ। अपने अपने धर्म गुरुओं से अपने अपने अपने अपने कथा। करने वालों से कहियेगा की आज के बाद से इस प्रश्न को बोलना बंद करें आप बोल रहे हैं इसलिए जनता विश्वास कर रही है। आने वाला हमारा जैसी माँ अन्वेषण गुप्त की जयंती थी वैधीकरण को अपने को पहुंचाया जब पंचवटी में तो कहीं बताती है। बेटे से जी जी आकर करती आपको बता दिया ज्यादा बेटा तुम्हें याद है। आराम से कहती है। क्या कहीं मैं खुद ही अपना कब आराम दिया है। माता सहो प्रदेश में भागा होने पर बहुत आहत होते मुंबई राम राम कहते है कि हम लोग तुम्हारा नाम जानता है। इस कारण है। कुछ खेत मानता है। साहब ने कहा कि कहीं से आ रहे एक लाल की माई जिस जमीन है। जहाँ भारत सभा पागल सी प्रभु के साथ सवा चिल्लाई 100 बार धन्यवाद एक लाल की ऐसा नहीं घुसने पर सबसे पहले कहीं के पैर छुए आप सबको मैंने कल बताया राम किसी महिला के बारे में के बारे में लेकिन हमारे यहाँ प्रवाह बहुत है। हमारे यहाँ पे बहुत खेलते हैं हमारा कम्यूनिकेशन का देश है।

एक बात गाँव में फैलते पूरे इलाके में फैल अलग अलग तरीके से तो सबसे पहले तो अपनी करिए मैं तर्क से सिद्ध कर रहा हूँ। आज समय कम है। कल भी समय कम था। हर बार राम की बात करते समय समय कम पड़ता है। समय कम है। इसलिए सबसे पहले अपने मन से स्वीकार कीजिये ऐसा आदमी ये कैसे होता है कि अपने भाई के बारे में ऐसा कहते हैं वैसा नहीं तो सीता का जिस पर इतना भरोसा है। जिसके प्रति इतना विश्वास है किवहाँ बंधन में रहकर भी बाध्य नहीं है। वो ऐसी मूर्खता के अगर तो सर अगर आपको अपने भाई पर भरोसा है। अगर आपको अपने पुत्र पर भर आप सच्चे अंदर से मनुष्य तो आपको अपने आराम पर भी भरोसा होना चाहिए।

5.2.2 कौटिल्य अकादमी जबलपुर में दिया गया वक्तव्य—



वीडियो की स्क्रिप्ट—

संस्कारधानी जबलपुर के आप सभी सुधीर श्रोताओं को मैं हिंदी की ओर से प्रणाम करता हूँ कविता की ओर से प्रणाम करता हूँ। सारे देश के और दुनिया के अलग-अलग नगरों में भाषण देते समय, बोलते समय, काव्य पाठ करते समय मैं यह वस्तु मानता हूँ कि उस जगह में जो कुछ हुआ है। उसका इतिहास आपके साथ-साथ चलता है। जबलपुर किसी चेतना संपन्न व्यक्ति के लिए तीर्थस्थल की तरह है। हिंदी का व्यक्ति होने के नाते भाषा का व्यक्ति होने के नाते मेरे लिए जबलपुर पुण्यक्षेत्र है। जबलपुर किसी भी चेतना संपन्न व्यक्ति के लिए तीर्थ की तरह है। हिंदी का व्यक्ति होने के नाते भाषा का व्यक्ति होने के नाते मेरे लिए जबलपुर पुण्यक्षेत्र है। जहां सेठ गोविंद जैसा महनीय नाटककार हुआ या हरिशंकर परसाई जैसी बड़ी विभूति हुईहै और आज ही जब मैं आ रहा था जहाज में तो हमारे एक वरिष्ठ वकील साहब मुझे मिल गए तो मैं उनसे कह रहा था कि पूरी दुनिया घूमआया मार्केटिंग अलग चीजहै। पैकेजिंग अलग चीज है। निगर को अमेरिका की तरफ से दिखाइए या कनाडा टोरंटो की तरफ से दिखाइए जो भेड़ाघाट में अपनात्व है। मां नर्मदा में वह दुनिया में आपको लगता है कि संगमरमर की चट्टानें आपसे बात करती हैं। आपको लगता है कि वहां जो मांझी है। जो आपका मल्लाहहै। वह आपसे जिस मनहर जबलपुर भाषा में बात करता है। वह भाषा का लालित्य बोले जबलपुर निजी रूप से बहुत ही महत्वपूर्ण जगह है। कवि सम्मेलन की शुरुआती दौर में जब मैं स्वयं ग्रेजुएशन में पढ़ता था। और इंजीनियरिंग से मुंह बंद के बाद स्वयं के अस्तित्व से जूझ रहा था। पहली बार यहां एक मुझे हो गया होगा 2 सितंबर को इस साल मुझे कवि सम्मेलन के मंच पर 30 वर्ष हो जाएँगे17 वर्ष की आयु में ग्रेजुएशन के पहले साल में मंच पर चला गया था। और ग्रेजुएशन के पहले साल में ही जबलपुर में मुझे तमारी चौक पर कवि सम्मेलन अनुराधा मुझे याद है। आज भी उसमें मैं था। और उसे समय के हिंदी के सारे बड़े टॉप जितने भी हुआ करते थे शैलचतुर्वेदी हो और मुरादाबादीहो सब लोग थे और एक छोटे से कृष्काय युवक को अभी भी मेरी काया को विशाल और विषाद नहीं है। तब तो और ही छोटा था। मैं बहुत मन से सुना था। और आत्मविश्वास मुझे मिला इस जगह हमारे अध्यापक पर जो पढ़ा रहे हैं। नगर के महीने लोग हैं। नगर की प्रथम नागरिक की उपस्थिति है। मैं सबके प्रतियोगिता बहुत के साथ कहना चाहता हूँ कि पिछले 70 वर्षों हमारी शिक्षा परंपरा का हमारी संस्कृति की परंपरा का जितना लोग हुआ है। उतना हिंदुस्तान के किसी वैचारिक आक्रमण में भी नहीं हुआ भारत के ऊपर इतने आक्रमण हुए कि मैं कई बार गिनतियां करता हूँ तो हथेली पर ही उंगलियां पड़ जाती है। पुर्तगाली अंग्रेज कितने प्रकार की संस्कृतियों ने हमला किया है। लेकिन उसके बाद भी हमारा संस्कार और हमारी भाषा और हमारी चेतना जीवित रही लेकिन पिछले 70 वर्षों में चला की आजादी की लड़ाई

जबलपुर में भी लड़ी गई इसके बाद शिक्षा का क्या करेंगे जिस गरीब में अब्दुल रहीम खान खान अकबर के समय में इस देश को नाप गए बीघा यानी की पूरी दुनिया में राज करने वाले हिंदुस्तानी अमेरिका के राष्ट्रपति के 18 डॉक्टर की टीम में 13 भारतीय बेटे बेटियां माइक्रोसॉफ्ट चलने वाले हिंदुस्तानी अपना देश नहीं चल पाए और इतना समय बिताने के बाद सामाजिक जीवन में इतना समय बिताने के बाद सामाजिक संघ करने योग्य मानना है तो मंच के पीछे बैठे हुए मंच पर खड़े हुए सामने बैठे हुए इनमें से किसी व्यक्ति से आशा मत राखी ये क्योंकि राष्ट्रीय प्रगति नहीं की है। हमने इंडिविजुअल प्रगतिया में पहली बार जापान गया तुम बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहां जो मॉल में या किसी सरकारी बिल्डिंग में कहीं भी जाइए तो चढ़ने के एलीवेटर होते हैं। उनमें सभी लोग सीधे आपकी तरफ खड़े रहते हैं। गुड्डू को संभाल जा रहा है। निश्चित रूप से विश्व में दूसरी व्यवस्थाओं को देखने का अवसर मिलता है। जनप्रतिनिधियों को लाइन से लोग खड़े रहते हैं। पूरी ट्रैन उतारती है। उसके बाद लाइन से लोग चढ़ते हैं। लेकिन क्रिकेट अच्छी खेलता है। सचिन तेंदुलकर राजनीति में राष्ट्रीय चरित्र क्या पैदा किया आज अगर कौटिल्य एकेडमी आप सबको इस बात के लिए प्रेरित कर रही है कि आप कल कलेक्टर मिले आपका डिप्टी कमिश्नर मिले आप डीएसपी मिले तो यह काम कौटिल्य एकेडमी का नहीं था। यह काम स्टेट का था। शिक्षा स्वास्थ्य सुरक्षा पानी बिजली यह राज्य का काम है। जो पॉलिटिकल साइंस बच्चे पढ़ते हो कि मैं एक करोड रुपए के आसपास टैक्स देता हूँपहले केवल इनकम टैक्स देता था। नई सरकार आई है। मां पर बैठी है। कृपा हुई तो जीएसटी भी लगी कविता पर अगर मेरी कमाई का एक हिस्सा राष्ट्र के निर्माण के काम आता है। नए आयुक्त आते हैं। नए अस्त्र बनते हैं। नई पुल बनते हैं। नई सड़क बनती है तो मुझे शहर देना चाहिए। इस राज्य के नागरिक होने के नाते देखना चाहिए। पर मैं अक्सर इस बात पर सोचता हूँ 18% गस्त देने के बाद स्वामी रामदेव जी मिले मुझे एकदम मुझसे कह रहे थे कि गोमूत्र पर लग गया अरे मैंने कहा भाई लेकिन मुझे एक प्रश्न आतंकित करता है। जिसका उत्तर मुझे राजनीति से भी नहीं मिलता मैं स्वयं राजनीति में हूँ और जैसा हूँ आपको बताइए कि दूसरे जोड़ी अपने वाले से भी नहीं कहा जाता लेकिन एक प्रश्न मुझे व्यक्तित्व करता है। हम टैक्स देते हैं। किसी भी प्रकार का देते हो इनकम टैक्स देते हैं। नोएडा में गाजियाबाद में वहां अक्सर बिजली जाती है।



समस्या बहुत ज्यादा आती है। थोड़ी कम हुई है तो मैं एक 25 किलोवाट का साइलेंट जनरेटर सेट लगा रखा है। पता नहीं चलती कब गई कब आई यानी कि विद्युत का निजीकरण हो गया सरकार का काम था। सरकार ने दी नहीं आता है। वह इतना शानदार है कि घर में कीड़े मारने हो तो पानी का पूछा लगाइए तो मैं एक समरसेबल लगवा लिया है। उसमें से अच्छा पानी आता है। यानी की पानी का निजीकरण हो गया उसके बाद सुरक्षा की स्थिति है कि कोने पर लोग

चेन खींचकर भाग जाते हैं। महिलाओं की तो मैं एक सिक्योरिटी एजेंसी से चार गार्ड खड़े कर लिए ना हो तो यानी कि मेरी सुरक्षा जब मैं अपनी बेटी को पढ़ने के लिए सोचा कि यह कहां पड़े तो मैंने सोचा कि सरकारी स्कूल जिसमें मैं पड़ा मेरे पिताजी पड़े तो देखा कि स्कूल में कभी बिल्डिंग नहीं है। कभी गुरुजी नहीं है। कभी कुछ नहीं है ही नहीं स्कूल की हालत खराब है तो मुझे डीसी में पढ़ना पड़ा यानी की शिक्षा का की निजीकरण तो सरकारी अस्पताल से आप सीधे कहां जाते हैं। उससे बेहतर है कि आप दूसरे अस्पताल जाए यानि कि स्वास्थ्य का भी निजीकरण हो गया तो भाई साहब जब मैं आपको पैसे दिए क्या आप मुझे शिक्षा दें स्वास्थ्य दिन सुरक्षा दिन पानी दे बिजली दे और यह क्या हुआ है कि आपको क्या आप मुझे शिक्षा दें स्वास्थ्य दिन सुरक्षा दिन पानी दे बिजली महापुरुष पार्टी से आती है। वह जानती है। मैं इस मुख्यमंत्री को शुभकामना दे दी थी प्रधानमंत्री बन गया हमारा वाला ले ही नहीं रहा तो उसको शुभकामनाएँ कि आप बड़े पदों पर पहुंचेंगे लेकिन दो-तीन सूत्र वाक्य जो मैंने सीखे हैं। मैं किसी महानगर में नहीं पड़ा जबलपुर जैसी संस्कारधानी जहां इतना संस्कृति का बड़ा प्रभाव रहता है। माता नर्मदा के किनारे मेरा दुर्भाग्य की मैसेज शहर में पैदा नहीं हुआ मैं एक छोटे से कसमे में पैदा हुआ 150000 की आबादी में व्यापारिक छोटा सा कस्बा था। और मैंने जो जाना है। जो सीखा है। जो भी किंचित उपलब्धियां है। जीवन में वह एजुकेशन की वजह से नहीं है। वह लर्निंग की वजह से दो शब्दों का अंतर प्रारंभ करेगा पूरी व्यवस्था अपने एजुकेशन पर टिका दिए आपकी लर्निंग नहीं है कि आप अपने गांव में रहने वाले अपने पिता को अपने बाबा को रसोई में काम करने वाली मां को अशिक्षित समझते हैं। और रिसेप्शन पर बैठी हुई लड़की से चारबाग के अंग्रेजी के बोलती है। उसे आप शिक्षित समझते हैंकुकरी क्लास में 3 महीने का क्रैश कोर्स करके आया हुआ आपको कर अपनी पत्नी आपको लगती है। से ज्यादा पता है। लेकिन कलेजे पर हाथ रखकर बताइए मेरी मां 80 वर्ष की है।



हम 20 लोग घर में इकट्ठे हो जाए सारे भाई बहन या वह अकेले पिताजी के लिए भजन तैयार से बात करते हुए कड़ी बनाते समय उसने मसाले दानी में जितना रिंग डाल दिया ना जुबान के नीचे उतरना जवान के ऊपर चढ़ा या था। अपने गुरु के पास अपने बड़े लोगों के पास बैठकर शिखा इसलिए हम और शिक्षा शब्द हम ले मैं आप सबको एक होमवर्क देता हूँ कि आप जाएगा गूगल के लिए भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में दिया गया भाषण पढ़िए वह हिंदी में भी उपलब्ध है उसे देश में एक दशक उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम तक घूमा हूँ और मैं एक बात जान गया हूँ कि उनकी शिक्षा स्थित उनके आदर्श और उनकी आस्था इतनी दृढ़ है कि हम 1000 साल शासन करने हमने बदले नहीं पाएँगे एक ही तरीका है। लॉर्ड मैकालेने का एक ही तरीका है। उनके अंदर कंपनी का भाव भरी है। परिसर भरिए तब उन लगेगा कि यह हम छोटे हैं। कंपनी का भाव भरी है। इंफिनिटी कंपलेक्स भरिए और अपनी शिक्षा उन पर थोपिए तब उन लगेगा कि

यह बड़े हैं। हम छोटे हैं। और आज विश्वविद्यालय में जायेंगे आप अधिकतम परिषद में जाएगा आप आपको आपको बोलने वाले कहेंगे कि स्पेन में जो पुरस्कार मिला है नोबेल का उसे लड़की ने यह वाली लाइन लिखी है। अल्जीरिया के ने यह कहा था। अल्बानिया का एक चिंता की कहता है कि उन्होंने पढ़ा नहीं उन्होंने भारत जाना नहीं है। दो प्रकार के लोग है। क्या कहेंगे आपको बोलने वाले कहेंगे कि दो प्रकार के लोग है। सत्ताएँबदली 77 के बाद से जब श्रीमती इंदिरा गांधी दोबारा आई राजनीति का मंच नहीं है। पर विश्लेषक भी हूँ तो उस दृष्टि से सोचता हूँ तो उन्होंने सोचा कि मेरे पराजय का क्या कारण था। तो उन्होंने पाया कि मेरी पराजय का कारण कवि थे, लेखक थे, प्रोफेसरथे, बौद्धिकचिन्तक थे **तो** उन्होंने काम किया की संस्थाओं के ऊपर नियंत्रण प्रारंभ किया और ध्यान रखिए कला, संस्कृति, शिक्षा ये नियंत्रण नहीं मांगती यह प्रबंधन मागती है।

विश्वविद्यालय का कुलपति तो मेरा सेवक है। , मुझे प्रणाम करें उस दिन से शिक्षा व्यवस्था का नाश हो जाएगा। वो केवल वहाँ प्रबंधन के लिए नियंत्रण के लिए नहीं है। । एक शौर्य वंश के बड़े से बड़े राजा भी गुरु के आश्रम में प्रवेश करने से पहले अपना मुकुट बाहर रखते थे, अपने हथियार बाहर रखते थे, अपनी चप्पलें बाहर रखते थे, फिर प्रवेश करते थे, महर्षि कण्व के आश्रम फिर प्रवेश करते थे। महर्षि वशिष्ठ के सबसे बड़ा नाम कौन मानस भवन में खड़ा हूँ राम? राम पढ़ने के पढ़ने को ही नहीं आया। ये जो आकर सोफे पर बैठे हमारे बड़े लोग और महत्वपूर्ण बैठे थोड़ा सा पैसा आ जाएगा। ट्विटिर लगाया जाता है। बच्चे के लिए। राम का ट्विटिर नहीं आया, गुरु ग्रह गए उठाई। अल्प काल, विद्या सब पाई। । बड़े आदमी थे। दशरथ बड़े आदमी थे चाहते तो पांच ट्यूशन लगा देते लेकिन नहीं वह पढ़ने गए कृष्णा संदीपन ऋषि के यहां पढ़ने गए जहां उनका सुदामा से परिचय हुआ और वह मैत्री बाद में कहां फली यानी कि गुरु पद था। जिसको अपने शिक्षक में बदल दिया तो मैं मानस भवन में खड़ा हूँ इसलिए मैं मानस से बात करता हूँ मैं आज आपको नए सूत्र देने की कोशिश कर इसके बहाने दृष्टि देखिए जीवन में सबसे सरल जो आपको लगता है। यार यह तो राम की कहानी है। यह तो हनुमान जी का हनुमान चालीसा है। इसको क्या पढ़ूं मैं वहीं से आपका विजय का सूत्र निकले गा डार्विन की थ्योरी महापुराण महोदय बताई जाती है कि हमें हमको पश्चिम वाले कहते हैं। कि हम बांदा से आदमी बने हम मैंने कहा तुम बने हो तुम बनोगे भाई हम तो नहीं बने हैं। बोले आप कैसे बने हमारे पुराने हमारे शास्त्रों में सीधी भीम भीम विकासवाद ऐसा नहीं कि पहले आदमी बन गया हजारों साल पहले लिखे गए 2000 4500 साल पहले लिखे गए पुराण हमारा पहले पुराण मत्स्य पुराण है। मस्त अवतार वह किस में चलता है। पानी के अंदर दूसरा कौन है। कूर्म अवतार कछुआ वह किस में चलता है। पानी के अंदर पानी और जमीन दोनों पर तीसरा कौन है। वराह अवतार जो पानी और जमीन के बीच कि कीचड़ को भेजता है। यह नहीं देखे एलोकेशन हो रहा है। डेवलपमेंट हो रहा है। मछली से कछुआ कछुआ से नहीं बारह और उसके बाद बारह के बाद क्या आया वामन अवतार आदमी बड़ा पैदा नहीं हुआ पहले छोटा सा पैदा हुआ जिसमें ढाई गज में पृथ्वी नवी फिर अवतार आपके प्रारंभ हुई यानी कि विकासवाद की थ्योरी आपकी आपके स्वास्थ्य में थे और आप डार्विन में घूम ढूंढते रहे क्योंकि आपको आदत पड़ गई थी बाहर देखने की आपको आदत पड़ गई थी पराई लोगों के गुण गुना पर मुक्त होने की और मेरा सदा मानना है। जो आपके पास है। वह इतना महत्वपूर्ण है कि आप बाहर नहीं देख सकते तो आप राम से चली है। अपने पुत्र पूरा सिस्टम आप देख लड़की का रिश्ता देखने जाते हैं। तो क्या कहते हैं। मैं कस्बे में पैदा हुआ अजी इनकम कैसे में इंस्पेक्टर है। हाथ का काम हाथ का कोई काम नहीं है। अपना कुर्सी पर बैठता है। पहले काम हाथ इतना खराब चीज है। यह जो पृथ्वी पत्थर ने दिया है। जिस पत्थर ताला से तरह से अजंता एलोरा उगला है। पहाड़ों में यह इतना सामान्य कम चिंपांजी और हम में अंतर जानते हैं। आप चिंपांजी शब्द वही काम करता है। जो हम काम करते हैं। वह एक काम नहीं कर सकता जिसके कारण मनुष्य हैं। और वह चिंपांजी रह गए उसका यह वाला अंगूठा इस वाली उंगली से नहीं मिल पाता ताकि वह पेन थाम सके ताकि वह कौन सी थाम सके ताकि वह चीनी थाम सके यह केवल मनुष्य करता है और फिर हमने कहा हाथ का कोई काम नहीं होना चाहिए। हमने उसको पीछे कर दिया हमने उसको पीछे खींच दिया तो मानस भवन में आज मैं खड़ा हूँ सबसे पहला सूत्र है। आपकी सफलता का जो मेरे जीवन में है। वह जिज्ञासा गुरुओं से भी अनुरोध है औरजो यह बच्चे पड़े हैं। उनसे भी

अनुरोध है। जिज्ञासा को आधा देना सीखिए हमारी पूरी शिक्षा में व्यवस्था में रहते हैं। गैस सब बच्चा तो मैं गया था। एक पॉइंट मी बैलेंस मीटिंग में एक बार तो मैं वहां देखा था। कि सब पहले बात चल रही थी मैडम बता रही थी बोली आपका बच्चे बहुत अच्छा है। चुप बैठा रहता है। कभी पत्रों नहीं कुछ सवाल नहीं पूछता तो मैं अपनी पत्नी से कहा कि मैं इसके मां-बाप से बात करना चाहता हूँ बच्चों का इलाज कराएँगे उसने कहा आप झगड़ा करेंगे यहां पर क्या यह कैसी बात है कि क्लास सबसे अच्छी की कौन सी जहां से शोर नाता हो लड़का वह सबसे अच्छा बच्चा कौन सा जो चुप बैठे हो कोई फालतू बात ना पूछता हो जिज्ञासा को आता दिया इस संस्कृति ने जिसमें आप पैदा हुए अपने कहानी सुनी आदम हवा की संतान में पश्चिम कहता है। आत्म हुआ का क्या कसूर था। क्या था। जी एक बैग था। जो था। स्वर्ग का जिनको आगे बहिष्ट करते थे स्वर्ग एक बैग उसमें एक सहयोग लगता था। उन दोनों को क्या पता कि यह खाना है कि नहीं खाना उन्होंने सब तोड़ के खा लिया सब तोड़कर खा लिया तो खूब तो उसने कहा कि तुम बाहर निकल जाओ तुम दोनों पृथ्वी पर जाओ उन्हें बगेबहित बहिष्ट से बाहर कर दिया गया सुनी है। कहानी आत्म होगा कि जिसमें सब खा लिया जिससे वर्जित फल कहते हैं। फोरबिडेन फ्रूट उसे खा लिया इसलिए हमारे माता-पिता हमारे पूर्वज आंड हुआ जिसको जिज्ञासा हुई कि यह क्या है और उसमें उनको दंड मिल गया कि बाहर जाओ और हमारे यहां क्या हुआ हमारे यहां छोटे से बच्चे हैं। नहीं सूर्य को सब समझा बचपन में और कहां मुझे सीखना है। किसने हनुमान ने तो उसे ब्रह्मा ने आशीर्वाद दिया उसकी जिज्ञासा का परिणाम दिया उसकी जिज्ञासा को आवश्यक किया क्योंकि देखिए हनुमान को इस जिज्ञासा के बाद दूज कहा गया शब्द का मतलब क्या है। संस्कृत में बहुत अच्छी भाषा है औरउसमें आप पूछिएगा तो तो वह अर्थ स्वयं बताता है।



मेरा मेरा दुर्भाग्य है कि मैं संस्कृत का विद्यार्थी नहीं रहा मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा पर जो कुछ भी मैं आज पड़ोस से बैठकर सीखा दूज क्या है। आपके दो जन्म होते हैं। एक जन्म जब आपको आप पैदा हुए आपको पता चला कि मैं कौन हूँ? मां की गर्भनाल से जुड़े समय आपको पता नहीं चलता कि मैं कौन हूँ?? मां जो खाती है। वह आप कहते हैं। मां जब सोती है तो आप सोते हैं। मां जब जगती है तो आप जागते हैं। पहली बार जब गर्भनाल से आप अलग हुए तब आपको पता चला तो मैं पता चला कि मैं एक स्वतंत्र इकाई हूँ यह मन है। इसकी एक खुश भी है। यह दूध पीना है। यह दूसरे लोग दिखाई दे रही है। आवाज़ हैं। यह आपके ज्ञान हुआ कि मैं कहां हूँ, कौन हूँ? दूसरा ज्ञान दूसरा जन्म दूसरा जन्म हुआ कि मैं क्यों पैदा हुआ हूँ मुझे करना क्या है। मेरे जीवन में उद्देश्य क्या है। तुम्हें जितने लोग यहां बैठे हैं। रात को सोते समय यह सोचना कल सोचा परसों सोचना एक हफ्ते सोचा कि मैं पैदा क्यों हुआ हूँ मुझे करना क्या है। मैं कौन हूँ? मैं आया किस लिए हूँ मैं इसलिए थोड़ी आया हूँ कि मैं सुबह खाना खाऊं की शाम को खाना खाऊं सो जाऊं सुबह जो है। वह मोदी जी के स्वच्छता अभियान में चला जाऊं इसके लिए थोड़ी पैदा हुआ हूँ मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है तो हनुमान को बताया गया कि तेरा जीवन जीवन का उद्देश्य यह है। पर तुमने यह अपराध किया है। इसका दंड यह है कि कि तुम इसे तभी याद

कर पाओगे जब कोई याद दिलाएगा तो एक जामवंत आए जिन्होंने कहा की भाई तुम इस काम के लिए पैदा हुए हो और वह काम हो गया तो जिज्ञासा का आदर करना सीखेगा और जिज्ञासा का आदर्श हमारी पूरी भारती मनीषा में है। शिष्य ने गुरु से कहा कि कि आप कौन हैं। तो गुरु ने कहा कि मैं ईश्वर हूँ अहम् ब्रह्मास्मि अच्छा तो उसने कहा आप ही सवार है तो मैं कौन हूँ? तो गुरु ने कहा था। तो मशीन तो भी ईश्वर है तो उसे उसने कहा यह पूरी दुनिया कौन सी है तो उसने कहा सरवन जगदंब खालूम तो पूरा संसार ही ईश्वर है। यह सभी ब्रह्म है। यानी की जिज्ञासा प्रारंभ हुई जिज्ञासा का इतना सम्मान भारतीय संस्कृत में है कि एक छोटा सा एक छोटा बच्चा एक मुनि का बच्चा बहुत पछता सा सवाल उसके पिता ने एक यज्ञ किया यज्ञ करने के बाद वह अपने पिता से पूछने लगा यह गाय किस दोगे ब्राह्मणों को यह अग्नि किस दोगे यज्ञ की तो यह अग्नि गोत्र ब्राह्मण को तो यह चावल किस दोगे ब्राह्मण को तो बहुत सवाल पूछा आखिर में वह नचिकेता अपने पिता से बोला कि मुझे मुझे किस दोगे तो आप नाराज होकर बोला कि तुझे यमराज महाराज को और आपको कथा। मालूम है। नचिकेता की नक्श टिकेट यमराज के द्वारा गए और यमराज ने मुझे मृत्यु और जीवन का ज्ञान दिया यानी कि एक जिज्ञासा में एक छोटा बच्चा भी भगवान के पास पहुंचा और भगवान ने उसके पास उसकी जिज्ञासा का सामान करके वापस भेजो यह भारत का संस्कार है तो जितने शिक्षा के यहां पर है। मैं उनसे अनुरोध करता हूँ जितने अभिभावक यहां पर हैं। बच्चों की किसी भी प्रकार की जिज्ञासा के प्रति क्रोधित मत हुई है।



जिज्ञासा से ही जिज्ञासा से ही बच्चों का वर्तुल खुलेगा ज्ञान का कि वह कब से नीचे गिर रहा था। किसी ने नहीं सोचा एक आदमी ने सोचा कि की नीचे क्यों गिर रहा है। उसे समय उसके मां-बाप ने कहा हो कि यह से नीचे क्यों गिर रहा है तो आप ने कहा होगा कि लड़का पागल हो गया बताओ बताइए भाई अबे ऊपर थोड़ी जाएगा नीचे गिरेगा पर क्यों गिरेगा यह जब उसने जाना तो आपको हवाई जहाज की सुविधा उपलब्ध हुई आपको सैटेलाइट प्राप्त हुई जिस मध्य प्रदेश में मैं खड़ा हूँ यहां 2200 साल पहले इसी जबलपुर से आगे चलकर थोड़ा सरगुजा पर्वत पर एक कविता लिखी मां कभी कालिदास ने मेघदूत पर आप सामने पड़ी होगी मेघदूत जी की कहानी एक ही अच्छा था। वह कुबेर क्या नौकरी करता था। नेपाल में और उसका सुबह-सुबह उनका फूल लाने का काम था। पूजा के लिए बेचारा फूल तोड़ के लाभ तथा। पांच 5:00 बजे भगवान शंकर की आराधना करते थे कुबेर 6:00 बजे उठकर ब्रह्म मुहूर्त में उसे यश की शादी हो गई तो बेचारा देर तक पत्नी के साथ बात करता रहा था। देर तक जागता था। एक दिन नींद नहीं खुलीतो 6:30 बजे तो 6:30 बजे पहुंच पूजा में लेट हो गए तो कुबेर ने पूछा कि तू लेट क्यों हुआ तो उसने कहा शाम में नया-नया विवाह हुआ है। पत्नी से बहुत प्रेम करता हूँ उसकी वजह से लेट हो गया उन्होंने कहा जिसके कारण तू तूने मेरी ड्यूटी में अपनी ड्यूटी में विघ्न डाला है तो तो उसे एक वर्ष के लिए दूर हो जा यानी कि उसका ट्रांसफर कर दिया यह मानो तो उसको भेज दिया सरगुजा तो उसने अपनी पत्नी को यहां से पत्र लिख करके भेजो डाकिया तो था। नहीं तो उसने मेघ पर पत्र लिखे वह कविता बनी मेघदूत हो सकता है। आपने सुना होगा की मेघदूत लिखा गया मैं दावे के साथ कहता हूँ आज से 2200 वर्ष पहले 25 वर्ष पहले मेरे पूर्वज कालिदास ने कविता लिखी तो विज्ञान की पूर्वज उसे पर हादसे कारे बादल पर भी कोई

संदेश भेज सकता है। पागल हो गया क्या कभी है कि मूर्खता मूड बात कैसी मूड बातें कर रहा है। बादल पर कोई कैसे लीटर लिखेगा लेकिन उसे समय के भारतीय वैज्ञानिक वैज्ञानिकों ने हमारे कई को गंभीरता से लिया होता और सोचा होता कि कुछ हो सकता है तो आज जो यह मोबाइल के ऊपर एमएस उतरता है। जो वीडियो उतरता है तो यह टेक्नोलॉजी । यह टेक्नोलॉजी सबसे पहले हम। लाये होते। क्यों? क्योंकि मेरे को दूध के समय से नहीं। के पास के समय से हमारे पास ये तकनीक है। । इंडियन एविएशन में कितने लोग हैं। भारत के? भारत भारत वायु कमान में जीतने लोग है। । वो ये बात सोचने को तैयार नहीं है। । कि भगवान राम लंका में भीषण के राज्य में। स्थापना के बाद जिंस। विमान पर बैठे आयोध्या आये उसमें। ऑनबोर्ड, उनकी क्षोणी सेना मौजूद थीं। आरजू शा सात तक का था। , जिसमें वह। जिससे कल पे वो थे। आज हम बड़े वाले किसी जहाज में अमेरिका जाते हैं, शिकागो जाते हैं। न्यूयॉर्क जाते है। 15 घंटे की फ्लाइट होती है। । उसमें दो तल होते हैं। गुड नंबर क्लास का नीचे उतर। और सबसे नीचे सामान तो बड़ा उसका महत्त्व बताया जाता है। जिसमें वो। जिसमें आप बैठे जान है। वो ऐसा था। जिसमें सात आठ तल थे। अब अब इसे बोल दो तो कुछ हमारे नौ भौतिकतावादी। ओके कि पोंगा पंडितों जैसी बात करते हैं। अमेरिका को देखो, इन्हीं बातों पर बात कर रहा है। वो आपकी अंतरध्यान पर कि दोहरी पर काम कर रहा है औरपुराने लोग बैठे हैं, याद करते हैं। कि किस सीनियर्स लोग बैठे हैं। आज से 50 साल पहले 100 साल पहले 70 साल पहले। क्या क्या किसी ने सोचा था। कि आकाशवाणी होगी, होती होगी? आइग हमारे यहाँ हमारे यहाँ कहा जाता है। ना कि आकाशवाणी होगी। उसके बाद नारद ने आकर आकाशवाणी सुनी आकर आकाश वाली क्या था। ? आकाशवाणी विज्ञान का ऐसा ही कोई प्रारूप रहा होगा? जिसको हम। मूर्खों को हम भी पता नहीं है। । मौन खोज इसको हम मूर्खों को कुछ पता नहीं है। । मतलब हॉस्पिटल ले चली। दुनिया का पहला टेलीकास्ट लाइव टेलीकास्ट किसने किया? संजय ने। पूछा और कैसे आदमी को दिखा यार? और अब हम तो आग से देखते हैं, वो तो अंधार था। अंधे आदमी को दिखाया। धनराज तो अंधे थे। घटना श ने कहा कि धार्मिक क्षेत्र कुरुक्षेत्र। मान का पांडव? युद्ध से कटा हुआ इकट्ठा हुए मेरे बेटे और पांडव। ओके बेटे, क्या करना है। ? तो संजय ने बताया लाइफ डॉक्यूमेंट्री से। वो लाइव कमेंट्री ही तो गीता में है। । भगवान बीच में। खड़े हुए पर हमारा ध्यान नहीं है। तो हमारे आसपास की जितनी चीज़ है। ।



उनका मैनेजमेंट देखिएगा। उनकी जिज्ञासा का मुहूरत भाग देखिएगा। और सताये ध्यान रखिए। सिक्स सफलता की दूसरी कुंजी पहली कुंजी जिज्ञासा जिसे मुझे। मुझे लगा था। , हो सकता है। मुझसे लोग सहमत हो। दूसरी कुंजी है। धैर्य। धैर्य अपने आप में अद्भुत प्रसाद है। जिसमें मनुष्य को। अगर पहला पत्थर जीस समय। दशरथ माझी ने उस पर्वत पर मारा तो लोग उस पर हँसे। लेकिन उसने धैर्यपूर्वक 20 साल पत्थर मारा। तो पहाड़ को रास्ता छोड़कर खड़ा होना पड़ा। कि तू आदमी है तो जी जा। और मैं मानस भवन में खड़ा हूँ, मैं फिर वही पर आता हूँ रामचरित मानस पर। मानव मन मानस

पड़ी हैं। अपनी दादागिरी के पास बैठकर। राम का धैर्य देखिए। रामाधार विष्णु का आधार नहीं है। । मुझे समझ क्षमा करें, भगवान है। भी शुरू। लेकिन वो तथा। शुद्ध आर्य है। , आराम से लेटे हुए है। । छीरसागर में छैया बनाकर प्रेमपूर्वक। माता लक्ष्मी प्राय दबा रही है। । से स्नान का फल है। देख रहे हैं। दुनिया। दुनिया में चल क्या रहा है। मूर्ख कर क्या रहे है। ? हो क्या नाटक रहा है। ? राम का धरतो? जीवित रहते हुए उस व्यवस्था का धैर्य? बिलवड को प्रयोग करने की एक हरकत दुनिया में। नहीं, मैं नहीं छोड़ी। पुत्र के रूप में सोचिए वो लड़का क्या करता? वो व्यक्ति का ऐसा होगा जिसका राज्याभिषेक होने जा रहा है और वो। आग साइड में पता चला कि वन चलो। कपड़े उतारो और अब ये कल कल पहनो और पत्नी खोलो। और निकलो। कितना कठिन समय है। , लेकिन? राम? राजा अभिषेक होगा। मैं राजा बनूँगा। मुझ पर प्रसन्न नहीं है। पूरा खत्म। और मुझे बदमाश मिल गया इस पर दुखी नहीं है। , यही राम है। । यही राम होना है। । लोक समझते हैं। जंग? वहां वहां पोस्टिंग लोग समझते हैं। कैसे काम होगा मेरे लिए तो पनिशमेंट हो गया यही तो अवसर है। जो भगवान ने जो भगवान दे रहा है। दशरथ के पुत्र राम जब तक अयोध्या में रहेयुवराज राम कहलाए श्री राम कहलाए और जब जंगल आकर लौट तो मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम कहलाए इस पूरी यात्रा ने उनको भगवान बनाया इस धर्म ने उन्हें भगवान बनायाऔर अद्भुत धैर्य है। उनके पास उनका अपमान करके कोई चला जाता है। वह धैर्य के साथ मुस्कुराते रहते हैं। उनकी पत्नी का हरण हो जाता था। उसके बाद भी वह धैर्य पूरा पूरी व्यवस्था करते हैं। एक बार सोचनाआप सब लोग राम मैं मैं अक्सर इस बात को सोचता हूँ मैं बहुत अंदर तक चिन्ना रहता हूँ राम अयोध्या से चले उसे समय के सबसे उसे समय का सबसे बड़ा खानदान था। हिंदुस्तान में जो कुछ भी बना था। तब उनके यहां पड़ा था। आज रघु दिलीप पूर्व आयात बहुत दशरथ ऐसा ही नहीं टाइप हो रहा है। जो भारत का नाम रखा गया वह भी उन्हें के यहां पैदा हुए भारत लेकिन उसके बाद भी जब राम जब एक बालकल पहनकर एक बालकल पहन के चले तो रास्ते भर के राजाओं ने सभी राजाओं को भी तो पता चला हो कि दशरथ का लड़का जा रहा है। वह भी तो मिलने आना चाहते होंगे राम उनसे सहायता भी ले सकते थे जिस पंचवटी में मां सीता का हरण हुआ वह उनके नव साल के सबसे बगल में हैं। कौशल प्रदेश में रायपुर में वह बिल्कुल बगल में थे नाना से नाना से कह सकते थे मामा से कह सकते थे अगर आप मेरी सहायता करें मेरी पत्नी का अपहरण हो गया है। आप अपने सुना दे दो मैं उनके साथ चलूंगा पर उन्होंने ऐसा नहीं की उन्होंने एक भी राज्य से एक भी राजा को अपने साथ में नहीं लिया उन्होंने रास्ते आप जैसे हम जैसे लोगों को साथ लिया इनको सामान्य वंचित वंचितों को दलितों को उन्होंने उन्होंने वनवासियों को साथ में सांसों को साथ दिया उन्होंने शबरी का आशीर्वाद लिया उन्होंने केवट को साथ लिया सुग्रीव को गले लगाया क्योंकि वह जानते थे कि जिस अनाचार से वह लड़ने जा रहे हैं। वह धनिको के नहीं सदाचार की आवश्यकता है। वहां आत्मा के दिव्या की आवश्यकता है। राम का यह धैर्य ही उन्हें यह विजेता बनता है। भाई रावण को तो बाली हार चुका था। पहले आप तो जानते ही हैं। रावण को को तो साहस सहज बार रावण कोई ऐसा अर्जित ऐसा अर्जेंटीना नहीं था। ब्राज़ील नहीं था। बहुत मुश्किल था।



उसको दोहरा चुके थे दोनों वाली तो उसको अपने बगल में दबाकर और उसने किले की दीवार का छक्का लगा दिया था। बल्कि ने जब हनुमान को बांधा है। हनुमान ने रावण से कहा कि तुम मुझे जानता नहीं मैं कौन हूँ? तो हनुमान ने क्या कहा है। हां कहा मैं जानता हूँ मैं आपका बारी वाला सुना था। लड़ाई परिचय है। आपसे हनुमान ने क्यों कहा था। कॉन्फिडेंस लूज हो लेकिन भगवान बाली और सुग्रीव जनपद में पहुंचे तो उन्होंने बलि का साथ नहीं दिया वह उसके साथ खड़े रहे जिसका अधिकार छिन गया जिसकी पत्नी तारा का बड़ा बाली के द्वारा अपहरण किया गया और उन्होंने बालिका वध किया जबकि बल्कि भी उनके प्रशंसक था। उनके भक्त था। मरते समय बाढ़ लगने के बाद मुद्रा में ने बाली ने पूछा है। मैं वेरी सुग्रीव प्यारा अवगुण कौन नाथ माही मार मैं बैरी हो गया शुक्रिया आपको प्यार हो गया मुझ में ऐसा कौन सा गुण था। कि मुझे मार दिया राम ने उसको उत्तर दिया अनुज वधु अनुज वधु भगिनी सुत नारी सोनी सेट कन्या सो नीसत नारी है। मूर्ख यह सब बेटी के बराबर होती हैं। इन्हें कुछ दुष्ट भी लोग कहीं जो नही उनको बंद करने में पुण्य मिलता है। पाप नहीं यह उसको उत्तर दिया उन्होंने भगवान ने यदि भगवान की विजय अपने लिए होती अगर धैर्य न होता तो वह बाली को लेकर चल देते हैं। वाली तोहरा चुका था। तू नालायक है। तूने इस छोटे भाई को मारा है। तूने इसकी पत्नी का हरण किया है। मैं तो तेरा वादा मैं तो तेरा वध करूंगा मैं तो वंचित को लेकर चलूंगा तो राम ने क्या किया राम के साथ जितने लोग हैं।



राम का अध्याय अद्भुत है। यहां के जो अध्यापक है। उनसे निवेदन है। राम की लीडरशिप क्वालिटी अद्भुत है। राम ऐसे ही राम नहीं बने हैं। मत पढ़िए हिंदू होकर स्पेशल में बहुत से इस्लाम पर भक्त रखने वाले दोस्त बैठे हैं। और किसी जात धर्म के लोग बैठे होते हो और इसको एक कहानी की तरह पड़ी है। राम जैसा लीडर कहीं नहीं है तो इन्होंने मेरे ससुर के लिए इतना महत्वपूर्ण काम किया इन्होंने मेरे ससुर का अपमान करने की कोशिश की यह बड़ा अद्भुत प्रसंग है तो पूरा तो और सन्नाटे में खिंच गया होने पर से कौटिल्य खड़े हुए प्रधानमंत्री प्रधान पुत्री महाराज क्षमा करें मैं सूचना देना चाहता हूँ कि गुप्तचर सम्राट शालू उसके साथ मेरी आज्ञा से चल रहे थे अब अपने गुरु जी से क्या कहते सम्राट तो उन्होंने कहा मैं बहुत शर्मिंदा हूँ गुरुजी अगर कोई और होता तो मैं उसका दंड देता मैं आपसे सिर्फ यह पूछना चाहता हूँ कि आपने यह पात्रता क्यों की आपने मेरे ससुर का अपमान क्यों किया तो उन्होंने कहा कि तो सम्राट चंद्रगुप्त शायद भूल गए वह शायद भूल गए हैं। वह शायद स्मरण न कर पाए की वह वेदांत मात्र है। यह अशुभ है। लेकिन इसके एक अतिरिक्त और नाता भी है। सम्राट सल्लू दूसरे देश के राजा हैं। मेरे यहां विजिट पर हैं। और प्रधानमंत्री गृहमंत्री होने के नाते मेरा कर्तव्य है कि बाहर से आने वाला राजा किस से मिल रहा है। क्या बातें कर रहा है। मैं उसको जानू आपके हित के लिए बात बताओ सूचित करूं इसलिए मैंने आपको फोन किया था। तो आप इस देश इस देश के लिए इस समाज के लिए इस परिवार के लिए महत्वपूर्ण बनिए उसके प्रति उत्तरदाई बना अधिकारी बननाजो राजनीति में आते हैं। क्योंकि यह खुद ही अपने अपने प्रति उत्तरदायित्व नहीं है। अभी चुनाव आएगा उधर की तरफ इधर खड़े मिलेंगे पता ही नहीं चलता है। मैं आशा करता हूँ

कि आज के इस उद्बोधन के बाद हमारे सभी साथियों को मेरे छोटे-बड़े भाई बहनों को जीवन में कुछ प्रेरणा मिली होगी कष्ट आएँगे छोटे-मोटे कष्ट आएँगे पर राज होगी असफलता मिलेगी उपहास होगा मजाक उड़ाएँगे लोग गिरेंगे आप कपड़े आपके फटेंगे चोट लगेगी पैरों में छाले पड़ेंगे यह अपमान होगा अपयश होगा लेकिन उसके बाद फिर वो जो मुझे मिलेगा वह आपको अमृत तत्व मिलेगा आनंद मिलेगा जिसके अंदर भी इस सृष्टि में जरा सा भी गरल पीने की क्षमता है। जिसके कंठ में सरस्वती और शंकर उसे ही आशीर्वाद देते हैं। अंत में उसी के पास ही आते हैं। धन्यवाद!

5.2.3 शिक्षकों और अभिभावकों के नाम उद्बोधन—



वीडियो स्क्रिप्ट—

मैं आप सब माननीय लोगो को सादर प्रणाम करता हूँ, विशेष रूप से चेयरमैन बी० एल ० साहब आपको बहुत-बहुत बधाइयाँ ऐसे समय में दो कुलो का हित करने वाली बेटियों की शिक्षा के विषय में आपने सोचा इसके लिए आप साधुवाद के पात्र है, बधाई के पात्र है। मैं इस परिसर में आने के बाद निश्चित विचारों से घिरा हुआ हूँ, एक तरफ तो मेरा मन हर्षित है कि यहाँ के स्थानिक नागरिकों ने कुछ और करने के बजाय इस पैसे को कहीं और निवेश करने के बजाय उन्होंने यह सोचा कि बच्चियाँ कैसे पढ़े? क्योंकि एक बच्चे को आप पढ़ाते हैं, एक युवक को आप बढ़ाते हैं, एक लड़के को आप बढ़ाते हैं तो एक परिवार की प्रगति सुनिचित होती है। एक बेटी को आप बढ़ाते हैं तो दो परिवारों की स्थिति सुनिश्चित होती है। उनकी प्रगति सुनिचित होती है। मैं बचपन में जब संस्कृत का व्याकरण पढ़ता था तो उसमें बेटियों के लिए एक शब्द आता था दुहिता और संस्कृत के आचार्य मेरे पिता जी ने मेरी बहन को उसकी सन्धि पढ़ाते हुए कहा– (दूरे हिता हिते हिहिता) जिसे दूर करने हित है। वह दुहिता है। । तब भी मैंने कह दिया कि ये गलत व्याख्या है। मेरे पिता जी ने माँ से कहा– कि तुम्हारे घर में पाणिनी पैदा हो गए है। व्याख्या को गलत बता रहे है। लेकिन तब भी मेरे मन में इसके प्रति विद्रोह था और आज भी है। अगर दुहिता शब्द की कोई व्याख्या हो सकती है। तो ये जो 2 कुलो का हित करें वह दुहिता होती है। वह बेटी होती है। बी० एल० साहब आपने इतना परिसर बनाया, स्विमिंग पुल बनाया मैं आपकी पूरी रेंज देख कर आया एनसीआर में रहता हूँ, राजधानिक क्षेत्र में विश्व के कुछ देशों में शिक्षा देखने भी गया हूँ, सहयोग से दुर्योग से कुछ दिन राजनीति में भी गया हूँ, क्योंकि यहाँ सांसद जी बैठे हैं, विधायक जी बैठे हैं, पूर्व विधायक जी बैठे हैं, जज शाहब भी बैठे हैं, मुझे सच बोलने की बीमारी है और चस्का है। यह आपका काम नहीं था शिक्षा के लिए इतना सुंदर परिसर बनाना आपका काम नहीं था, अस्पताल बनाना किसी का काम नहीं था। यह स्टेट के काम थे, राज्य के काम थे, ये शासन के काम थे, यह अक्सर सरकारों के सामने बोलता रहा हूँ, पुरुषार्थ पूर्वक इस देश का नागरिक₹100 कमाता है। मुझ जैसे सामान्य अध्यापक के लड़के ने जिसने इंजीनियरिंग से मुँह मोड़कर कविता की तरफ प्रयाण किया था मैंने अपनी योजना अपनी प्रतिभा अपनी क्षमता जोकि वाक्य देवी का वरदान था इसका प्रयोग करते हुए अगर ₹100 कमाए तो सरकार ने मुझे कहा कि प्रभु यह आपने जो ₹100 कमा लिए आपके पास यह ज्यादा हो गए हैं। इनमें से ₹37

दे दीजिए तो मैंने कहा ठीक है। ले लीजिए क्या करेंगे बोले कि इसमें स्कूल बनायेंगे इसमें सड़क बनाएंगे इसमें अस्पताल बनाएंगे मैंने दे दिए उसके बाद मैं और पुरुषार्थ करा और थोड़े पैसे कमाए तो मैंने अपने ऑफिस के लोगों से कहा एक गाड़ी खरीद के लाओ बहुत मेहनत की है। जिंदगी में रोडवेज के धक्का खाए हैं। रिटायर में रिटायरमेंट में चलेंगे मर्सिडीज़ में तो उन्होंने कहा ठीक है। शाहब तो कितने पैसे की आएगी? तो उन्होंने कहा एक करोड़ की तो मैंने कहा ये लो चेक तो बोले नहीं नहीं एक करोड़ 28 लाख दीजिए तो मैंने कहा 28 लाख किसके तो बोल वह सड़क जिस पर आप चलेंगे तो मैंने कहा उसके तो 47 रुपए ले चुके तो बोले नहीं नहीं सड़क के अलग से लगेंगे मैंने दे दिए इसके बाद जैसे ही हाईवे में चढ़ा वहाँ कुछ लोग मिल गए रास्ता रोक के बोले ₹500 दीजिए मैंने बोला कि किस बात के तो उन्होंने बोला सड़क के तो मैंने बोला कि अभी दो बार देख कर आया हूँ, तो बोले की अच्छी सड़क है। तो इसके ₹500 लगेंगे आपको अब प्रभु आपने मुझसे तीन बार पैसे ले लिए लेकिन जब मैं नवलगढ़ के लिए उतरा हाईवे से तो सड़क गढ़ गढ़ करने लगी तो भाई तीन बार जब पैसे लिए तो वहां पर भी एक आदमी खड़ा था राजकुमार जो 500-500 वापस देख आपसे पैसे ले लिए थे, पैसे वापस कर रहे थे, दिस इस नॉट मी फिर स्टेट दुख का विषय है।



यह काम समाज का नहीं था यह काम टैक्स लेने वाली सरकारों का था लेकिन मैं उन लोगों को दोनों हाथ सलाम करता हूँ, जो हमारे ही द्वारा निर्वाचित शासन के सील हो जाने पर इन नोलिहाल आंखों के सपनों के लिए अपने सपने कुर्बान करने के इतना सुंदर विशाल परिषद डेवलप करते हैं। एक छोटी सी बात अध्यापकों से करनी है। अध्यापिकाओं से करनी है। बहुत पहले प्रोग्राम करने के लिए गया पंजाब में एक विश्वविद्यालय में तो उन्होंने मुझसे कहा कुमार जी हमारी यूनिवर्सिटी 700 एकड़ में फैली हुई है। तो मैंने कहा अच्छी बात है। जी फिर उनके मैं चेंबर में गया तो मंच पर जाने से पहले कुमार साहब 700 एकड़ में फैली हुई है। इंजीनियरिंग कॉलेज है। उनका, तो मैंने कहा अच्छी बात है। साहब फिर मैं माइक में खड़ा होकर कविताएँ सुना रात सुन रहा था फिर वह नीचे से कहने लगे 700 एकड़ तो मैंने कहा जी मेडिकल इंजीनियरिंग कितने बड़े खेत में पढ़ाते हो आगे–आगे बच्चा दौड़ रहा है। पीछे-पीछे प्रोफेसर दौड़ रहा है। ऐसा कुछ होता है। क्या? बिल्डिंग माध्यम हो सकती हैं। लेकिन इसमें से स्पीच का परीक्षण होगा वह जो दो हथे, लियाँ हैं। वह इन शिक्षिकाओं की है। अध्यापिकाओं की है। जो दीप प्रचलन कर सकती है। चेयरमैन साहब, बी० एल० साहब अच्छा परिषद दे सकते हैं। एयर कंडीशन लगा सकते हैं। स्विमिंग पूल कर सकते हैं। लेकिन उस बच्चे के अन्दर ये दिदिक्षा पैदा करना, युयुत्सा पैदा करना अभिक्षा पैदा करना कि मुझे इस स्विमिंग पुल में उतरकर दुनिया की पहले नंबर की तरह बना है। यह उसकी स्पोर्ट टीचर कर सकती हैं। हिंदी की कक्षा में बैठने वाली बच्ची के मन में यह बात पैदा करना कि मुझे महादेवी वर्मा की, मीरा देवी की, परंपरा की दुनिया की सबसे बड़ी कवित्री बनना है। यह हिंदी के अध्यापिका कर सकती है। हम सब अपने अध्यापकों के सवारे हुए है। अगर मैं इंजीनियरिंग नहीं कर तो उसके कारण मेरे

अध्यापक है। अगर मैं हिंदी में कविताएँ कर पाया तो उसके भी कारण भी मेरे अध्यापक है। अगर मैं विश्व के 25–30 देश में बात कर पाया चाहे हिंदी में चाहे अंग्रेजी में तो उसके भी कारण मेरे अध्यापक है क्योंकि एक समय आता है। यह आप सब जानते हैं। जो यहाँ अभिभावक बैठे है कि अध्यापक यह समय अजीब आ गया है कि छोटे बच्चों के हाथ में मोबाइल है। और वह गुरु से ज्यादा गूगल पर भरोसा करता है। लेकिन एक समय हमारे परिवारों में अभी मध्य वर्गों में यह है। अध्यापक की मानता घर के लोगों से ज्यादा है। बच्ची छोटी क्लास में पढ़ती थी उसको एक छोटी उम्र की लड़की पढ़ाती थी जो बी०ए० या बी०ए०कोई लड़की रहीं होगी जो डी पी एस में हिन्दी पढ़ाती थी उसने एक वर्तनी अशुद्धि कर दी और मैं हिंदी का प्रोफेसर 17 साल से हिंदी पढ़ रहा था महाविद्यालय में यूनिवर्सिटी एजुकेशन में मैंने अपनी बेटी से कहा अचानक कि यह स्पेलिंग ठीक नहीं है। वर्तनी सही नहीं है। उसने मुझसे कहा आप चुप रहो यह मेरी मैडम ने लिखवाई है। आप ज्ञानपीठ पा लो, नोबेल पुरस्कार पा लो, बच्चों के लिए उसका अंतिम विद्वान उसका शिक्षक होता है। और शिक्षक के अंदर आत्म गुण होना कि वह राष्ट्र का निर्माण कर रहा है। जैसे की अध्यक्ष साहब कह रहे थे, कि वह कैसे आएगा ? वह आएगा अभिभावकों के प्रति आदर का भाव देख कर मुझे अक्सर लोग कहते हैं। कि बुरा मत मानना बी०एल० साहब मैं आशा करग कि आप आगे भी बढ़ाएँ है। स्कूलों को आज मेरे कवि के हाथों आपने विद्यालय का उद्घाटन कराया है। मैं बच्चों में तेजस्विता का बीजारोपण करने का प्रयास मात्र कर रहा हूँ, जिस दिन मुझसे कहते हैं। कि स्कूल अच्छा कैसे बनेगा एजुकेशन कैसे अच्छी बनेगी बहुत सारे दोस्त मुझे मिलते हैं। और उन्होंने बड़े-बड़े स्कूल बनाए हैं। और बी० एल० साहब आपने भी शिक्षा में बड़े अच्छे काम किए हैं। कैसे बनेगा इंजीनियरिंग कॉलेज के मालिक मुझसे कहते हैं तो मैं उनसे यही बात कहता हूँ, जिस दिन स्कूल के प्रबंधक एवं अध्यक्ष छोटा और प्रिंसिपल का लेवल बड़ा हो जाएगा उस दिन यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जाएगी। आपने पोडियम तैयार किया है। बी० एल० साहब जितना आपको 10 साल बाद 15 साल बाद दुनिया के किसी दौर में घूमती हुई कहीं एक भारतीय लड़की मिलेगी गूगल की दूसरी तीसरी पोजीशन पर पहले पोजीशन पर आप उसे लेकर घूम रहे होंगे स्विट्जरलैंड पर फ्यूलएन्स में घूम रहे हो पेरिस के गलियों में होंगे वह दौड़ती हुई आपको कहेगी मैं सर आपके स्कूल में पढ़ी हूँ, दुनिया की सारी मदोशियाँ छोटी लगेगी दुनिया का सारा भारत छोटा लगेगा यह जो अध्यापक के अंदर आपका विश्वास पैदा कर पड़े जो तुम बड़ा काम कर पाओगे जो नए किरदार के चाल में खनक है।



एक श्रोता की चाल में आत्मविश्वास है। लेकिन गवर्नमेंट कॉलेज के प्रोफेसर में अटल विश्वास नहीं है। वह इसी में परेशान है कि कांग्रेस कांग्रेस की आएगी तो रोता की चलेगी भाजपा की आएगी तो इतना सारा शोध इसी विषय में है कि ट्रांसफर कैसे बचेगा जैसलमेर कैसे चला जाऊं उसके आत्मविश्वास की हत्या की है। बुरी व्यवस्था में एक दसवीं अध्यापक बन सकता है। यह भारत का इतिहास भी बताता है। और विश्व का इतिहास भी बताता है। सिकंदर भारत की तरफ चला था तो योद्धा नहीं चला था महान गुरु अरस्तु की परंपरा चली थी और जब आदियोगी उसके हाथ में छोड़कर

गया था तो लड़ाई इसी चंद्रगुप्त इस चंद्रगुप्त के बीच में नहीं थी दो गुरुओं के बीच में थी एक यूरोप का गुरु था जिसका नाम अरस्तु था और एक भारत का गुरु था उसका नाम कौटिल्य चाणक था पढ़ाई में भारत का गुरु जीता था मिथ्या देने के लिए आत्म दीप्ति चाहिए मिथ्या देने के लिए आत्मविश्वास चाहिए जो मेरे पिता जी के पास है। 87 साल की आयु में आपकी अदालत का एपिसोड हो या आपकी किसी कार्यक्रम का एपिसोड हो वह आज भी मुझे अधिकार रूप से फोन करके बोलते हैं। मूर्ख हो तुम क्या मूर्खतापूर्ण उच्चारण कर रहे थे, इसका उच्चारण यह नहीं यह होता है। और पांडे जी का सूत्र साधना बताते हैं। और मैं विद्यार्थी की तरह कहता हूं जी जी अगली बार याद रखूंगा जब यह आत्मविश्वास मेरे पिता में है। अगर यह आत्मविश्वास गुरु में आ जाए बच्चों के प्रति और यह प्रभाव बच्चों में आ जाएगा तो मेरी दिव्या पर माता सरस्वती कृपा करें मैं यह कह सकूंगा आने वाले 15-20 वर्षों में दुनिया में पूरे भारत में कुछ बच्चियों से मिलकर कि तुम्हारे कॉलेज के पहले दिन उद्घाटन करने के लिए मैं गया था जब रिबन काटा जाने वाला था तो डीजल सर ने कहा कि आप इसका रिबन काटिए तो मेरे मेरे साथ जो बच्ची चल रही थी जो उन्होंने एक ड्रिल की बच्ची लगाई थी मैंने वह कैंची उसके हाथ में पकड़ा दी मैंने कहा तुम कार्टून मैं तो जानता भी नहीं था कि वह कौन बच्ची थी आप काटो वह स्कूल की ही बच्ची थी उसमें थोड़ा छोटा सा उत्प्रेरण बच्चों का जीवन बदल सकता है। और यह याद रखिए की ईर्षा से कुछ नहीं होगा विद्या से होगा संस्कृत और परंपरा के ज्ञान से होगा कि यहां सदन में प्रदत्त करने वाले स्वामी जी बैठे हैं। वे इस बात से भी सहमत होंगे कि मैं अपनी बात का अनुमोदन उनके माध्यम से चाहूंगा कि शिक्षा से सब कुछ ठीक होता क्योंकि मैं तो मैं तो बुक में दो लोगों के साथ काम की थी मैंने एक चौथी फेल आदमी के साथ काम किया है। जो केवल चौथी पास था महाराष्ट्र का रहने वाला था और राजनीति मैंने ऐसे आदमी के साथ की जो भारत के सर्वेश एजुकेशन लेकर आया हुआ था और मैंने दोनों की सोच में अंतर देखा तो लोगों के व्यवहार में अंतर दिखा शिक्षा में अंतर प्रभाव नहीं पड़ा विद्या से होगा तो आपने कहा हमारा अंतिम लक्ष्य होना चाहिए कि हमने राष्ट्र की मनुष्यता की सेवा में अपना एक किंचित योगदान दे रहे हैं। यह के तहत प्रभाव विनम्रता जिस दिन मेरे अंदर आ जाएगी उसे दिन अपना काम प्रभाव प्रारंभ हो जाएगा और देश महान दिशा में जाना प्रारंभ हो जाएगा जो आज मेरी बहने बैठी है। जो कल से इस महाविद्यालय में विद्यालय में अभी से जो शिक्षा का काम कर रही है। मैं उनसे यह निवेदन करना चाह रहा हूं कि अपने वेतन मात्र से अपने अस्तित्व की तुलना कभी मत करना तुम्हारा वेतनमान केवल तुम्हारे अपन के लिए है।



तुम्हारा वेतनमान तुम्हारी तेजस्विता की रक्षा के लिए है। लेकिन जो तुम्हें काम मिला है। वह इस सदन में बैठ बड़े-बड़े लोगों को भी नहीं मिला है। तुम्हें काम मिला है कि एक छोटी सी दीप शिखा को तुम ज्वाला बन सको जो पूरे विश्व में प्रकाश फैला सके वह पैक फूड खा रहे हैं तो हम भी पैक फूड खा रहे हैं। हर सीरियल में उनकी कोई भी फिल्म देख लीजिए दिन हो या शाम हो परिवार के छोटे बड़े वाइन का गिलास मिक्सी का गिलास लिए घूमते रहते हैं। वह इसलिए घूमते रहते हैं। क्योंकि वहां उजाला पड़ता है। स्पेन में यूरोप में किसी हिस्से में 0.8 शराब के बिना जीवन ही नहीं है। यहां

तो तुम 45 डिग्री में रह रहे हो और तुमने यही सीख ली है। पानी नहीं था वहां पर तो टिशू पेपर ले आए नहाने में भी खाने में भी जाने में भी यहां तो अपनी ही पानी है। उसके बाद एक आइसक्रीम खाती है। और 25 टिश्यू पेपर फेंक देते हैं। सामने अपनी लगा है। लेकिन हाथ नहीं धो सकते हैं। जो साफ कर रहे हैं। वही मुझे भी करना है। सब की मानसिकता बच गई है। लेकिन फटकारते हुए मुझे अच्छा लगेगा कि यहां जब कभी प्राथमिक संचालन हो तो उसकी भाषा मातृभाषा में हो और हमारे कॉलेज की कोई बिटिया करें पड़ी हुई लड़की करें अंग्रेजी कोई महान भाषा कौन सी महान भाषा है। मैं भी सीखी है। ग्रेजुएशन में अंग्रेजी में टॉप किया है। लेकिन मैं हिंदी का विद्यार्थी हूं और इसलिए प्रेम नहीं करता कि मुझे हिंदी भाषा ने मां दिया सम्मान दिया मेरे परिवार पर जो भी लक्ष्मी की कृपा आई वह इस भाषा की वजह से आई मेरी मातृ जवान है। मेरी मातृभाषा है। अंग्रेजी अच्छी है। लेकिन हिंदी से बेहतर नहीं हो सकती वेदर रहमान कितनी भी खूबसूरत हो वह मेरी मां से सुंदर नहीं हो सकती वह दुनिया की सबसे सुंदर स्त्री है। यह मेरी जवान है। इसमें विशेष रूप से राजस्थानी लोगों का बहुत आभार व्यक्त करता हूं कि हम जैसे लोगों को उत्तर प्रदेश के लोग हैं। जो मिक्स वेजिटेरियन हो चुके हैं। पता नहीं कौन-कौन सी संस्कृति आकर मिल गई है। हमें पता ही नहीं है। आप लोगों ने हमें सिखाया है कि भाषा कैसे किया जाता है। मैं दुनिया की किसी भी इस में उतरता हूं तो न्यू ईयर लंदन में उतरता हूं या चीन उतरता सिंगापुर जो पांच लेने वाले आते हैं। उनमें से दो जरूर पूछते हैं। थे, कटी को जी तो मैं समझ जाता हूं कि वह वही का है। बच्चा क्या कहता है। तीसरी क्लास का बच्चा आप ले रहे हैं। तीसरी क्लास का बच्चा एक सफेद कागज है। ना उसमें गाना है। ना ऐसा है। ना विश्वास है। ना मुसलमान है। ना उसके भाजपा कांग्रेस है। ना उसमें अमीर गरीब है। ना उसमें श्रवण और दलित जो उसमें पंचायत होती है। सब कुछ नहीं है। एक राजधानियों की पंचायत नहीं है। भारतीयों की पंचायत नहीं है। ब्राह्मणों की पंचायत नहीं है कि आपने सरकारी जीति नहीं है।



आपने जातियां जीति हैं तो उनसे ही पूछो विकास क्यों नहीं हो रहा है। तो आपको को र बच्चा सकता है। और बच्चा कहता है कि मैं कोरा कैनवस हूं आओ मुझ पर पेंट करो हिंदी की टीचर आती है। और उसमें स्टॉक मार के चली जाती है। साइंस की टीचर आती है। उसमें स्टॉक में मार के चली जाती हैं। वह जो आपने शूटिंग की क्लास रखी है। वह अपनी स्ट्रोक मार के चली जाती हैं। योग की टीचर आती है। वह अपने स्टॉक मार्केट चली जाती हैं। और 12वीं के बाद एक पेंटिंग मिलती है। अगर वह पेंटिंग विद्रूप है। अगर वह पेंटिंग मी रोग की 17 साल की आई यू रात को ज्यादा शराब पी के घर वापस आकर रहती है। आई लाइक माय लाइफ अगर वह पेंटिंग पूरी दुनिया में आलम किया जीतने के बाद तिरंगा लहराती है। तो उसका पारितोषिक भी आपका है। उसका सम्मान भी आपका है। वह केवल माध्यम है। आप सोचिए कि आप कौन हैं। जितने की गुरु बैठी है। जितने भी महिलाएं बैठी हैं। वह सोचिए कि आपको कितना बड़ा काम मिला है। आप बुरा मत मांगेगा मैं यह नहीं कर रहा हूं कि आपका मनोबल बड़े मैं आपको सिर्फ यह अनुभव करने के लिए कह रहा हूं मैं स्वयं पढ़ाया है। इंजीनियरिंग छोड़कर पढ़ाया है। 17 वर्ष विश्वविद्यालय कॉलेज की सेवा में रहा हूं पटाया हूं मेरे पिताजी ने पढ़ाया है। उनकी बचपन के साथी डॉक्टर थे, डॉक्टर के पास बहुत सम्मान है। डॉक्टर लोगों के रोग का

निवारण करते हैं। और मेरे पिताजी और वह दोनों साथ में चाय चाय पीते थे, और वह उनको कहते थे, अभी तेरी क्या जिंदगी है। जो आता है। वह मरता करता है। मर गया बचा लीजिए डॉक्टर साहब एक मुझे देख मैं 58 साल का हो गया हूं कैंपस में जाता हूं तो जिंदगी के सबसे खूबसूरत दूर मुस्कुराते हुए लड़के लड़कियां मुस्कुराते हुए कहती हैं। सर नमस्कार सर नमस्कार प्रणाम करते हैं। सदा खूबसूरती के साथ रहता हूं जिंदगी के साथ रहता हूं जितने भी महिलाएं यहां बैठी हैं। पढ़ने पढ़ने वाली हमारी अध्यापिको अध्यापिकाएं 45 या 50 की हो जाएगी तो इतना बड़ा सौभाग्य आपके सामने अवश्य रहेगा । इस परिसर की दीप्ति तभी बढ़ सकती है। जब बिल साहब और उनके दोनों बेटे स्टूडियो खो जाए और नियामक अध्यापक हो जाए अध्यापक तय करेगी कि कैसे चलना है। अध्यापक तय करें कि कैसे हो उसे दिन से यह दीप्ति पढ़नी प्रारंभ हो जाएगी यहां पर उपस्थित जो अभिभावक है। उनसे भी अनुरोध है कि बच्चों को गैराज से बचाइए कोरोना का टीका तो हमारे वैज्ञानिकों ने बना लिया लेकिन बच्चों की आत्मा को जो खुले थे, उनके मन एवं मस्तिष्क जो खुराक मिल रही है। उसका टिका तो आप ही लगा सकते हैं। अपने सुख में अपने आनंद में और अपने निजी सदस्य में इतनी व्यस्त मत हो जाओ कि यह आप यह भी न देख पाओगे कि यह क्या पढ़ रहा है। क्या सुन रहे हैं। क्या क्या मस्तिष्क में जा रहा है। सुबह होती नहीं है। इस देश में आश्चर्य हो रहा है कि यह यह कैसा घर बुला है। ₹17000 का ओप्पो मोबाइल खरीद के पिताजी दे देते हैं। और सुबह व्हाट्सएप विश्वविद्यालय शुरू हो जाती है। नेहरू को गली गांधी को गाली साहब अगर को गाली यह कोर्स में था आपके उनकी अपनी मर्यादा थी अपनी सीमा थी और वह शरद को इतनी दूर तक लेकर आए आपको आगे लेकर जाना है। 75 वर्ष में देश यहां आया है। इसमें सब का योगदान है। इतिहास की पुनर व्याख्या और इतिहास की प्रोफेसर कर लेंगे इतिहास की पुनर व्याख्या के लिए विश्वविद्यालय में अनेक प्रोफेसर बनाए गए हैं। डिपार्टमेंट में एचडी होती है। अडॉप्टेड होती हैं। उनके लिए वह काम है। यह काम समाज के नेताओं का काम नहीं है। यह काम राजनीति का नहीं है। यह सरकारों का नहीं है। सरकारों का काम है। जो हमने टैक्स देकर मत देखकर विश्वास व्यक्त किया है। उसको ठीक से आखिरी आदमी तक पहुंचा दें उसके सुख के लिए तैयारी करें यह उसका काम है। स्वास्थ्य उसका काम है। मैं आपको बधाई दूंगा कि आप यहां बैठे हैं। कि आज की मुख्यमंत्री ने यह बात सूची की कि व्यक्ति को उसके स्वास्थ्य का मौलिक अधिकार मिले उसका स्वास्थ्य ठीक रहे यहां तक तो बात पहुंचे यहां जितनी भी बेटियां बैठी है। उनके मां-बाप से भी अनुरोध है कि उनके भोजन शारीरिक भोजन पर ध्यान दीजिए यह क्या खा रही है। उनके मस्तिष्क में क्या जा रहा है। इस पर ध्यान दीजिए और यह देख क्या रही हैं। इन पर ध्यान दीजिए मैं मानता हूं कि इन पर इन पर फिल्टर नहीं लगा सकते लेकिन इनके मस्तिक में फिल्टर अगर लगा दिया तो जो भी छाप के जाएगा वह फिल्टर होकर जाएगा दुनिया भर से चल रहा है। उसे पर आप फिल्टर नहीं लगा सकते बट आप में इतना सीखा दिया कि यह सुनना है। यह अपना है। यह नहीं सुनना है। यह ठीक नहीं है। तो जो भी आएगा इन तक अच्छा ही अच्छा पहुंचेगी एक बात मैं आपसे और कहना चाहूंगा कि लोग कहते हैं। भारत क्या है। भारत लाल किला है। भारत ताजमहल है। भारत विधानसभा है। भारत नई संसद की बिल्डिंग है। नहीं एक बात एक चालू करोड़ भारत में हूं एक बात 140 करोड़ भारत आप हो मैं अच्छा कभी बन जाऊं आप अच्छा अध्यापक बन जाओ हमारे हिस्से का हिंदुस्तान बनना शुरू हो जाएगा हमें किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी प्रकृति के निर्माण में जो जितने भी अभिभावक है। और जितने भी अध्यापक है। उन दोनों से यही कहना है कि आपको जो यह सुयोग मिला है। बल साहब ने चेयरमैन साहब ने मेहनत करके संपूरक जो यह सुयोग उपस्थित किया है कि आप करके दिखा सकते हैं। एक पेंटर की क्या चिंता है। एक कवि की क्या चिंता है। हमसे पूछिए कि जब अंदर से गीत बुलबुलाता है। और कोई लिखने की चीज ना हो तो फिर भी मोबाइल आ गया है कि हवाई जहाज में मोबाइल मोबाइल में कविता लिख लेते हैं। क्राफ्ट में कविता लिख लेते हैं। एक जमाना था जब मोबाइल नहीं था उसे समय कागज के लिए परेशान होना पड़ता था पेन के लिए परेशान है। किसी से भी मांग लेते थे, दुनिया का सबसे मशहूर गाना जो अभी बाहर बच्चे बज रहे थे, ए मेरे वतन के लोगों जो लता जी ने गया था वह महाकवि प्रदीप ने एक व्यक्ति से सिगरेट के खाली खोखे को मांग कर उसका उसके पीछे लिखा था। जी लेख की इतनी लाखों करोड़ों लोगों कि देश से प्रेम करने की उससे प्रेम करने की उसे पर फिदा हो जाने की इसके प्रति मृतक हो

जाने की प्रेरणा दी है। वह मुंबई की चल के बाहर से निकलते हुए एक कवि ने एक आदमी की सीक्रेट की खाली डिब्बे के ऊपर लिखा था जो यह प्रेशर की पीड़ा है कि कल कैसे बाहर निकले चित्र कैसे बाहर निकले बांसुरी का स्वर कैसे बाहर निकले मेरे मुंह से कविता कैसे बाहर निकले इस प्रश्न पीड़ा को अगर ठीक आयोजन मिल जाए ठीक कागज मिल जाए ठीक कोच्चि मिल जाए ठीक रंग मिल जाए तो चित्रकार खिल जाता है। मैं जानता हूं कि बहुत लोग आप पर हंसी होंगे बहुत सारे लोगों ने आपकी मजाक उड़ाए होंगे बहुत सारे लोगों ने आपके संकल्प में संशय पैदा किए होंगे जब महामना मदन मोहन मालवीय काशी विश्वविद्यालय की संरचना के लिए अधिक हुए तो उसे जमाने में वह इतने बड़े लॉयर थे, की 1100 चांदी के सिक्के एक दिन की इयररिंग के लिए लेते थे, और उनके पिताजी ने कहा कि यह कैसे करोगे तो मालवीय जी ने कहा कि मैं गांव से आया था तो आपने मुझे कुछ दिया था तो बोले कि नहीं तो बोले कि मैं बनारस में कितनी बड़ी हवेली बनाई अपने परिवार के लिए जो मैं अपने लिए बना सकता हूं तो मैं इस देश के बच्चों के लिए तो बहुत बड़ा बना सकता हूं और बाद में काशी हिंदू विश्वविद्यालय जैसा चमत्कार मालवीय जी ने तैयार किया लोगों से भीख लेकर तैयार किया झोली फैला के तैयार की है। यहां तो अपने यंत्र पूर्वक अपने श्रम से कमाए हुए धर्म को यहां पर मांगा है। मैं पुणे बढ़िया के साथ बल भाई आपको भी और अध्यापिकाओं को और यहां पर उपस्थित सभी स्टाफ को बहुत शुभकामनाएं देता हूं कि आप बहुत गौरवशाली है कि परमात्मा ने आपको कोच्चि भी दे दी और परमात्मा ने आपको कैनवस भी दे दिया है। जिन चित्रों को देखकर पूरा विश्व में कि यह शेखावाटी की बेटी है। इसलिए यहां तक पहुंचा है। इसीलिए इसके शिष्य यहां तक पहुंचा।

5.2.4 विद्यार्थियों से बात कुमार विशवास के साथ—



वीडियो स्क्रिप्ट—

एक बात ध्यान रखना जितने बच्चे यहाँ बैठे हैं, चुनौती जो हैं, और जो चैलेन्ज हैं, तो भगवान की सबसे सुन्दर लड़का है, य बच्ची है, भगवान अपनी सन्तान का हाँथ किसी अच्छे आदगी या अच्छे इन्सान के हाँथ में देता अगर चुनौती आ जाये होश में लाइफ में मैं एक बार 45 मुम्बई साल पहले मुम्बई के एक कार्यक्रम था। जिसमे हमारे हिन्दुस्तान के उपन्यास कार्य बड़े पाप कर हैं, आई आई टियन हैं, वह भी नाम उनका क्या लेना उन्होंने मैकुल से कहा कि मैने पूरी इंजीनियरिंग की मै, उनसे कहाँ कि कुमार पर पर 311 की पर नही हुई मैने उनसे कहा जो बात मेरे चार साल में समझ आई वो मेरे 6 महीने में समझ आ गई कि मेरे को इंजीनियर नही बनना और तेरे को भी इंजीनियर नही बनना था। लेखक या मैं कवि बना अगर कभी मन में आये कि यहाँ यह बात अटक गई और ये बात नही हुई। कोई भी लक्ष्य तुम्हारे जीवन से बड़ा नही हैं। सबसे बड़ी चीज ब तुम्हारी खुद की जिंदगी हैं। सबसे पहली तुम्हारी। मेरे पिताजी भाई साहब एक छोटे से गांव में मेरे पिताजी एक घंटे से गांव में बहुत गरीब से निम्न परिवार में मेरे पिताजी ने जन्म लिया वे गाँव के प्रथम ग्रेजुएट पहले PhD. पहले प्रोफेसर थे। दसवीं करके, वहां बीज इन्स्पेक्टर की नियुक्ति करने वाले लोग आए गांव से चार बच्चे सिलेक्ट हुए तीन को नौकरी मिल गई है और मेरे पिताजी को नहीं मिली वे बड़े परेशान हो गए की बताईये 11वीं में

कमाने लायक हो जाता लेकिन फिर वो प्रोफेसर हुए आज हमारा सबसे बड़ा भाई इंजिनियर है एक वाइस चान्सलर है एक मैं हूँ सब लोग ठीक जगह हैं। अगर उस अपॉर्चुनिटी के छूटने पर मेरे पिताजी ने जिंदगी की लड़ाई हारी होती तो आज न हिंदुस्तान को कुमार विश्वास मिलता न हमें इस परिवार का सहयोग मिलता हमें इस परिवार का सही आज सहयोग से कलाम साहब का दिन भी हैं हम उन्हें भी याद कर रहे हैं और मेरा सौभाग्य है कि उनके दर्शन और सत्संग का अवसर प्राप्त हुआ वह भी आपको पता हैं, कि वे एन. डी. ए. में सेलेक्ट नहीं हुए थे और उसके बाद जब उन्होने पूछा सिवानन्द स्वामी से कि मैं क्यों सेलेक्ट नहीं हुआ तो शिवानन्द स्वामी ने कहा कि तुझे जहाज उड़ाने के लिए नहीं भेजा, ईश्वर ने मुझे किसी बड़े काम के लिए भेजा हैं, तो खूब मेहनत करो खूब पढ़ो NIT और IIT में कहीं न कहीं एडमिशन हो जायेगा । और भी 1% कही लग रहा हैं, कि नहीं हो रही हैं, मेहनत में कभी नहीं करतीहैं, लेकिन तुम्हारे मां. बाप का सबसे बड़ा सपना क्या था। और क्या हैं, जिनके माता पिता हैं, या जिनके माता पिता नहीं हैं, उनका सबसे बड़ा सपना क्या था। एक दिन मैने अपनी बेटी से पूछा वह बाहर पढ़ी हो। वह बाहर पढ़ी हो। और इन्डस्ट्री चलाती हैं, मुझे इतना अच्छा लगा और उसका जबाब बूछा कि तू लाइफ मे क्या करना चाहती हो उसका जबाब था। कि मैं खुश रहना चाहती हूँ।



कितनी सुन्दर बात हैं, तुमसे कोई भी कुछ कि तुम क्या बनना चाहते हो इन्जीनीयर बनना वार्ड प्रोडक्ट हैं, पहला प्रॉडक्ट हैं, अच्छा बनना अच्छा समाज का व्यक्ति बनना आप अच्छी बेटियानन और अच्छे बेटे बजे अच्छे नागरिक बने और आज मुझे किताब दी The Legend of Allen इसका क्या मतलब हैं, वो जो बच्चा आया होगा इस संसथान में वह तुम्हारे जैसा वहा होता तुममे से एक ऐसा बच्चा जिसकी फोटो छपी होगी इनमें से किसी को पतान हो आज में गेंदा घोषित कर रहा हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं। आज 2500 साल का हो गया 2500 साल बाद मेरा पूर्वी साल गना रहा होगा तुमसेसे कोई राष्ट्रपति होगा कोई प्रथम मंत्री होगा कोई टेक्नोकेट होगा यह अलग नही में डल का लोग नहीं आते यह अलग खाने में नहीं आते इस देश की औद्योगिक घरानों की बेटे बेटी नहीं चलाते इस देश को तुम और हम चलाते हैं, जी मास्टरों की क्लकों के किसानों के बच्चे हैं, मेरा नही हुआ था। 17. में 117. रु. का फार्म भरा था। , कैल्कुलस कमजार थी, और आर्गेनिक कमजोर थी नहीं हुआ कोई दिक्कत नहीं मैने 1177. का कार्म भरा था। 117 करोड़ वसूल कर किए मेरे आफिए के लोग पूछते हैं, और मैंने अतुल मार्श बैठे हैं, मैने कड बार कहा और अच्छा हुआ भुइया से बात हुई मभाज से घोषणा करता हूँ, और बताता हूँ कि नाप टेक्नो केट बने इस पर ये लोग मेहनत करेंगे आप लोग मेहनत करें क्यों कि जब हमारा मुल्या आजाद हुआ १९४७ में हमारे साथ एक देश आजाद हुआ टर्की वह के लीडर से कमाल यासा टर्की जब रसाल आजाद हुए थे तब हमारे प्रधान मन्त्री नेहरू को मुख्य अतिथि बनाकर बुलाया तो नेहरू जी ने भाषण दिया कि मैं भारत में हाई वे, पुल बना रहा हैं, में भारत स्टोनिक परि नेबोला पावर प्लाट बना रहा हूँ तो सबने तालिया बजाईकि ईश्वर ने तुझे एनजी का न्यूक्लियस बनाया ही अब ये तुमारा हो। कि कोई एनर्जी इसे 17 वम बना लेताओं या

कोई बिजली बना लेताह| जो निबो टिव लोग हो वह वम बना लेते हो हिम्मत का सागर लाखों तो लहर लहर जयकारा होंगा। आप के होने से आपका परिवार और आपका इन्स्ट्यूट हैं, तुम्हारे होने से तुम्हारा परिवार खुश हो देखा कोई भी चीज छूटती घट उसमे से एनर्जी निकलती हैं, कभी सपना टूट जाय और कभी दिल टूट जाये कभी कोई अपना टूट जाय तो समझ लेनाखुद से बात करना लेकिन मनुष्य होना एक कैन्बस हैं, we a good human प्राणीचन्द्र मर जाते एक बात ध्यान रखना, सिकन्दर और औरत मर जाते हैं। पर ची डाक्य वह गुप्त कभी नहीं मरते वह हमेशा याद रहते हो तब मैं कहता हूँ आरस्तू रावेरे कभी भी ऐसा लगे तो मुझे याद कर लेना जीवन में कभी भी अवेराऔर दुनियाँ परीक्षाओं के हथौड़ों से नही गढ़ी जाती प्रतिमा हो की सेंच से गढ़ी जाती हो। पैसे तो बहुत लोग कमाते हो? मूल नहीं माना जाता हैं, जो आसमान में सुगन्ध और पृथ्वीं में वीज छोड़ कर चला जाय सुगन्ध तो फैल ही रही हैं, बीज आप लोग हो



अगर कभी भी दिल टूटे मन परेशान हो तो मान लेना भगवान ने तुम्हारा न्यूक्लियस चुन लिया हैं, अब कम होने वाला हैं, आत्मविश्वास इतना रखना की कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसकी रैंक कितनी आई जब जटायु के घाव पूछ रहे थे भगवान राम तब राम ने कहा कि आप मेरे पिता के दोस्त रहे हैं मैं आपका इलाज करवा दूं जटायु ने कहा कि नहीं अब मेरे मरने का समय आ गया हैं, उसे समय भी यह टेक्नोलॉजी भी गिद्धराज ने देखा कि उसे प्लेन में क्या हैं, हो रहा हैं, उसमें सीता का अपहरण हो रहा हैं, तभी उसने वॉइस मैच वॉइस मैच कराया डाटा को और बताया कि आपकी पत्नी का अपहरण हुआ हैं, यह साइंस हैं, पूरा जटायु ने पूछा कि जब मैं ऊपर जाऊंगा तो तुम्हारे पिता मिलेंगे तो मैं क्या कहूंगा अब एक लड़का जो वन में भटक रहा हैं, उसकी पत्नी का अपहरण हो गया और वह अभी युद्ध करने के लिए सी बन रहा हैं, वह क्या बोले बाबा तुलसीदास रामचरित में रहते हैं कि इस राम बना कहते हैं ऐसे बानो आप मत कुछ कहना चाचा जी जो मैं राम अगर मैं उनका लड़का हूं कल सहित खानदान सहित कई दशानन आए रावण खुद पर ऊपर आकर बताया कि मैं क्या कर दिया इसे कहते हैं आत्मविश्वास कोई परिवार का फोन करें पापा मम्मी रिश्तेदार नहीं कहना चिंता मत करो जिस दिन रिजल्ट निकलेगा उसी दिन पता चल जाएगा कैसा पढ़ रहा हूं क्या मेहनत कर रहा हूं और अगर बाय दसवीं वह नहीं सफल हो पाया तो दूसरे रास्ते हैं मेरा नहीं हुआ मेरा नहीं हुआ बता दो जो करने आए हैं वह नहीं हुआ भाई आपने अपना रास्ता चुना मैं भी चुनाव दुनिया परीक्षाओं की हथौड़े से नहीं गाड़ी जाती प्रतिभाओं की सोच से गाड़ी जाती हैं, कि आपकी प्रतिभा कैसी हैं, हर फूल वही माना जाता हैं, जो आसमान में सुगंध और धरती पर बीच छोड़ जाता हैं,

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध '**डॉ० कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान**' के उद्देश्यानुसार निष्कर्ष निम्नलिखित हैं—

6.1.1 व्यक्तित्व सम्बन्धी

डॉ० कुमार विश्वास जी के **व्यक्तित्व** सम्बन्धी निष्कर्ष इस प्रकार हैं —

- डॉ० कुमार विश्वास का जन्म 10 फ़रवरी (वसंत पंचमी के दिन), 1970 को पिलखुआ (ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश) में हुआ था।
- चार भाईयों और एक बहन में कुमार विश्वास सबसे छोटे हैं।
- कुमार विश्वास ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा लाला गंगा सहाय स्कूल, पिलखुआ में प्राप्त की।
- उनके पिता डॉ. चन्द्रपाल शर्मा आर एस एस डिग्री कॉलेज (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध), पिलखुआ में प्रवक्ता रहे। उनकी माता श्रीमती रमा शर्मा गृहिणी हैं।
- राजपूताना रेजिमेंट इंटर कॉलेज से बारहवीं में उनके उत्तीर्ण होने के बाद उनके पिता उन्हें इंजीनियर (अभियंता) बनाना चाहते थे।
- डॉ. कुमार विश्वास का मन मशीनों की पढाई में नहीं रमा, और उन्होंने बीच में ही इंजीनिअरिंग की पढाई छोड़ दी।
- साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ने के ख्याल से उन्होंने स्नातक और फिर हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर किया, जिसमें उन्होंने स्वर्ण-पदक प्राप्त किया।
- उन्होंने "कौरवी लोकगीतों में लोकचेतना" विषय पर पीएच-डी प्राप्त किया। उनके इस शोध-कार्य को 2001 में पुरस्कृत भी किया गया।
- कुमार विश्वास प्रतिभाशाली छात्र होने के कारण वे लगातार अपनी कक्षा में शीर्ष पायदान पर रहे एवं उच्चतम प्रशंसा और पुरस्कार प्राप्त किए।
- मात्र 24 वर्ष की उम्र में कुमार विश्वास हिंदी साहित्य के स्टेट प्रवक्ता बन चुके थे| पहली बार 1994 में राजस्थान के हिंदी साहित्य के रूप में अपनी सेवाएँ आरम्भ की|
- बाद में इन्होंने आचार्य और हिंदी के प्राचार्य के रूप में पढ़ाने का भी कार्य किया|
- यदि आज कुमार विश्वास की कवि यात्रा को देखा जाए तो वे बेहद सक्रिय साहित्यकार हैं| वे हिंदी पत्रिकओं के लिए लिखते हैं और अध्ययन भी करते हैं|
- कुमार विश्वास कविताओं के अतिरिक्त गीत और शायरी भी लिखते हैं| कई हिंदी सिनेमा की फिल्मों में इनके गानों को आजमाया जा चुका है।
- कुमार विश्वास, आदित्य दत्त की चाय गर्म हिंदी फिल्म में अभिनेता के रूप में अभिनय भी कर चुके हैं|
- कवि-सम्मेलनों और मुशायरों के क्षेत्र में भी डॉ० विश्वास एक अग्रणी कवि हैं। वो अब तक हज़ारों कवि सम्मेलनों और मुशायरों में कविता-पाठ और संचालन कर चुके हैं।

- देश के सैकड़ों प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाओं में उनके एकल कार्यक्रम होते रहे हैं। इनमें आईआईटी खड़गपुर, आईआईटी बीएचयू, आईएमएम धनबाद, आईआईटी रूड़की, आईआईटी भुवनेश्वर, आईआईएम लखनऊ, एनआईटी जालंधर, इत्यादि कई संस्थान शामिल हैं। कई कॉर्पोरेट कंपनियों में भी डॉ० विश्वास को अक्सर कविता-पाठ के लिए बुलाया जाता है।
- भारत के सैकड़ों छोटे-बड़े शहरों में कविता पाठ करने के अलावा उन्होंने कई अन्य देशों में भी अपनी काव्य-प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इनमें अमेरिका, सिंगापुर, ओमान, UAE और नेपाल जैसे देश शामिल हैं।
- डॉ. कुंवर बेचैन काव्य-सम्मान एवं पुरस्कार समिति द्वारा 1994 में 'काव्य-कुमार पुरस्कार', साहित्य भारती, उन्नाव द्वारा 2004 में 'डॉ० सुमन अलंकरण' तथा हिन्दी-उर्दू अवार्ड अकादमी द्वारा 2006 में 'साहित्य-श्री' से सम्मानित।

6.1.2 कृतित्व सम्बन्धी

डॉ० कुमार विश्वास जी के **कृतित्व** सम्बन्धी निष्कर्ष इस प्रकार हैं —

- डॉ० विश्वास जी नें अपनी रचनाओं से हिन्दी सहित्य की काव्य धारा को समृद्ध किया है। डॉ० विश्वास जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार हैं।
- उनकी कुल रचनाओं में 4 काव्य संग्रह, जिनमें 50 से अधिक कवितायें तथा अन्य शायरी व मुक्तक काव्य जगत को सुशोभित कर रहे हैं।
- कुमार विश्वास जी ने बेंचमार्क पब्लिकेशन के तहत कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के लिए **अमरत्व** नामक पाठ्यक्रम पुस्तक लिखी जो राजस्थान के स्कूलों में संचालित की जा रही हैं।
- टी०वी० कार्यक्रमों जैसे- तर्पण, अपने-अपने राम आदि से ये नई पीढ़ी में भी काव्य के प्रति झुकाव लाने का श्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं।
- 'फिर आया है बसंत' कविता के माध्यम से कुमार विश्वास जी का सन्देश है कि पतझड़ प्रकृति का एक निश्चित उपक्रम है और पतझड़ के बाद ही बसंत का आगमन होता है इसलिए पतझड़ रुपी संकट और बाधाओं के सागर में जीवन नौका फंसी होने के बाद भी जीतने का उत्साह बनाए रखना है। जो कुछ भी समय के संघर्ष में खोया है उसे अपने श्रम व पराक्रम से पुनः अर्जित करना है।
- 'हो काल गति से परे चिरंतन' कविता विद्यार्थियों द्वारा आए दिन की जा रही आत्महत्या तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मैं मिल रही असफलताओं से हार कर बैठ जाने के विरुद्ध उनमें उत्साह एवं ऊर्जा का निर्झर बन सफलता के प्रति विश्वास का संगीत उत्पन्न करती है।
- कविता 'वे बोले दरबार सजाओ' शैक्षिक महत्व की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। विद्यार्थी, गुरु एवं आमजन को सर्वदा सत्य के साथ खड़ा रहकर सत्ता द्वारा किए जा रहे अनैतिक अनाचार एवं अमानवीय

व्यवहार के विरुद्ध जूझना चाहिए। यही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भी है कि बेहतर नागरिक तैयार हों। हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कविता एक समर्थवान पीढ़ी को तैयार करने में समर्थ है।

- 'पिता की याद' कविता शैक्षिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण संदेश देती है कि पिता के प्रति पुत्र को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए उनका संबल बनना चाहिए।
- 'कितनी रंग-बिरंगी दुनिया' कविता मानव के व्यवहार परिवर्तन एवं उसके वास्तविक चरित्र को प्रदर्शित करती एक सशक्त रचना है। इस रंग बदलती स्वार्थ केंद्रित दुनिया के विविध रंग-बिरंगी कार्य एवं व्यवहार को लिख पाना संभव नहीं है। कविता का शैक्षिक निहितार्थ आँखें खोलने वाला एवं हृदय को ज्ञानात्मा से झकझोरने वाला है। शैक्षिक दृष्टि से यह कविता व्यक्ति के विपरीत आचरणों की ओर संकेत करती है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी के लिए यह कविता सामाजिक समझ के दायरे का विस्तार करती है।
- 'सूरज पर प्रतिबंध अनेकों' कविता का शैक्षिक निष्कर्ष यह है कि विद्यार्थी एक बेहतर नागरिक के रूप में विकसित हो, जो निस्वार्थ भाव से सामाजिक विकास राष्ट्र निर्माण एवं पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति अपना योगदान दे सके।
- हैं नमन उनको, होठों पर गंगा हो हाथों में तिरंगा हो, हम हैं देसी हाँ मगर हर देश में छाए हुए, साथ रहो तो सबसे बेहतर, आदि देशभक्ति कविताएँ राष्ट्रवादी, देश-प्रेम, समाजवादी विचारधारा को शिखर-कलश स्पर्श कराती प्रतीत होती हैं।

6.1.3 शैक्षिक विचारधारा सम्बन्धी

- डॉ० विश्वास ने सभी के अन्दर ईश्वर रुपी अंश को देखने की बात कही है। यह मानवता और भाईचारे के लिए अति आवश्यक है।
- इनके अनुसार एक व्यक्ति विशेषतः शिक्षक को अपने ज्ञान पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए, यह ईश्वर को चुनौती देने जैसा है।
- डॉ० विश्वास का मानना है कि कितनी भी बड़ी कठिनाई हो, उसे कठिन परिश्रम से हल किया जा सकता है।
- माता-पिता की नाराजगी को कभी भी अन्यथा नहीं लेना चाहिए वे हमेशा बच्चों की भलाई के लिए कार्य करते हैं।
- व्यक्ति को सदैव सीखते रहना चाहिए क्योंकि प्रकृति सबसे बड़ी शिक्षक है।
- डॉ० विश्वास के अनुसार हमारा भारतीय प्राचीन इतिहास सभी गुणों से समृद्ध है, जिसका पाश्च्यात्य जगत अनुकरण कर रहा है और हम भूलते जा रहे हैं।

- डॉ० विश्वास के अनुसार, एक बच्चे या युवक को आप पढ़ाते हो तो एक परिवार की प्रगति सुनिश्चित होती है, जबकि एक बच्ची या बेटी को आप पढ़ाते हैं तो दो परिवारों की स्थिति एवं प्रगति सुनिश्चित होती है।
- डॉ० कुमार विश्वास ने संघर्षशील व्यक्ति को ही सही मायने में सफलता का हक़दार माना है।
- डॉ० विश्वास के अनुसार हिम्मत का सागर लाँघने के बाद जीवन का ज्ञान मिलता है और बाधा रूपी लहरों को पार करने के बाद जीवन का सार मिलता है।
- डॉ० विश्वास के अनुसार जीवन में प्राप्त पद और माया का कोई महत्त्व नहीं, जब तक आप एक अच्छे इंसान नहीं हैं।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

- समस्त मानवों के अंदर बैठे राम को प्रणाम करना चाहिए।
- सर्वज्ञ होने का भ्रम परमात्मा को चुनौती देने जैसा है और जो ईश्वर को चुनौती देता है वो बचता नहीं है।
- तो अगर जीते जी आप ने वो कर लिया है। जो मरने के बाद मिलेगा मरने के बाद क्या मिलेगा की आपने इतने लोगों का भला किया इसलिए आपको स्वर्ग एलॉट होगा ।
- यदि अंधकार से लड़ने का संकल्प कोई कर लेता है; तो एक अकेला जुगनू भी अंधकार को हर लेता है।
- आपके मां-बाप आपकी किसी प्रवृत्ति पर नाराज हो तो आप समझ लेना कि आप में कुछ अतिरिक्त है, जो हो रहा है, इसमें लज्जित मत होना।
- युद्ध में इतिहास आपका आकलन इस बात से नहीं करता; आप जीते या हारे। इस बात से आकलन करता है कि आपने गोली पीठ पर खायी या छाती पर खायी।
- युद्ध में गुणगान उसका होता है जो खुद के दम पर युद्ध लड़ता है। इसमें फर्क नहीं पड़ता की वह हारता है की जीतता है।
- जो लोग अपने से बड़े से नहीं सीखेंगे उन्हें कुछ नहीं मिलेगा।
- राम कथा पारिवारिक मूल्यों की पाठशाला है ।
- भाई का रिश्ता विपत्ति बांटने के लिए होता है न की संपत्ति...
- यह वस्तु मानता हूँ कि उस जगह में जो कुछ हुआ है। उसका इतिहास आपके साथ-साथ चलता है।
- आपकी लर्निंग नहीं है कि आप अपने गांव में रहने वाले अपने पिता को अपने बाबा को रसोई में काम करने वाली मां को अशिक्षित समझते हैं। और रिसेप्शन पर बैठी हुई लड़की से चारबाग के अंग्रेजी के बोलती है। उसे आप शिक्षित समझते हैं।
- जिंदगी में उपलब्धि वह है जिसे करने के बाद आपको संतोष होता है कि मैंने अच्छा काम किया है।
- जीवन में अन्य किसी भी व्यक्ति से बहुत अधिक आशा मत रखिए, स्वयं आप हैं आशा के केंद्र। आप हैं जो सब कुछ संभव बना सकते हैं।
- ध्यान रखिए कला, संस्कृति, शिक्षा ये नियंत्रण नहीं मांगती यह प्रबंधन मागती है।

- बच्चों की किसी भी प्रकार की जिज्ञासा के प्रति क्रोधित मत हुई है। जिज्ञासा से ही जिज्ञासा से ही बच्चों का वर्तुल खुलेगा ज्ञान का कि वह कब से नीचे गिर रहा था।
- असफल होने पर भी हमें धैर्य आवश्यक है, एकाग्रता आवश्यक है शायद भगवान कोई बड़ा काम लेने वाला हो और उसी में हमारा हित समाहित हो।
- असफलता मिलेगी, उपहास होगा, मजाक उड़ाएँगे लोग, गिरेंगे आप, आपके कपड़े फटेंगे, चोट लगेगी, पैरों में छाले पड़ेंगे, अपमान होगा, अपयश होगा लेकिन उसके बाद फिर वो जो मुझे मिलेगा वह अमृत तत्व होगा आनंद होगा।
- जिसके अंदर भी इस सृष्टि में जरा सा भी गरल पीने की क्षमता है। जिसके कंठ में सरस्वती और शंकर उसे ही आशीर्वाद देते हैं
- एक बच्चे या युवक को आप पढ़ाते हो तो एक परिवार की प्रगति सुनिश्चित होती है जबकि एक बच्ची या बेटी को आप पढ़ते हैं तो दो परिवारों की स्थिति एवं प्रगति सुनिश्चित होती है।
- प्रत्येक बच्चे के जन्मजात वैशिष्ट्य को सुरक्षित रखना सभी शिक्षकों और अभिभावकों की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।
- विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था कैसी अच्छी होगी? जिस दिन कॉलेज के प्रबंधक और चेयरमैन का केबिन छोटा और प्रिंसिपल का केबिन बड़ा हो जाएगा तो शिक्षा के विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाएगी
- विद्या देने के लिए आत्मदीप्ति चाहिए विद्या देने के लिए आत्मविश्वास चाहिए जो हमारे गुरु द्वारा संभव है।
- एक छोटा सा सकारात्मक उत्प्रेरण या कैटालिज्म बच्चों का जीवन बदल सकता है।
- अगर पहला पत्थर जिस समय दशरथ माझी ने उस पर्वत पर मारा तो लोग उस पर हँसे लेकिन उसने धैर्यपूर्वक 20 साल पत्थर मारा तो पहाड़ को रास्ता छोड़कर खड़ा होना पड़ा।
- संघर्ष जितना लंबा होगा सफलता उतनी ही शानदार होगी।
- किसी बच्चे का सफल जीवन शिक्षा से कहीं अधिक विद्या से होगा, संस्कृति और परंपरा के ज्ञान से होगा।
- जीवन में कभी भी संघर्ष से मुंह नहीं मुड़ना चाहिए बल्कि डटकर सामना करना चाहिए।
- इंजीनियर, डॉक्टर और टीचर बनना बाय प्रोडक्ट है लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है एक अच्छा इंसान बनना।
- हिम्मत का सागर लाँघने के बाद जीवन का ज्ञान मिलता है और बाधा रूपी लहरों को पार करने के बाद जीवन का सार मिलता है।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी सोद्देश्य कार्य के शैक्षिक निहितार्थ अवश्य होते हैं। उस कार्य की सार्थकता उसके शैक्षिक निहितार्थ में होती है। अर्थात किसी भी शैक्षिक उद्देश्य का महत्व तभी निर्धारित होता है, जब उसकी शैक्षिक

परिवेश में उपयोगिता स्थापित की जा सके। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की शैक्षिक उपादेयता निम्नवत रूप में वर्णित है—

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों के आधार पर विद्यार्थी प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकेंगे एवं शिक्षा के सही अर्थ को जानकार शैक्षिक जीवन में एक नूतन परिवर्तन कर सकेंगे। वे शिक्षा को केवल नौकरी का साधन न मानकर शिक्षा के सम्यक अर्थ को अपने जीवन में उतारकर इन्द्रियों व मन को नियन्त्रित कर संयमित जीवन जीना सीख सकेंगे और अपने जीवन के स्वर्ण युग को संस्कारित कर उसका उपयोग ज्ञानार्जन में कर सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

डॉ० विश्वास जी के शैक्षिक विचारों की अवधारणा से प्रभावित होकर शिक्षक अपने शैक्षिक कार्य के वास्तविक उद्देश्य को जान सकेंगे और एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित करने में सफलहो सकेंगे। वे आधुनिकता व दिखावे से दूर अपने आन्तरिक एवं बाह्य जगत का परिष्कार करके अनुशासित व आदर्श शिक्षक के गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में ढाल सकेंगे तथा शिक्षा को केवल धनार्जन का साधन न मानकर ज्ञान दान की एक पवित्र प्रक्रिया बनाकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नया बिगुल बजा सकेंगे और शिक्षा के गिरते स्तर को ऊँचा उठा सकेंगे।

6.3.3 अभिभावकों के लिए

भौतिक संसाधनों के इस युग में अभिभावक बच्चों को पढ़ाते ही इसलिए हैं कि वह केवल धन माने की दौड़ में लग जाये। आज अभिभावकों ने शिक्षा को धनार्जन के आधार तक सीमित रखा है, किन्तु डॉ० विश्वास जी के शैक्षिक विचारों से प्रेरित होकर अभिभावक शिक्षा को संस्कारों से समन्वित करते हुए रिश्तों के प्रति संवेदनशून्य होते बालकों को मानवता की शिक्षा के लिए प्रेरित कर देश को एक श्रेष्ठ नागरिक प्रदान कर सकेंगे।

6.3.4 जन सामान्य के लिए

डॉ० विश्वास जी के जीवन एवं विचारों से प्रेरणा प्राप्त कर जन सामान्य अपना जीवन आनन्दमय बना सकेंगे। वे तनावमुक्त होकर योगमय जीवन जीने के लिए अभिप्रेरित होंगे तथा धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्रीय प्रेम से अनुप्राणित होकर अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो सकेंगे। उनमें सद्प्रवृत्तियों को अपनाने की प्रेरणा का संचार होगा और निश्चय ही समाज में व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध डटकर खड़े होकर अच्छाई के वाहक बन सकेंगे।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किये गये लघु शोध प्रबन्ध **"डॉ० कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान"** में कवि कुमार विश्वास के 4 काव्य संग्रहों से चयनित 11 कविताओं व 9 मुक्तकों के भावार्थ एवं शैक्षिक प्रासंगिता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान कुछ नवीन अनुभवों तथा विचारों की अनुभूति की गई, जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोध हेतु सुझावों के रूप में भविष्य के शोधार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत कर रहा है—

- भावी शोध में कुमार विश्वास जी की अन्य कविताओं को सम्मलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में बुन्देलखण्ड के अन्य कवियों को सम्मलित किया जा सकता है।
- भावी शोध में कवि कुमार विश्वास के साथ अन्य कवियों के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि डॉ० कुमार विश्वास जी की रचना पर आधारित है। भावी शोध में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

यादव, रमेश (2006)। *बौद्ध दर्शन में सन्निहित शैक्षिक मूल्यों एवं शैक्षिक नियोजन का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता एक अध्ययन।* पी-एच.डी शोध-प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। http://hdl.handle.net/10603/179785

कुमार, अजीत (2011)। *शंकराचार्य के दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यों एवं विचारों का वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन।* पी-एच.डी शोध- प्रबन्ध, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद। http://hdl.handle.net/10603/238094

सिंह, चंद्रसेन (2009)। *महामना मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान विश्वविद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन।* पी-एच.डी शोध- प्रबन्ध, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फ़ैजाबाद। http://hdl.handle.net/10603/232020

त्रिपाठी, कुमार अतुल (2009)। *बौद्ध दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों का अध्ययन।* पी-एच.डी शोध- प्रबन्ध, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद। http://hdl.handle.net/10603/239837

शुक्ल, राघवेन्द्र (2009)। *डॉ० (श्रीमती) एनीबेसेण्ट के शिक्षा दर्शन का वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में प्रासंगिकता का अध्ययन*। पी-एच.डी शोध-प्रबन्ध, डॉ०राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फ़ैजाबाद http://hdl.handle.net/10603/247867

राय, रागिनी (2002)। *केदारनाथ अग्रवाल: व्यक्तित्व एवं रचना प्रक्रिया।* पी-एच.डी शोध- प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। http://hdl.handle.net/10603/171322

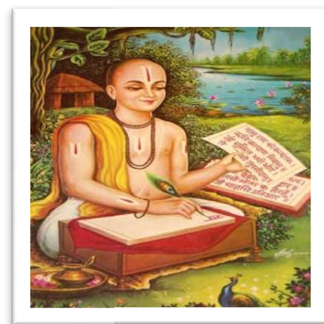
बलहारा, अजय (2007)। *गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन।* पी-एच.डी शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। http://hdl.handle.net/10603/12530

मोहता, प्रकाशसत्य (2011)। *स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन।* विद्या वाचस्पति, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, झुंझनूं। http://hdl.handle.net/10603/8852

हिन्दी के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ आधुनिक काल के कवि और उनकी रचनाएँ हिंदी के प्रसिद्ध लेखक एवं उनकी रचनाएँ—

- **डॉ० कुमार विश्वास**— एक पगली लड़की के बिन, कोई दीवाना कहता है, फिर मेरी याद, अमरत्व
- **तुलसीदास**— रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, जानकी मंगल
- **दलपति विजय**— खुमानरासो
- **नरपति नाल्ह**— वीसलदेव रासो
- **जगनिक**— परमालरासो
- **सारंगधर**— हम्मीर रासो, चंदबरदाई, पृथ्वीराज रासो
- **कबीरदास**— रमैनी, सबद, साखी



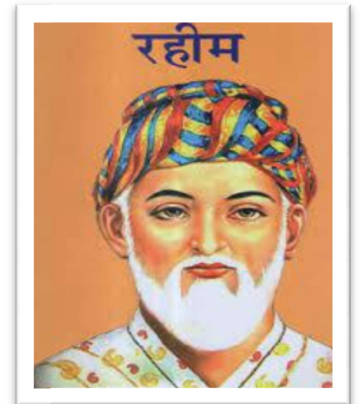
- **सूरदास**— सुरसारावली, सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर जायसी, कलाम, पद्मावत, अखरावट, आखिरी
- **बिहारी**— बिहारी सतसई
- **केदार नाथ अग्रवाल**— युग की गंगा, नींद के बदल, लोक और आलोक,फूल नहीं रंग बोलते है
- **चिंतामणि**— कविकुल, कल्पतरु, काव्य विवेक
- **भूषण**— शिवावावनी, शिवराजभूषण, छत्रशाल दशक



- **केशवदास**— रामचंद्रिका कवि प्रिया, रसिक प्रिया, विज्ञान गीता
- **मीराबाई**— रागगोविन्द, गीतगोविन्द, नरसीजी का मेहरा, राग सोरठ के पद
- **घनानंद**— सुजान सागर, प्रेम पत्रिका, प्रेम सरोवर, वियोग बोलि, इश्कलता
- **भारतेन्दु हरिश्चंद्र**— प्रेमफुलवारी, प्रेम प्रलाप, श्रृंगार लहरी
- **रामनरेश त्रिपाठी**— पथिक, मिलन और स्वप्न, मानसी, ग्राम्य गीत
- **अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध"**— प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे, रस कलश

- **मैथिलीशरण गुप्त**— साकेत, यशोधरा भारत भारती, सिद्धराज, द्वापर,पंचवटी
- **जयशंकरप्रसाद**— कामायनी, झरना, आँसू, लहर, कामना, कल्याणी, स्कंदगुप्त, विशाख, आकशदीप
- **सुमित्रानंदन पन्त**— कला और बूढा चाँद, तारापथ, गीतहंस, चिदंबरा, उत्तरा
- **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला**— परिमल, तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, अराधना गीत गुंज, गीतिका, नये पत्ते
- **महादेवी वर्मा**— नीरजा, दीपशिखा, यामा, पथ से साथी, अतीत के चल चित्र
- **सुभद्राकुमारी चौहान**— बिखरे मोती, सीधे-सादे चित्र, झाँसी की रानी, पानी और धूप
- **रामधारी सिंह दिनकर**— कुरुक्षेत्र, उर्वशी, रेणुका, हुंकार, रसवन्ती
- **माखनलाल चतुर्वेदी**— हिमकिरीटिनी, युग चरण, समर्पण
- **भवानीप्रसाद मिश्र**— गीत फ़रोश, नीली रेखा तक, मानसरोवर
- **बालकृष्ण शर्मा नवीन**— अपलक, कुंकन, उर्मिला
- **सोहनलाल द्विवेदी**— भैरवी, पूजा गीत, कुणाल, विषपान, विगुल
- **अज्ञेय**— आगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी
- **हरिवंश राय बच्चन**— मधुशाला, मधुबाला, निशा निमंत्रण, क्या भूलूँ क्या याद करूँ, मधुकलश
- **धर्मवीर भारती**— अन्धा युग, कनुप्रिया, गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, ठंडा लोहा
- **केदारनाथ सिंह**— अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, बाघ, अकाल में अन्य कविताएँ, तालस्ताय और साइकिल, सृष्टि पर
- **रहीम**— रहीम सतसई, रहीम रत्नावली, श्रृंगार सतसई, रास पंचाध्यायी, बरवे नायिका





डॉ० कुमार विश्वास से संबंधित प्रमुख स्क्रीनशॉट्स

डॉ. कुमार विश्वास का जन्म पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग़ाज़ियाबाद ज़िले में, 10 फ़रवरी 1970 को वसन्त पंचमी के दिन हुआ। कलावादी माँ का लयात्मक लोकज्ञान व प्राध्यापक पिता का भयात्मक अनुशासन साथ-साथ मिले। इंजीनियरिंग से लेकर प्रादेशिक सेवा तक और कामू से लेकर कामशास्त्र तक, थोक में भटके, पर अटके सिर्फ़ साहित्य पर।

आईआईटी से लेकर आईटीआई तक और कुलपतियों से लेकर कुलियों तक, उनके चाहने वालों की फ़ेहरिस्त भारत की लोकतान्त्रिक समस्याओं जैसी विविध व अन्तहीन है। वे टीवी की रंगीन स्क्रीन से लेकर एफएम रेडियो के माइक्रो स्पीकर तक हर जगह सुनाई-दिखाई देते हैं। करोड़ों युवा उनसे प्रेरणा पाते हैं और साहित्य को विस्तार देने के सुपथ पर बढ़ते हैं।

अब तक आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—*इक पगली लड़की के बिन* (1996), *कोई दीवाना कहता है* (2007) और *फिर मेरी याद* (2019)। उन्होंने वर्ष 2017 में जॉन एलिया पर देवनागरी लिपि में प्रकाशित पहली पुस्तक *मैं जो हूँ 'जॉन एलिया' हूँ* का सम्पादन भी किया है। वर्तमान में उनकी तीन अन्य पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

हिंदी के पाठक

कोई दीवाना कहता है
कोई पागल समझता है
मगर धरती की बेचैनी को
बस बादल समझता है
मैं तुझसे दूर कैसा हूँ
तू मुझसे दूर कैसी है
ये तेरा दिल समझता है
या मेरा दिल समझता है

मुहब्बत एक अहसासों की
पावन सी कहानी है
कभी कबिरा दीवाना था,
कभी मीरा दीवानी है
यहां सब लोग कहते हैं
मेरी आँखों में आँसू हैं
जो तुम समझते तो मोती है
जो ना समझे तो पानी है

कुमार विश्वास के गीत 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' के सांस्कृतिक दर्शन की काव्यगत अनिवार्यता का प्रतिपदान करते हैं। कुमार के गीतों में भावनाओं का जैसा सहज, कुंठाहीन प्रवाह है, कल्पनाओं का जैसा अभीष्ट वैचारिक विस्तार है तथा इस सामंजस्य के सृजन हेतु जैसा अद्भुत शिल्प व शब्दकोश है, वह उनके कवि के भविष्य के विषय में एक सुखद आश्वस्ति प्रदान करता है।

—स्व0 डॉ. धर्मवीर भारती

डॉ0 कुमार विश्वास उम्र के लिहाज से नये लेकिन काव्य–दृष्टि से खूबसूरत कवि हैं। उनके होने से मंच की रौनक बढ़ जाती है। वह सुन्दर आवाज़, निराले अंदाज और ऊँची परवाज़ के गीतकार, गज़लकार और मंच पर कहकहे उगाते शब्दकार हैं। कविता के साथ उनके कविता सुनाने का ढंग भी श्रोताओं को नयी दुनिया में ले जाता है। गोपाल दास नीरज के बाद अगर कोई कवि, मंच की कसौटी पर खरा लगता है, तो वो नाम कुमार विश्वास के अलावा दूसरा नहीं हो सकता।

—निदा फाज़ली

डॉ0 कुमार विश्वास हमारे समय के ऐसे सामर्थ्यवान गीतकार हैं, जिन्हें भविष्य बड़े गर्व और गौरव से गुनगुनाएगा।

—गोपालदास 'नीरज'

आँखों में गज़ब का सम्मोहन, मंच पर जबरदस्त पकड़, गीतों में बाँध लेने वाली रसमयता, समय–अवसर के अनुकुल स्मरण–शक्ति और वाल्मीकि रामायण से लेकर राधेश्याम रामायण तक का विराट ज्ञानकोष, इन सब चीजों का एक साथ होना डॉ0 कुमार विश्वास कहलाता है। देशभर में तो उसका जादू सर चढ़कर बोलता ही है, मैंने विदेशों में भी ऐसे श्रोता देखे हैं, जिन्हें उसके पूरे–पूरे गीत याद हैं। बाजार की भाषा में कहे तो वो इस पीढ़ी का एकमात्र I.S.O. कवि है।

—हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा

जड़ों की ओर लौटना होगा

कवियों ने राजनीति, शिक्षा और नेताओं पर किया कटाक्ष

सिटी रिपोर्टर • बारहवीं में एक मात्र स्टूडेंट्स था जब 33 प्रतिशत आने पर घर वालों ने भंडारे का आयोजन रखा था, लेकिन आज तो 80 प्रतिशत अंक आने पर भी स्टूडेंट्स आत्महत्या कर लेते हैं। हास्य कवि अनिल अग्रवंशी की इस हास्य कविता में आज की शिक्षा प्रणाली पर कटाक्ष किया। कार्यक्रम का आयोजन महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में किया गया। इस अवसर पर गीतकार कुमार विश्वास ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इस मौके पर राहत इंदौरी के साथ-साथ हास्य कवि रमेश मुस्कान और ओज कवि विनीत चौहान ने भी अपनी कविताओं से समाज में सदियों से पनपती आ रही गलत सोच का उजागर किया। मंच पर इतने बुद्धिशील कवि थे तो उनके कटु वचनों की आलोचनाओं से मोदी की अच्छे दिन, राहुल की शादी और केजरीवाल कैसे बचे रह सकते थे। अपने हास्य अंदाज में ही सही, लेकिन इन कवियों ने टूटते परिवार, समाज की गिरती सोच और शिक्षा का स्तर पर सोचने पर मजबूर किया। कुमार विश्वास ने कहा कि असल में समस्या ये है कि लोग स्वीकार नहीं करते। सीखिए अपने पूर्वजों से जो केवल स्वीकारने में विश्वास रखते थे।

तभी तो देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने मंत्रिमंडल में पांच मंत्रियों को शामिल किया था जो उनकी पार्टी के नहीं थे। वहीं इंदिरा गांधी ने अटल बिहारी वाजपेयी को यूएनओ में देश का प्रतिनिधित्व करने भेजा। बात चाहे कुछ भी हो बाहर एक होने की समझ आनी चाहिए। उन्होंने आज की राजनीति पर भी कटाक्ष किया। उन्होंने कहा कि राजनीति बड़े आनंद की चीज है। इसे जीना चाहिए। राहत इंदौरी ने भी अपने अंदाज में श्रोताओं का खूब मनोरंजन किया।

महाराणा प्रताप सभागार में आयोजित कवि सम्मेलन में प्रस्तुति देते कवि।

कवियों की खास प्रस्तुतियों को सुनते जयपुर के श्रोता।

'हम हैं देशी, हां मगर हर देश में छाए हम'

मानवी जीवन धर्माधिष्ठितच

कुमार विश्वास यांचे मत

हिंदी कवी संमेलन : अग्रवाल सोशल नेटवर्कचा उपक्रम

देशभक्ती व समाजप्रबोधन

पुणे : प्रेमाचे बंध, देशभक्ती, हास्याचे फवारे, समाजप्रबोधन अशा विविध रंगांत रंगलेल्या कवी संमेलनाचा प्रेक्षकांनी आस्वाद घेतला. डॉ. कुमार विश्वास, विनीत चौहान, सुनील साहिल आदी कवींनी आपल्या कवितांमधून कधी प्रेक्षकांना हसवले तर कधी विचारमंथन करण्यास भाग पाडले. अग्रवाल सोशल नेटवर्कतर्फे या हिंदी कवी संमेलनाचे आयोजन करण्यात आले होते.

प्रेमाचे नाजूक बंध उलगडणारी त्यांची कविता सर्वांना विशेष भावली. विनित चौहान यांनी कवितांमधून काश्मीर प्रश्न, सततच्या हल्ल्यांमुळे सैनिकांचे होणारे हाल, अशा ताज्या घडामोडींवर परखड भाष्य केले. सुनील साहिल यांनी हास्यकवितांनी रसिकांचे मनोरंजन केले. महिलांवर होत असलेल्या अन्यायावरही त्यांनी कवितेच्या माध्यमातून आवाज उठवला.

तिन्ही कवींचे हिंदी भाषेवरील प्रभुत्त्व, इतिहास आणि वर्तमानाची अचूक सांगड, प्रेक्षकांवर प्रभाव पाडणारे शब्द यामुळे कवी संमेलनाला अनोखी रंगत चढली. विविध विषयांवरील कवितांनी कवी संमेलनाचे रंग उत्तरोत्तर वाढत गेले. अग्रवाल सोशल नेटवर्कचे अध्यक्ष मुकेश गुप्ता यांनी प्रास्ताविक केले. विवेक अग्रवाल यांनी सूत्रसंचालन केले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी सचिन अग्रवाल, आनंद अग्रवाल, हेमंत गुप्ता, राहुल अग्रवाल, सचिन गोयल, शिवसागर गोयल, योगेश अग्रवाल, भागीरथी अग्रवाल, ज्योती अग्रवाल, गिरीश अग्रवाल, विनोद गोयल, संजय अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, विक्रांत अग्रवाल, प्रवीण बंतल, महेंद्र गोयल आदींनी विशेष परिश्रम घेतले.

(प्रतिनिधी)

हिंदी कवी संमेलनात हेमंत गुप्ता, कुमार विश्वास यांनी हजेरी लावली.

रसिक मंत्रमुग्ध

- अग्रवाल समाजातील रसिकांसाठी अग्रवाल सोशल नेटवर्कतर्फे दरवर्षी कवी संमेलनाचे आयोजन करण्यात येते. आयकर आयुक्त आदर्श मोदी प्रमुख पाहुणे होते. डॉ. कुमार विश्वास यांनी आपल्या कवितांनी रसिकांना मंत्रमुग्ध केले. इतिहास आणि वर्तमानाची अचूक सांगड, प्रेक्षकांवर प्रभाव पाडणारे शब्द यामुळे कवी संमेलनाला अनोखी रंगत चढली.

मेरी 5 बातों पर करें 'विश्वास', होंगे कामयाब

सिटी के यूथ को करियर ओरिएंटेशन में मोटिवेट करने पहुंचे कवि कुमार विश्वास, सफलता के फंडे बताए

हमें दुनिया ने चुनावों में जिताया है मगर गर्वनर के यहां बंधक जैसे हैं

...उसी की दी हुई दौलत उसी के नाम करता हूं

मां की लोरी ने बनाया डॉ. विश्वास

गुरु सम्मान समारोह — 25.09.2018 प्रभात खबर 05

हवा का काम है चलना... मैं अपना काम करता हूं

प्रभात खबर लाइफ संडे

दर्शकों के दिल पर दस्तक...

मेरे लहजे की छेनी से गढ़े जो देवता कल तक मेरे लफ्जों पे मरते थे, वे कहते हैं कि मत बोलो

झाँसी जागरण

वाणी पर इतना अंकुश कैसे सहते, हम कबीर के वंशज चुप कैसे रहते

ये गंगा का किनारा है... कविता से जीता विश्वास, कोई दीवाना... से बनाया दीवाना

युवा दिवस पर कवि कुमार विश्वास ने सीएम आवास में अपनी कविताओं से जमाया रंग

...उसी की दी हुई दौलत उसी के नाम करता हूं

मां की लोरी ने कुमार को बनाया डॉ. विश्वास













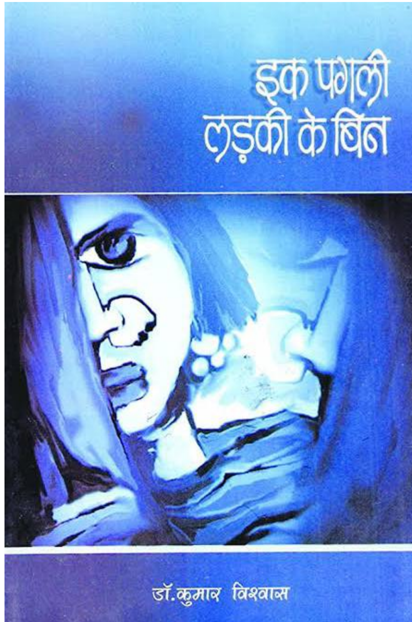


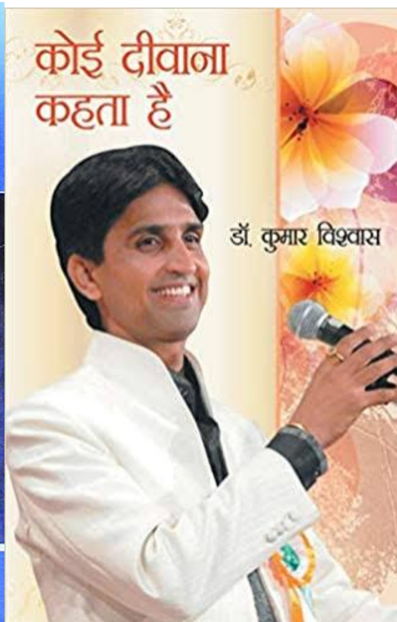


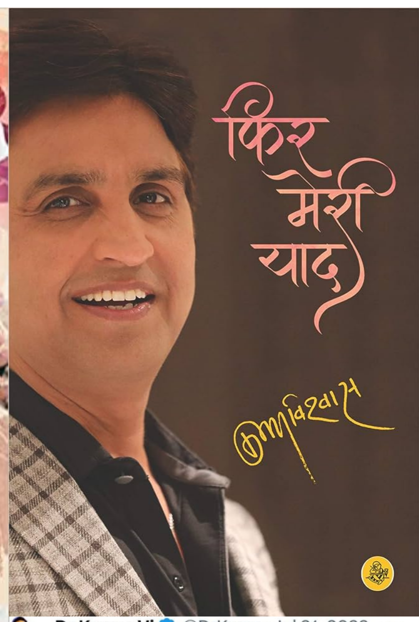


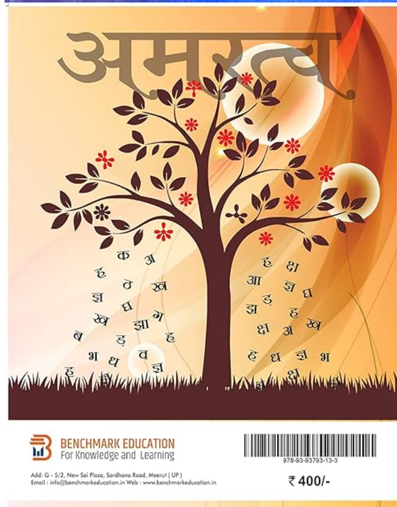

बापू सभागार में पल-पल श्रोताओं के बदले मूड

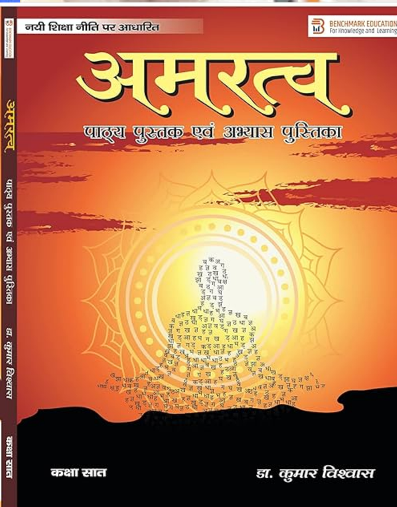

अपने अपने राम
संगीतमय राम ऊर्जा-सत्र
दिनांक 15 16 17 अक्टूबर, 2023
समय - शाम 6:00 बजे से
स्थान - विद्याधर नगर स्टेडियम, जयपुर
डॉ. कुमार विश्वास
स्वर्ण स्वर भारत
SWARNA SWAR BHARAT
अपने अपने राम
3-4 AUG 2019
JAIPUR, DAY 1
स्वर्ण स्वर भारत
अपने अपने श्याम
(कृष्ण बंधन प्रसंग)
राजस्थान साहित्य उत्सव
कवि सम्मेलन
दिनांक - 25 मार्च 2023
युग-कवि डॉ. कुमार विश्वास
काव्य कलश
युग कवि डॉ. कुमार विश्वास
यहाँ की धूल में समाया है
सिद्धियों का आशीर्वाद
अखिल भारतीय
विराट कवि सम्मेलन
दिनांक : 30 सितम्बर 2023
शनिवार समय : रात्रि 9:00 बजे से
स्थान : संजय मूर्ति, बड़ौत
मंच संचालन
युग कवि
डॉ. कुमार विश्वास
आमंत्रित कविगण
tarpan
TRIBUTE
SINGER-COMPOSER-POET-LYRICIST
KUMAR VISHWAS
www.kumarvishwas.
तर्पण
A Tribute to Poetic Legends
Wednesdays 7:30 pm | Saturdays 7.30 pm
Only at www.youtube.com/KumarVishwas
राष्ट्रीय शिल्प मेला 2019
VIP INVITES VALID FOR 2
PLEASE CARRY YOUR INVITES
ORGANISED BY-
NORTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE (NCZCC)
tarpan









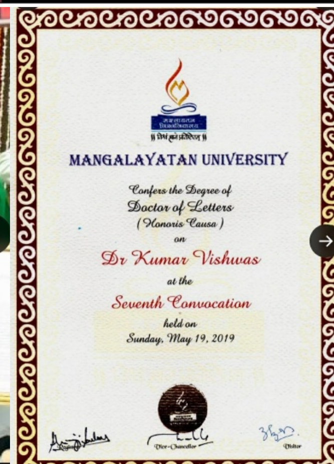


Dr Kumar Vi @DrKuma · Jul 21, 2022 ···

भारत के राष्ट्रपति पद पर भगवान जगन्नाथ की साधिका व राघवेंद्र राम सरकार को ध्येय-पथ सुझाने वाली हमारी माँ शबरी की वंशबेलि आदरणीय बड़ी बहन श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के निर्वाचन पर हार्दिक बधाई।राजेंद्र बाबू, राधाकृष्णन व कलाम साहब की सुगंध से सुवासित राज-उपवन को यह वनफूल मंगलकारी हो






MANGALAYATAN UNIVERSITY

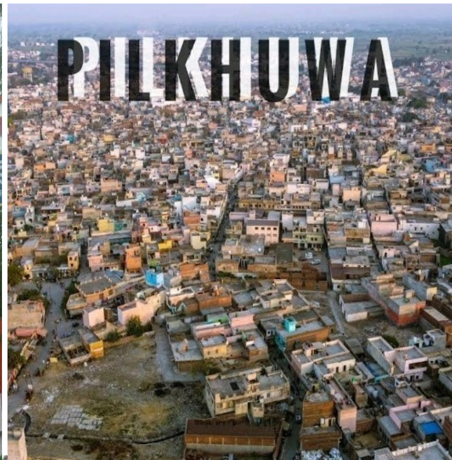
Confers the Degree of
Doctor of Letters
(Honoris Causa)
on
Dr Kumar Vishwas
at the
Seventh Convocation
held on
Sunday, May 19, 2019

Vice-Chancellor





राणा शिक्षा शिविर स्नातकोत्तर महाविद्यालय
स्थापना वर्ष १९६०
राणा शिक्षा शिविर स्नातकोत्तर महाविद्यालय
संस्थापक - श्री मेघनाथ सिंह शिशौदिया



PILKHUWA



Saraswathi Institute of Medical Sciences
सरस्वती इंस्टिट्यूट...
Pilkhuwa
पिलखुवा
Ibrahimpur Tasauli
इब्राहिमपुर तसौली
Khairpur Khairabad
खैरपुर खैराबाद















Father's Day Special





Newstrend

कुमार विश्वास का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

